रूस की लोक कथाऐं–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Roos Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Russia-1)
Cover Page picture: Kremlin Star, Moscow
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

रूस की लोक कथाऐं–1 7

1 एक बुढ़िया और एक छोटा फ़र का पेड़ 9

2 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज़ 16

3 सफेद राजकुमारी और सात बौने 35

4 रम्पिलस्टिल्टस्किन 55

5 सातवीं राजकुमारी 63

6 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा 72

7 बेवकूफ इवान और जादुई पाइक मछली 91

8 जानवरों का बदला 104

9 बर्फ की लड़की 113

10 फ़ैनिस्ट बाज़ 129

11 बैला और भालू 146

12 गुलाबी सेब और सोने का कटोरा 154

13 फायरबर्ड 162

14 मेंढकी राजकुमारी 168

15 लालची बुढ़िया 185

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॅा तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं “देश विदेश की लोक कथाऐं” और “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

रूस की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

सारा रूस देश बहुत ठंडा है पर इसका उत्तरी हिस्सा तो बहुत ही ठंडा है। इसका उत्तरी हिस्सा टुण्ड्रा[1] कहलाता है और इसके साइबेरिया[2] नाम के क्षेत्र में आता है। यहॉ के कोणधारी वन बहुत मशहूर हैं। रूस की पूरी आबादी केवल चालीस मिलियन है और साइबेरिया की जनसंख्या तो बहुत ही कम है।

इस देश में समय के ग्यारह क्षेत्र हैं यानी इसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा के समय में दस घंटे का अन्तर रहता है। जैसे कैनेडा और उत्तरी अमेरिका में समय के छह छह क्षेत्र हैं सो उनके पूर्वी और पश्चिमी समयों में पॉच पॉच घंटे का अन्तर है में चार घंटे का। जब रूस के पूर्वी सीमा पर शाम के छह बजे होते हैं तो इसकी पश्चिमी सीमा पर सुबह के आठ बजे होते हैं। डे लाइट सेविंग टाइम[3] भी जो कुछ देशों में दिन की रोशनी बचाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है वह यहॉ केवल मार्च **2011** से अक्टूबर **2014** तक ही इस्तेमाल किया गया था। उसके बाद इसे ख़त्म कर दिया गया। इस तरह से यह देश करीब करीब आधी दुनियॉ घेरे हुए है।

इसकी दूसरी ख़ास बात यह है कि इस देश में सब तरह की जलवायु पायी जाती है सिवाय उष्ण जलवायु[4] के। वह भी इसलिये कि इसका कोई हिस्सा उष्ण जलवायु के क्षेत्र में आ ही नहीं सकता।

रूस के तीन मुख्य शहर हैं – मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग और व्लाडीवोस्टक[5]। इसमें दो नदियॉ बहुत प्रसिद्ध हैं – यूराल और वोल्गा। यूराल नदी यूराल पहाड़ से निकलती है और उत्तर में आर्कटिक सागर में जा कर गिरती है।[6] वोल्गा नदी यूरोप से आती है और रूस के काफी बड़े हिस्से से गुजरती हुई कैस्पियन सागर में गिर जाती है। इसमें दो मुख्य पहाड़ हैं – यूराल पर्वत और अल्टाई पर्वत। इसमें एक बहुत पुरानी मुख्य रेलवे लाइन जाती है जिसका नाम है ट्रान्स साइबेरियन रेलवे[7]। यह पूर्व से ले कर पश्चिम तक पूरे साइबेरिया में जाती है। यह दुनियॉ की सबसे लम्बी रेलवे लाइन है और अभी भी फैलती जा रही है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है जिसको रूस पूरे यूरोप को बेचता है।

तुम सोच रहे होगे कि रूस तो उत्तरी अमेरिका से बहुत दूर है पर ऐसा नहीं है। उत्तरी अमेरिका की एक स्टेट अलास्का जो कैनेडा देश के सुदूर पश्चिम में है और रूस का सुदूर पूर्वी किनारा जो अलास्का के पास है उनमें आपस में सबसे कम दूरी केवल ढाई मील है। इस तरह से रूस और उत्तरी अमेरिका तो भारत के दो गॉवों से भी ज़्यादा पास हैं।

---

[1] Tundra

[2] Siberia – is a district of Russia and its a region too which stretches from its Ural River in the West to Mongolia in the East.

[3] Daylight Saving Time (DST)

[4] Tropical Climate

[5] (1) Moscow is the capital. (2) St Petersburg (later known as Petrograd and Leningrad) is a port city on Baltic Sea. It is a European kind of most modern city of Russia. (3) Vladivostok

[6] Ural River comes out from Ural Mountains and falls in Arctic Sea in North.

[7] Trans-Siberian Railway is a network of railways connecting Moscow to Vladivostok with the Russian Far East and the Sea of Japan. With a length of 5,772 miles (9,289 kms), it is the longest railway line in the world. There are connecting branch lines into Mongolia, China and North Korea. It has connected Moscow with Vladivostok since 1916, and is still being expanded.

रूस की लोक कथाओं की यह पहली पुस्तक है जिसमें उसकी लोक कथाऐं उसके अलग अलग क्षेत्रों से दी जा रही हैं। इस पुस्तक में कुल पन्द्रह लोक कथाऐं हैं जिनमें पहली पॉच लोक कथाऐं इन्टरनैट से ली गयी हैं और आखिरी की दस लोक कथाऐं एक पुस्तक[8] से ली गयी हैं। आशा है कि यह पुस्तक तुम्हें पसन्द आयेगी। ये सारी लोक कथाऐं वहॉ की बहुत लोकप्रिय कथाओं में से आती हैं।

संसार के सात महाद्वीप

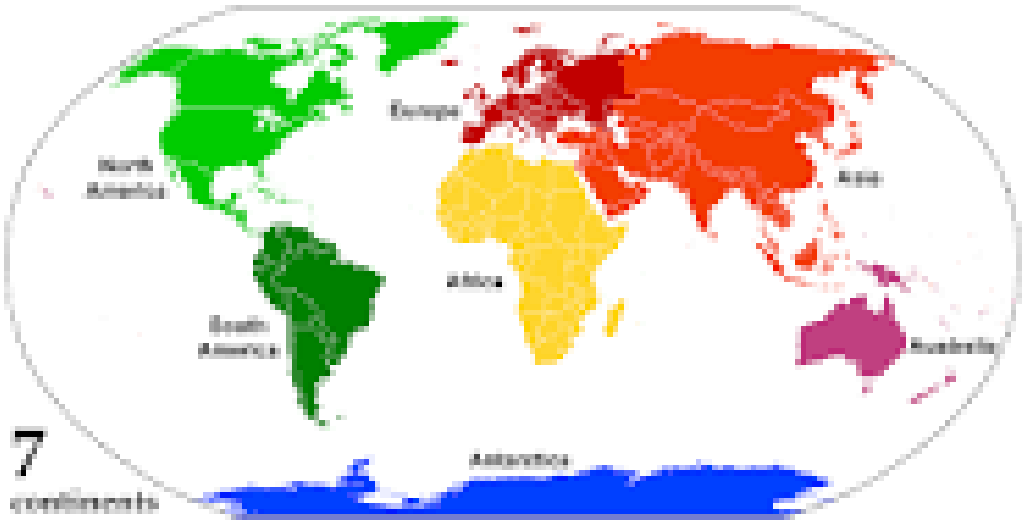

[8] Taken from the book "Russian Folk-tales", Translated by James Riordan. OUP. 2000.
It is also available at the Web Site : http://www.oldrussia.net/vas.html

1 एक बुढ़िया और एक छोटा फ़र का पेड़[9]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के किसी जंगल में एक बुढ़िया रहती थी। वह बहुत तरह के जादू जानती थी। वह रोज जंगल में इधर उधर घूमा करती थी और पेड़ों की बातें सुनने की कोशिश किया करती थी।

उसे इस काम में बड़ा मजा आता था क्योंकि अगर कभी कोई पेड़ अपनी कोई इच्छा जाहिर करता तो वह उसकी उस इच्छा को सुन कर अपने जादू से उसे पूरा कर देती थी। और जब उस पेड़ की इच्छा पूरी हो जाती तो उसको बड़ी खुशी होती थी।

एक दिन एक छोटा सा फ़र का पेड़[10] पास में खड़ी अपनी मॉ से कह रहा था — "मॉ, मुझे अपने आपसे नफरत है। देखो न, बजाय पत्तों के ये सुइयॉ उग आयीं हैं मेरे सारे शरीर पर।

क्या मैं रुपहला बिर्च[11] नहीं बन सकता? उसके पत्ते धूप में भी खूब चमकते हैं और बारिश के पानी में भी धुल कर नये नये लगने लगते हैं। मैं बहुत भद्दा हूॅ। मैं अपने आपको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता मॉ।"

---

[9] An Old Woman and a Small Fir Tree – a folktale from Russia, Asia

[10] Fir tree normally is an evergreen tree and has conical leaves. It is used as Christmas tree too. A Fir tree is of several kinds. A picture of one kind is given here above.

[11] Silvery Birch tree. See its picture below the picture of Fir tree. Its wood is very hard.

उसकी माँ एक लम्बी सुन्दर फ़र का पेड़ थी, वह धीरे से प्यार से अपने बेटे से बोली — "मेरे बच्चे, ऐसा नहीं कहते। तुम जानते हो कि जो कुछ हम चाहते हैं वह सब इस संसार में पाना मुमकिन नहीं है।

अगर हम शान्ति से सोचें तो हम सबके पास कुछ न कुछ कमियाँ हैं पर कुछ न कुछ अच्छाइयाँ भी हैं। इसलिये हमेशा अपनी अच्छाइयों को देखना चाहिये और उनको देख देख कर खुश रहना चाहिये।"

छोटा पेड़ रुआँसा सा हो कर बोला — "पर मेरे पास तो कुछ भी अच्छा नहीं है माँ। मुझे तो वह बिर्च का पेड़ बहुत अच्छा लगता है। उसके पास रुपहली पत्तियाँ हैं जो धूप और बारिश दोनों में चमकती हैं।"

माँ अपने बेटे को फिर समझाते हुए बोली — "बेटे, सोचो ज़रा, जब जाड़ा आता है और ठंडी हवाऐं बहती हैं तो बेचारे बिर्च के पेड़ की सारी पत्तियाँ तो धीरे धीरे कर के नीचे गिर जाती हैं और उसकी टहनियाँ ठंड में नंगी खड़ी रह जाती हैं।

जबकि तुम्हारी सुइयाँ वैसी की वैसी ही बनी रहती हैं। जाड़े भर तुम्हारी ये नुकीली पत्तियाँ हरी बनी रहती हैं।"

परन्तु छोटे फ़र के पेड़ पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। वह नाराजी से बोला — "मैं जब तक खुश नहीं हो सकता मॉ, जब तक मैं बिर्च जैसी पत्तियॉ न पा जाऊॅ।"

बुढ़िया ने जब यह बातचीत सुनी तो उसने अपना सिर हिलाया, मन्त्र पढ़ा, और यह लो, बुढ़िया के जादू के ज़ोर से उस छोटे फ़र के पेड़ की इच्छा पूरी हो गयी। फ़र के नुकीले पत्ते झर झर कर के नीचे गिर पड़े और वह छोटा फ़र का पेड़ बिर्च के पेड़ जैसी पत्तियों से भर गया।

अब क्या था फ़र का पेड़ खुशी से झूम उठा। उसने अपनी टहनियॉ फैलायीं, पत्तों को इधर उधर हिलाया और अपनी मॉ से बोला — "देखो मॉ, अब मेरी सारी पत्तियॉ बारिश और धूप में चमकेंगी।"

कुछ दिन बाद एक बकरी अपने सफेद मेमने के साथ उस जंगल में आ निकली। "मैं, मैं, मॉ मुझे भूख लगी है।" मेमने ने अपनी मॉ से कहा।

मॉ ने कहा — "देखो इस छोटे से पेड़ पर ये सफेद पत्तियॉ लगीं हैं, यही खा लो, ये बहुत मुलायम हैं।"

और बकरी और उसके मेमने दोनों ने उन सफेद पत्तियों को खाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे वे उस पेड़ की सारी पत्तियॉ खा गये और अब केवल भूरी टहनियॉ ही उस पेड़ पर बची थीं।

अब तो वह पेड़ बहुत ही खराब और भद्दा दिखाई देने लगा, साथ ही पत्तियॉ न होने की वजह से अब उसे ठंड भी लगने लगी। अब कोई चिड़िया भी उस पर नहीं बैठती थी इसलिये उसे अकेलापन भी बहुत लगने लगा।

फिर बारिश आयी और फिर उसकी नुकीली पत्तियॉ निकलने लगीं तो उसको बड़ी खुशी हुई। एक साल में ही वह फिर से अच्छा हरा भरा पेड़ हो गया। लेकिन इस खुशी को वह भूल गया और फिर उदास दिखायी देने लगा।

फिर पतझड़ आया और फ़र के पेड़ को छोड़ कर सभी पेड़ों की पत्तियॉ लाल पीली होने लगीं। फ़र का पेड़ फिर असन्तुष्ट सा दिखायी दे रहा था।

एक दिन वह बुढ़िया फिर वहॉ से गुजर रही थी कि उसके कानों में फिर से यह बातचीत पड़ी — "मॉ, क्या ही अच्छा होता अगर मेरे ऊपर सोने की पत्तियॉ लगतीं। इस चेस्टनट[12] के पेड़ को देखो, इस पर ये सुनहरी पत्तियॉ कितनी सुन्दर लग रहीं हैं और मेरे ये कॉटे कितने गन्दे हैं।"

मॉ ने समझाया — "देखो बेटा, पागल न बनो। क्या तुम देखते नहीं कि हवा से पत्तियॉ झड़ जाती हैं जबकि तुम्हारे कॉटे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचाते?"

[12] Chestnut is a kind of walnut like fruit, dark brown in color, which is eaten after roasting on fire like corn ear. See the picture of its tree and fruits above.

बेटे ने कहा — "यह सब कहने के लिये तो ठीक है मॉ पर मुझे अपना यह रूप बिल्कुल पसन्द नहीं। क्या मेरे ऊपर सुनहरी पत्तियॉ नहीं उग सकतीं?"

मॉ ने फिर कहा — "बेटा, अगर तुम्हारे ऊपर सुनहरी पत्तियॉ उग भी आयीं तो तुम्हारे पास वे ज़्यादा दिन तक नहीं रहेंगी। जल्दी ही उन्हें हवा उड़ा कर ले जायेगी।"

बुढ़िया ने सुना, अपना सिर हिलाया, मन्त्र पढ़ा और यह लो बुढ़िया के जादू के ज़ोर से उसकी इच्छा पूरी हो गयी। वह छोटा फ़र का पेड़ सच्चे सोने की पत्तियों से लद गया।

अब वह पेड़ हॅसा और बोला — "हॉ, अब ठीक है, अब देखो न मैं कितना अच्छा लगता हूॅ। जंगल का कोई पेड़ अब मेरी बराबरी नहीं कर सकता। मैं अब धूप और बारिश दोनों में खूब चमकूॅगा और हवा भी अब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

वह मूर्ख फ़र का पेड़ शान से तन कर खड़ा हो गया और सबको अपनी पत्तियॉ दिखाने लगा। उसने घमंड से अपनी टहनियों को भी हिलाना शुरू कर दिया लेकिन वे तो अब इतनी भारी हो गयीं थीं कि उससे हिल ही न पा रही थीं बल्कि बोझ से और नीचे की तरफ झुक गयी थीं।

अब एक दिन क्या हुआ कि एक लालची आदमी उधर आ निकला। उसके पास एक गाड़ी भी थी। जैसे ही उसने फ़र के पेड़

को देखा तो वह तो आश्चर्यचकित रह गया। पेड़ों पर पत्ते, फल, फूल लगते तो सबने देखे थे पर सोना उगता न किसी ने देखा था और न सुना था पर वह तो यह सब सच ही देख रहा था।

उसने ऑखें मल मल कर उस पेड़ को कई बार देखा। इधर से देखा उधर से देखा, नीचे से देखा ऊपर से देखा। जब उसे पूरा विश्वास हो गया कि वह सपना नहीं देख रहा है उसके पत्ते सोने के ही हैं तो वह तुरन्त ही अपनी जेब से एक बड़ा चाकू निकाल कर उसकी पत्तियॉ काटने वहॉ पहुॅच गया।

उसके मन में सबसे ज़्यादा अमीर बनने की लालसा जाग उठी थी। जल्दी जल्दी में उससे कहीं पेड़ की छाल और कहीं कहीं टहनी भी कटने लगी।

सारी पत्तियॉ वह अपनी गाड़ी में भर कर अपने घर ले गया और पीछे रह गया टूटी टहनी वाला बेचारा छोटा सा घायल सा मरा हुआ सा फ़र का पेड़।

कई महीनों तक वह छोटा फ़र का पेड़ इस घटना से बहुत दुखी रहा। उसके घाव भरने में भी बहुत समय लग गया। पर धीरे धीरे हवा और धूप के सहारे वह ठीक हो गया।

अगली बार जब वह बुढ़िया उधर से गुजरी तो उसने सुना वह छोटा पेड़ कह रहा था — "मैं अपने आपको बहुत पसन्द हूॅ मॉ।"

मॉ ने कहा — "बेटे, यह संसार बहुत अधिक सुखी हो जाये यदि हम लोग इच्छाऐं करना छोड़ दें।"

यह कहानी हमको गीता का उपदेश देती है कि हमको अपनी इच्छाओं को बढ़ाने की बजाय कम करते जाना चाहिये उसी में सुख है।

2 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज़[13]

बहुत पुरानी बात है कि रूस के किसी गॉव में एक किसान अपनी पत्नी और तीन बेटों के साथ रहता था। किसान के दो बड़े बेटे तो बहुत अक्लमन्द थे परन्तु उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे को सभी लोग संसार का सबसे बड़ा बेवकूफ कहते थे।

वह बच्चों की तरह भोला भाला और सीधा था। उसने अपने जीवन में न तो कभी किसी को कष्ट पहुॅचाया था और न ही कभी उसने कोई उतार चढ़ाव देखा था।

किसान पति पत्नी को अपने दोनों बड़े बेटों से तो बड़ी बड़ी आशाऐं थीं परन्तु उस बेवकूफ को तो अगर रोटी भी मिल जाये तो उसकी खुशकिस्मती। पर कभी कभी आदमी सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। कैसे? यह एक ऐसी ही कहानी है।

एक दिन रूस के राजा ज़ार[14] ने अपने राज्य में दूर दूर तक यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि वह अपनी बेटी किसी ऐसे आदमी को देगा जो उसे उड़ने वाला जहाज़ ला कर देगा। उस जहाज़ को समुद्र में भी चलना चाहिये और आसमान में उड़ने के लिये उसके पंख भी होने चाहिये।

---

[13] A Fool and a Flying Ship – a folktale from Russia, Asia
[This folktale has been given in the Book "Russian Folk-Tales" also with the title "The Flying Ship". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.]

[14] Tzar or Tsar – pronounced as "Zaar". Tzar was the title of the emperors of Russia before 1917.

यह सन्देश किसान के बेटों ने भी सुना तो उसके दोनों अक्लमन्द बेटों ने सोचा "ज़ार की बेटी से शादी करने का यह हमारे लिये सुनहरा मौका है।" और वे दोनों उसी दिन उड़ने वाले जहाज़ की खोज में चल दिये।

उनके पिता ने उनको आशीर्वाद दिया। अपने कपड़ों में से निकाल कर उन्हें अच्छे अच्छे कपड़े पहनने के लिये दिये।

उनकी मॉ ने उनके रास्ते के लिये बढ़िया बढ़िया खाना बना कर रखा। कई तरह के पके गोश्त रखे और मक्का की बढ़िया शराब रखी।

जब वे जाने लगे तो वह दूर तक उन्हें छोड़ने भी गयी और तब तक हाथ हिलाती रही जब तक कि वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

इस तरह वे खुशी खुशी अपना भाग्य आजमाने चले। उनके साथ क्या हुआ यह तो पता नहीं क्योंकि अभी तक उनकी कोई खबर नहीं आयी है।

पर जब उस बेवकूफ बेटे ने अपने भाइयों को जाते हुए देखा तो उसका मन भी अच्छे अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा खाना खाने तथा अच्छी शराब पीने को करने लगा।

उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं भी उड़ने वाले जहाज़ की खोज में जाऊॅगा। मुझे भी अच्छा खाना और मक्का की शराब दो। मैं भी ज़ार की बेटी से शादी करूॅगा।"

मॉ ने उसे झिड़का — "बेवकूफ कहीं का, तुझको क्या आता है। तू तो अगर घर से बाहर भी जायेगा न, तो भालू के चंगुल में फॅस जायेगा। और अगर भालू से किसी तरह से बच भी गया तो भेड़िया तुझे खा जायेगा।"

मगर उस बेवकूफ को तो रट लगी हुई थी — "मैं तो जा रहा हूॅ मॉ मैं तो जा रहा हूॅ।"

उसकी मॉ उसकी इस रट से परेशान हो गयी तो उसने यही ठीक समझा कि उसको भी उस उड़ने वाले जहाज़ की खोज में भेज दिया जाये ताकि घर में शान्ति रहे।

सो उसने उसके रास्ते में खाने के लिये सूखी काली रोटी के कुछ टुकड़े और पीने के लिये एक थर्मस में पानी रख दिया। वह उसको बाहर तक छोड़ने भी नहीं आयी, उसने उसको घर के दरवाजे से ही विदा कर दिया।

और जैसे ही वह घर से बाहर निकला वह घर का दरवाजा बन्द कर के घर के जरूरी कामों में लग गयी। उस बेवकूफ ने वह थैला अपने कन्धे पर लटकाया और गाता हुआ चल दिया।

उसे इस बात का बहुत दुख था कि उसे उसके भाइयों की तरह उसकी मॉ ने अच्छा खाना, मक्का की शराब आदि खाने पीने को नहीं दिया। वह उसको बाहर तक छोड़ने भी नहीं आयी पर फिर भी वह अपनी धुन में गाता हुआ मस्त हो कर चलता चला जा रहा था।

उसको काली रोटी के मुकाबले में सफेद रोल ज़्यादा अच्छे लगते थे मगर यात्रा में सबसे जरूरी बात यह थी कि पास में कुछ खाना होना चाहिये बस, न कि इस बात की कि वह खाना क्या था सो वह उसके पास था ही।

हरी हरी घास, नीले नीले आसमान को देख कर वह खुशी से गाना गाता हुआ आगे बढता जा रहा था कि कुछ दूर जाने पर उसे एक बहुत बूढ़ा दिखायी दिया। उसकी कमर झुकी हुई थी, लम्बी सफेद दाढ़ी थी और ऑखें अन्दर को धॅसी हुई थीं।

उस बूढे आदमी ने कहा — "नमस्ते बेटा।"

उस बेवकूफ ने भी जवाब दिया — "नमस्ते दादा जी।"

बूढ़े ने पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो बेटा?"

बेवकूफ ने जवाब दिया — "अरे, क्या आपने सुना नहीं कि ज़ार ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई उसको उड़ने वाला पानी का जहाज़ ला कर देगा उसी से वह अपनी बेटी की शादी करेगा?"

"तो क्या तुम वैसा जहाज़ बनाना जानते हो?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"तब फिर तुम क्या करोगे?"

"भगवान ही मालिक है।"

"अगर ऐसी बात है तो आओ यहाँ बैठते हैं। साथ साथ कुछ खायेंगे और फिर थोड़ा आराम करेंगे। मैं बहुत थक गया हूँ। लाओ दिखाओ क्या है तुम्हारे थैले में? वही खाते हैं।"

"दादा जी, मेरे पास जो कुछ है वह सब तो मुझे आपको दिखाते हुए भी शर्म आ रही है क्योंकि हालाँकि वह मेरे लिये तो ठीक है परन्तु किसी मेहमान के लिये ठीक नहीं है।"

"कोई बात नहीं बेटा, हमको भगवान पर भरोसा रखना चाहिये और जो कुछ वह दे उसे ही प्रेम सहित ले लेना चाहिये।"

बेवकूफ ने सकुचाते हुए अपना थैला खोला तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सूखी काली रोटी के टुकड़ों की जगह उस थैले में ताजा पकाया गया माँस और मुलायम सफेद रोल महक रहे थे।

वही उसने उस बूढ़े आदमी को खाने के लिये दिये तो वह बूढ़ा बोला — "देखा, भगवान अपने सीधे सादे आदमियों को कितना प्यार करता है हालाँकि तुम्हारी माँ तुमको इतना प्यार नहीं करती। उसने तुम्हारा हिस्सा तुमको नहीं दिया पर भगवान तो सबको प्यार करता है। लाओ, अब मक्का की शराब का स्वाद चखा जाये।"

जब उस बेवकूफ ने अपना थर्मस खोला तो उसमें तो पानी की जगह मक्का की बढ़िया शराब निकली। सो उस बेवकूफ और बूढ़े

ने उस जंगल में खूब मंगल किया। एक दो गाने भी साथ साथ गाये।

फिर बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। इसी जंगल में दूर तक चले जाओ और जो तुम्हें सबसे बड़ा पेड़ खड़ा दिखायी दे वहाँ उसके सामने तीन बार क्रास का निशान बनाना।

फिर अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उसे छूना और फिर पीछे की तरफ गिर जाना। और तब तक पैर पसार कर वहीं लेटे रहना जब तक कोई आ कर तुम्हें जगाये नहीं।

तब तुम देखोगे कि तुम्हारे लिये उड़ने वाला पानी का जहाज़ तैयार है। उसमें बैठ जाना और फिर जहाँ चाहो वहाँ उड़ना। लेकिन एक बात का और ख्याल रखना, रास्ते में जो भी तुम्हें मिले तुम उन सबको अपने जहाज़ में जरूर बिठा लेना।"

उस बेवकूफ ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उससे विदा ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

आगे जा कर जो उसे सबसे बड़ा पेड़ सबसे पहले दिखायी दिया उसके सामने उसने तीन बार क्रास का निशान बनाया, अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उसे छुआ और फिर पीछे की तरफ पैर पसार कर लेट गया। आँखें बन्द कर लीं और सो गया।

कुछ ही देर में उसको लगा कि कोई उसको उसकी बाँह हिला कर जगा रहा है। वह जाग गया। उसकी कुल्हाड़ी उसके पास ही

पड़ी थी। अब वह बड़ा पेड़ तो वहॉ से गायब हो गया था और उसकी जगह एक छोटा सा जहाज़ उड़ने के लिये तैयार खड़ा था।

उस बेवकूफ ने कुछ भी नहीं सोचा विचारा और तुरन्त ही जहाज़ में कूद कर बैठ गया। उसके बैठते ही जहाज़ उठा और पेड़ों के ऊपर से हो कर उड़ चला।

यह जहाज़ उसी तरह आसमान में भी उड़ रहा था जैसे पानी में चलता है। उड़ते उड़ते उसने देखा कि एक आदमी ने पानी से भीगी जमीन पर कान लगा रखा है। वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते चाचा जी, आप यहॉ क्या कर रहे हैं?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "नमस्ते बेटा, दुनियॉ में क्या हो रहा है मैं वही सब सुनने की कोशिश कर रहा हूँ।"

"आप मेरे जहाज़ में आ जाइये।"

वह आदमी भी उड़ने वाले पानी के जहाज़ में बैठना चाहता था सो वह भी उस जहाज़ में बैठ गया और वे दोनों गाना गाते गाते उड़ चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक टॉग से चल रहा है और दूसरी टॉग उसने अपने गले से बॉधी हुई है।

बेवकूफ ने उससे पूछा — "नमस्ते बड़े चाचा जी, आप इस तरह एक टॉग पर कूद कूद कर क्यों चल रहे हैं?"

उस आदमी ने कहा — "बेटा, अगर मैं अपनी दूसरी टॉग भी खोल दूँ तो मैं सारी दुनियॉ को एक छलॉग में नाप सकता हूँ।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो मेरे साथ मेरे जहाज़ में आ जाइये।" वह आदमी उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब फिर गाना गाते हुए चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी बन्दूक लिये खड़ा है और निशाना साध रहा है। लेकिन वह निशाना किस पर लगा रहा है यह उनको पता नहीं चल सका।

वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते मामा जी, आप किस पर निशाना लगा रहे हैं? मुझे तो आस पास कोई चिड़िया भी नजर नहीं आ रही।"

वह आदमी बोला — "अगर कोई ऐसी चिड़िया हुई भी जो तुम्हें नजर आ गयी तो मैं उसे अपनी बन्दूक का निशाना नहीं बनाऊँगा। जो चिड़िया या जानवर यहॉ से हजारों मील दूर है वही मेरा निशाना है।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो आप हमारे साथ आ जाइये।" वह आदमी भी सबके साथ उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब लोग फिर ज़ोर ज़ोर से गाना गाते हुए उड़ चले।

आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरा भरी डबल रोटी लिये उदास बैठा है। जहाज़ को नीचे उतारते हुए उस

बेवकूफ ने कहा — "नमस्ते बड़े मामा जी, आप इतने उदास क्यों हैं?"

"मुझे खाने के लिये डबल रोटी चाहिये बहुत भूख लगी है।"

"मगर आपकी पीठ पर तो पूरे का पूरा बोरा बँधा है डबल रोटी का।"

"इतना थोड़ा सा? यह तो मेरा एक कौर भी नहीं है।"

"अच्छा तो आइये मेरे साथ मेरे जहाज़ में बैठ जाइये।" वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और उन सबके गाने की आवाज और तेज़ हो गयी।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक झील के चारों ओर चक्कर काट रहा है। बेवकूफ बोला — "नमस्ते ताऊ जी, आप क्या खोज रहे हैं?"

"बेटा, मुझे पीने के लिये कुछ चाहिये पर मुझे पानी नहीं दिखायी दे रहा है।"

"मगर आपके सामने तो पानी की झील भरी पड़ी है, आप उसमें से पानी पी लीजिये।"

"क्या? यह पानी? यह पानी तो मेरा गला तर करने के लिये भी काफी नहीं है।"

"अच्छा तो फिर आप मेरे साथ बैठ कर मेरे इस जहाज़ की सैर करें।" और वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और फिर वे सब कोरस गाते हुए आगे बढ़े।

उड़ते उड़ते उन्होंने देखा कि एक आदमी जंगल की तरफ लकड़ी का गट्ठर लिये जा रहा है। उस बेवकूफ ने उससे पूछा — "बड़े ताऊ जी नमस्ते, आप यह लकड़ी जंगल की तरफ क्यों लिये जा रहे हैं?"

वह आदमी बोला — "बेटा, यह कोई साधारण लकड़ी नहीं है। अगर इस लकड़ी को चारों तरफ बिखेर दिया जाये तो लकड़ी के हर टुकड़े से एक भारी सेना निकल आयेगी।"

बेवकूफ बोला — "तो फिर आइये और हमारे जहाज़ में सैर कीजिये।" और वह आदमी भी जहाज़ में चढ़ गया और जहाज़ फिर से गाते हुए लोगों को ले कर उड़ चला।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरे में भूसा भर कर लिये जा रहा है। बेवकूफ ने जहाज़ पास लाते हुए उस आदमी से पूछा — "नमस्ते छोटे चाचा जी, आप यह भूसा कहाँ ले जा रहे हैं?"

"गॉव को।"

"क्यों क्या गॉव में भूसे की कमी हो गयी है?"

"नहीं नहीं, यह कोई मामूली भूसा नहीं है। यह करामाती भूसा है। अगर इस भूसे को किसी गर्म जगह पर फैला दिया जाये तो उसी समय वहॉ ठंडा होना शुरू हो जायेगा और बर्फ जमनी शुरू हो जायेगी।"

"आहा, तो आइये, मेरे जहाज़ में आपके लिये बहुत जगह है।"

"बड़ी कृपा होगी।" कह कर वह भी जहाज़ में बैठ गया और वह जहाज़ गाती हुई टोली को ले कर फिर आगे बढ़ चला।

उसके बाद उन्हें और कोई नहीं मिला और वे धीरे धीरे ज़ार के महल के ऊपर पहुॅच गये। वहॉ पहुॅच कर वे नीचे उतरे और अपने जहाज़ का लंगर डाल दिया।

ज़ार उस समय शाम का खाना खा रहा था। उसने उनके गानों की तेज़ आवाजें सुनी तो खिड़की से झॉका तो देखता क्या है कि एक उड़ने वाला पानी का जहाज़ उसके महल के कम्पाउंड में खड़ा है।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और यह जानने के लिये बाहर भेजा कि यह उड़ने वाला जहाज़ कौन ले कर आया है और कौन ये खुशी के गाने गा रहा है।

नौकर कम्पाउंड में आ कर जहाज़ को आश्चर्य से देखने लगा। उसने यह भी देखा कि जहाज़ में बैठे सभी आदमी बहुत ज़ोर ज़ोर से हॅसी मजाक कर रहे थे।

पर वे सभी साधारण किसान और मजदूर जैसे लग रहे थे सो वह बिना कोई सवाल पूछे ही वापस लौट गया और ज़ार को बताया कि उस जहाज़ में कोई भी भला आदमी नहीं था बल्कि सभी किसान और मजदूर जैसे लोग थे।

ज़ार को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था कि वह अपनी एकलौती बेटी को किसी गॅवार किसान के पल्ले बॉध दे सो वह सोच में पड़ गया कि किस तरह इन लोगों से छुटकारा पाया जाये।

उसने सोचा कि "मैं इनको कोई ऐसा काम दे देता हूॅ जो ये कर ही न सकें और अपनी जान की भीख मॉगते नजर आयें। इस तरह मैं अपनी बेटी की शादी इन गॅवारों से करने से भी बच जाऊॅगा और मुझे यह जहाज़ भी मुफ्त में मिल जायेगा।"

ऐसा सोच कर ज़ार ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस बेवकूफ के पास जा कर उससे यह कहने को कहा कि "ज़ार इस समय खाना खा रहे हैं। ज़ार के खाना खत्म होने से पहले तुम्हें अमृत जल लाना होगा।"

अब जिस समय ज़ार यह सब अपने नौकर से कह रहा था वह तेज़ सुनने वाला यह सब सुन रहा था।

जब उसने यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ तो यह सुन कर परेशान हो गया "अब मैं क्या करूॅ? ज़ार के खाना खत्म होने से पहले तो क्या मैं तो सौ साल में भी वह जल नहीं खोज

सकता और ज़ार को वह जल अपना खाना खत्म होने से पहले ही चाहिये।"

पर तेज़ चलने वाला बोला — "तुम चिन्ता न करो मेरे दोस्त। मैं करूँगा तुम्हारा यह काम।"

इतने में ज़ार का नौकर आया और उसने उस बेवकूफ को ज़ार का हुक्म सुनाया। बेवकूफ लापरवाही से बोला — "ज़ार को बोलो उसका यह काम हो जायेगा।"

ज़ार के नौकर को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस लड़के पर तो इस बात का कोई असर ही नहीं हुआ पर फिर वह वहाँ से चला गया।

तेज़ चलने वाले ने अपना दूसरा पैर अपनी गर्दन से खोला और एक अँगड़ाई ले कर भाग लिया। वह तो तुरन्त ही आँखों से ओझल हो गया।

हमारे कहने में देर हो सकती है, पर उसके अमृत जल को लाने में देर नहीं हो सकती।

पलक झपकते ही उसने शीशी में अमृत जल भरा और सोचने लगा "मैं तो तुरन्त ही पहुँच जाऊँगा इसलिये मैं ज़रा यहाँ आराम कर लेता हूँ।" सो वह पास में लगी एक हवाई चक्की के पास बैठ गया और सो गया।

शाही खाना खत्म होने वाला था और उस तेज़ चलने वाले का कोई पता नहीं था। उस समय जहाज़ में न कोई गाना गा रहा था

और न कोई हॅस रहा था। सभी अमृत जल का इन्तजार कर रहे थे।

इतने में तेज़ सुनने वाला जहाज़ से कूदा और गीली जमीन पर कान रख कर सुनता हुआ बोला — "यह भी क्या आदमी है। जनाब हवाई चक्की के नीचे सो रहे हैं । मुझे उसके खर्राटों की आवाज साफ सुनायी पड़ रही है। उसके सिर के पास एक मक्खी भी भिनभिनाती भी सुनायी पड़ रही है।"

निशानेबाज बोला — "मैं आया।" और वह तुरन्त ही जहाज़ के ऊपर खड़ा हो कर अपनी बन्दूक सॅभालने लगा। उसने मक्खी का निशाना साधा और बन्दूक चला दी।

बन्दूक की गोली की आवाज से वह तेज़ चलने वाला जाग गया और पल भर में जहाज़ पर हाजिर हो गया।

बेवकूफ ने उससे अमृत जल ले कर ज़ार के नौकर को दे दिया और नौकर उसे ज़ार के पास ले गया। ज़ार अभी खाना खा ही रहा था इसलिये उसकी यह इच्छा पूरी हुई।

ज़ार ने सोचा "ये किस तरह के किसान हैं कि इन्होंने यह इतना मुश्किल काम कर लिया? अब इनको कोई दूसरा मुश्किल काम दिया जाये।"

उसने अपने नौकर को फिर बुलाया और जहाज़ के कप्तान को यह कहने को कहा — "अगर तुम इतने ही चतुर हो तो तुम्हारी भूख भी ज़्यादा होनी चाहिये। तुमको और तुम्हारे दोस्तों को एक

बार में बानवै भुने बैल तथा चालीस भट्टियों में जितनी डबल रोटी बनायी जा सकती हैं वह सब खानी होंगी।"

तेज़ सुनने वाले ने यह सन्देश सुना और बेवकूफ को बताया तो वह बेवकूफ अपना सिर पकड़ कर बैठ गया और बोला — "मैं तो एक बार में पूरी एक डबल रोटी भी नहीं खा सकता तो चालीस भट्टियों में बनी डबल रोटी कैसे खा पाऊँगा?"

ज़्यादा खाने वाले ने कहा — "तुम केवल अपनी ही भूख की ही चिन्ता क्यों कर रहे हो? मेरी भूख की चिन्ता क्यों नहीं कर रहे? तुम केवल अपनी ही चिन्ता न करो भाई मेरा भी तो कुछ ख्याल करो।

वह सब तो मेरे लिये एक कौर के समान है। आज खाने की जगह पर कुछ नाश्ता ही सही। यह भी मेरे लिये खुशी की बात होगी।"

इतने मे ज़ार का नौकर आया और उसने ज़ार का सन्देश सुनाया तो बेवकूफ ने कहा — "ठीक है ठीक है, तुरन्त खाना ले आओ फिर सोचेंगे कि हमें क्या करना है।"

कुछ ही देर में बानवै भुने साबुत बैल और चालीस भट्टियों में पकी डबल रोटी वहाँ हाजिर थी। सभी साथियों के बैठते बैठते ही उस ज़्यादा खाना खाने वाले ने काफी खाना खत्म कर दिया।

ज़्यादा खाना खाने वाले ने उस नौकर से कहा — "यह क्या भाई? अगर तुमने खाना खिलाने के बारे में सोचा ही था तो ठीक से

खाना खिलाना चाहिये था। यह तो मेरा नाश्ता भी नहीं हुआ। चलो हम भी याद रखेंगे कि ज़ार के महल में हमें खाना नहीं मिला।"

ज़ार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना सारा खाना उन सभी ने कैसे खा लिया पर वह भी अभी हार मानने वाला नहीं था। फिर उसने उस बेवकूफ को चालीस बैरल[15] जिनमें हर एक बैरल में चालीस बालटी शराब थी, पीने के लिये कहा।

तेज़ सुनने वाले ने फिर यह सन्देश बेवकूफ को बताया तो वह बोला — "मैंने तो आज तक अपने जीवन में एक बार में एक बालटी से ज़्यादा शराब कभी नहीं पी फिर ये चालीस बैरल...।"

ज़्यादा पीने वाले ने कहा — "दुखी न हो मेरे दोस्त, यह काम तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। आज मुझे थोड़ी सी शराब पीने का मौका मिला है तो उसे क्यों गॅवाया जाये।"

ज़ार के नौकरों ने चालीस बैरल ला कर रखे और हर बैरल में चालीस बालटी शराब थी। वह प्यासा आदमी चालीस घूँटों में ही वह सारी शराब पी गया और बोला — "बस, इतनी सी शराब? मैं तो अभी भी प्यासा हूँ।"

[15] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

यह सब देख कर ज़ार ने अपने नौकरों से कहा कि वे उसको जा कर कहें — "अब उस बेवकूफ से कहो कि वह शादी के लिये तैयार हो जाये। उसको स्नान घर दिखा दो ताकि वह ताजा हो सके। मगर उस कमरे में जो लोहे का टब है उसे खूब गर्म लाल कर दो ताकि जैसे ही वह उसमें वह पैर रखे वह मर जाये।"

तेज सुनने वाले ने ज़ार का यह सन्देश ज्यों का त्यों उस बेवकूफ को सुना दिया। बेवकूफ के पैरों तले तो जमीन ही खिसक गयी और सारा हॅसी मजाक रुक गया।

भूसे वाला आदमी बोला — "क्या हुआ दोस्त, चिन्ता क्यों करते हो, मैं किस दिन काम आऊॅगा?"

राजा के नौकरों ने नहाने के टब को खूब गर्म किया और सोचा कि अब तो यह बेवकूफ मर ही जायेगा मगर उस भूसे वाले आदमी ने बेवकूफ के अन्दर जाते ही अपना कुछ भूसा उस टब के अन्दर फैला दिया और कुछ पलों में ही उस टब का उबलता पानी बर्फ जैसा ठंडा हो गया।

वे लोग भट्टी के ऊपर ही आराम से कॉपते हुए लेटे रहे। सुबह को नौकरों ने दरवाजा खोला तो उन्होंने देखा कि बेवकूफ और उस का साथी भट्टी पर लेटे गाना गा रहे हैं।

उन्होंने जा कर जब यह ज़ार को बताया तो ज़ार बहुत गुस्सा हुआ और मुट्ठियॉ भींच कर बोला — "ओह, मैं तो इस आदमी से तंग आ गया। लगता है मैं इससे नहीं जीत सकता।

आखिरकार मुझे अपनी बेटी इसको देनी ही होगी पर उससे जा कर बोलो कि अगर वह मेरी बेटी से शादी करना ही चाहता है तो उसे कम से कम मेरी बेटी की रक्षा का साधन, यानी सेना, तो रखनी ही चाहिये न।"

तेज़ सुनने वाले ने ज़ार की यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ बोला — "दोस्तो, कई बार आप सबकी सहायता से मैंने अपनी मुश्किलों को दूर किया है पर अबकी बार लगता है कि मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।"

लकड़ी के गट्ठर वाला आदमी बोला — "तुम कैसे आदमी हो? मुझे तो तुम भूल ही गये। इस छोटे से काम के लिये मैं हाजिर हूँ।"

ज़ार के नौकरों ने जब बेवकूफ को ज़ार का हुक्म सुनाया तो वह बेवकूफ बोला — "अच्छा, अच्छा, सुन लिया। मगर अपने राजा से कहना कि अगर अबकी बार उसने अपनी बेटी की शादी मुझसे नहीं की तो मैं उसकी बेटी को जबरदस्ती उठा कर ले जाऊँगा।"

नौकर ने उस बेवकूफ का यह सन्देश भी जा कर ज़ार को दे दिया और इधर जहाज पर सभी हँसने और गाने लगे। रात को जब सब सो गये तो वह आदमी अपनी लकड़ियाँ ले कर इधर उधर गया और उनको फैला दिया।

जैसे ही वह कोई लकड़ी रखता वैसे ही वहाँ एक बड़ी सेना प्रगट हो जाती। कोई भी उन सेनाओं के सिपाहियों को नहीं गिन

सकता था। उन सेनाओं में पैदल तथा कई प्रकार के बन्दूक वाले सिपाही सुन्दर नयी चमकीली पोशाक पहने खड़े थे।

सुबह को जब ज़ार उठा और उसने खिड़की से झॉका तो अपने आपको एक बहुत बड़ी सेना से घिरा हुआ पाया। वह बेवकूफ उस सेना का सेनापति था जो अपने जहाज में बैठा हॅसी मजाक कर रहा था।

अबकी बार डरने की बारी ज़ार की थी। तुरन्त ही उसने अपने नौकरों के हाथ बेवकूफ को हीरे जवाहरात तथा वेशकीमती पोशाकों की भेंट भेजी और अपनी बेटी की शादी के लिये उसको निमन्त्रित किया।

उस बेवकूफ ने भी अपने सबसे सुन्दर कपड़े पहने और राजकुमारी के सामने राजकुमार बन कर आ खड़ा हुआ।

राजकुमारी तो उसको देखते ही मोहित हो गयी। ज़ार और उसकी पत्नी दोनों ही उस बेवकूफ को अपना दामाद[16] बना कर खुश थे। उसी दिन उन दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी से रहने लगे।

[16] Translated for the word “Son-in-Law” – means the husband of one’s daughter.

3 सफेद राजकुमारी और सात बौने[17]

एक समय की बात है कि ठंड के दिन थे। आसमान से बर्फ के छोटे छोटे टुकड़े गिर रहे थे।

ऐसे में एक रानी अपने महल में खिड़की के पास बैठी कसीदाकारी कर रही थी। वह खिड़की काले आबनूस की लकड़ी की बनी थी।

अपने काम के बीच बीच में वह कभी कभी बर्फ गिरती भी देख लेती थी कि उसके हाथ में सुई चुभ गयी और उसके हाथ से खून की तीन नन्हीं नन्हीं बूँदें बर्फ पर गिर पड़ीं।

लाल रंग का खून बर्फ पर पड़ा हुआ था और रानी उसको एकटक देखे जा रही थी। एकाएक उसने अपने मन में ख्याल आया "ओह, अगर मेरे पास बर्फ जैसा सफेद, खून जैसा लाल और इस खिड़की की काली लकड़ी के रंग जैसे काले बालों वाला एक बच्चा होता तो कितना अच्छा होता।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद ही उसने एक बेटी को जन्म दिया जिसके बाल आबनूस की लकड़ी की तरह काले थे, गाल और होठ

---

[17] White Princess and Seven Dwarfs – a foktale from Russia, Asia.
[This story is very popular in European countries in various versions especially in Germany as "Snow White and the Seven Dwarvs" or "Little Snow White and Seven Dwarves".]
This version is a Russian version. There are many other stories like this told and heard in other countries too. Read other such stories in the book "Snow White Jaisi Kahaniyan" written in Hindi. Available from hindifolktales@gmail.com .]

खून की तरह लाल थे और उसका रंग इतना सफेद था कि सभी उसे सफेद राजकुमारी कहने लगे। राजकुमारी के पैदा होने के बाद रानी चल बसी।

एक साल बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी रानी बहुत सुन्दर थी पर वह बहुत घमंडी और सबसे जलने वाली थी। दुनियॉ में उसकी केवल एक ही इच्छा थी और वह यह कि धरती पर बस वही एक सबसे सुन्दर स्त्री हो।

उसके पास जादू का एक शीशा था। वह जब भी कभी उसमें अपने आपको देखती तो उससे पूछती — "ओ शीशे, बता सबसे सुन्दर कौन है?"

तो वह शीशा जवाब देता — "ओ रानी, तू ही इस धरती पर सबसे सुन्दर है।" इस जवाब को सुन कर रानी झूम उठती थी क्योंकि वह जानती थी कि उसका यह शीशा उससे हमेशा सच बोलता है।

समय पर समय निकलता चला गया और जैसे जैसे वह सफेद राजकुमारी बड़ी होती गयी वह और भी अधिक सुन्दर होती गयी। जब वह सात साल की हो गयी तो वह दिन के उजाले की तरह चमकती हुई थी।

और फिर एक समय ऐसा भी आया जब रानी ने अपने शीशे से पूछा — "ओ शीशे, बता सबसे सुन्दर कौन है?"

तो शीशे ने जवाब दिया — "तेरी जैसी सुन्दरता कहीं नहीं है रानी, पर काले बालों वाली सफेद राजकुमारी तुझसे हजार गुना सुन्दर है।"

इस जवाब को सुन कर रानी घबरायी और जलन से लाल पीली हो गयी। अब वह जब भी सफेद राजकुमारी को देखती तो उसका दिल बैठने लगता।

वह उस भोली भाली लड़की से केवल उसकी सुन्दरता की वजह से ही नफरत करने लग गयी थी। उसका दिन का चैन और रात की नींद दोनों हराम हो गयी थीं। आखिरकार उससे रहा नहीं गया।

एक दिन उसने शाही शिकारी को बुलाया और उसे हुक्म दिया कि इस लड़की को जंगल में ले जा कर मार डालो और उसकी कोई निशानी ला कर मुझे दो जिससे मुझे विश्वास हो जाये कि तुमने उसको मार दिया है।

शिकारी रानी के हुक्म से सफेद राजकुमारी को ले कर जंगल चला। पर वहॉ जब वह उसे मारने लगा तो राजकुमारी डर के मारे रो पड़ी और बोली — "ओ शिकारी, तुम मुझे छोड़ दो, मुझे मत मारो। अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं यहॉ से बहुत दूर चली जाऊॅगी और फिर कभी इधर नहीं आऊॅगी।"

उसकी यह प्रार्थना सुन कर शिकारी का दिल पसीज गया। उसने कहा — "ठीक है राजकुमारी, मैं तुमको छोड़ देता हूॅ। पर

तुम तुरन्त ही यहॉ से कहीं दूर भाग जाओ और फिर इधर कभी नहीं आना। भगवान जंगली जानवरों से तुम्हारी रक्षा करें।"

राजकुमारी यह सुन कर चली गयी और शिकारी रानी के लिये राजकुमारी के मारने की निशानी के तौर पर एक जंगली सूअर का दिल निकाल कर ले गया।

उस बेरहम रानी ने उस सूअर के दिल को राजकुमारी का दिल समझ लिया और रसोइये से उसे पकवा कर खूब चटखारे ले ले कर खाया।

नन्हीं राजकुमारी जंगल में चलती रही, चलती रही। उसके चारों ओर पत्तियॉ ही पत्तियॉ थीं और थे पेड़ के तने। वह कुछ नहीं जानती थी कि वह क्या कर रही है और कहॉ जा रही है।

रास्ते में कटीली झाड़ियॉ भी थीं, और टेढ़े मेढ़े पत्थर भी। चलते चलते उसको बहुत से जंगली जानवर भी मिले। वह उनसे डरी भी पर उन्होंने उसको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया।

अब वह सात ऊॅची ऊॅची पहाड़ियों को पार कर शाम को एक छोटी सी झोंपड़ी के पास पहुॅची। उस झोंपड़ी का दरवाजा खुला था सो वह उसके अन्दर चली गयी।

पर अन्दर तो कोई भी नहीं था। वह बहुत थकी हुई थी सो उसने आराम करने का विचार किया।

अन्दर जा कर उसने चारों तरफ देखा। वहॉ हर चीज़ बहुत छोटी थी मगर थी बहुत साफ और सुन्दर।

कमरे में एक तरफ एक मेज रखी थी जिस पर सफेद मेजपोश बिछा हुआ था। उस मेज पर सात छोटी तश्तरी, सात छोटे कॉटे, सात छोटी चम्मचें और सात छोटे शराब के प्याले रखे थे।

इन सातों तश्तरियों के साथ छोटी छोटी सात कुर्सियॉ भी रखी थीं। कमरे के दूसरी ओर सात छोटे छोटे पलंग बिछे थे जिन पर दूध के समान सफेद चादरें बिछी हुई थीं।

सफेद राजकुमारी बहुत भूखी और प्यासी थी सो उसने हर तश्तरी से थोड़ी थोड़ी रोटी और सब्जी खाई और हर प्याले से एक एक घूँट शराब का पिया। अब उसे थकान की वजह से नींद आने लगी मगर वह सोये कहॉ?

पहला पलंग उसके लिये बहुत सख्त था और दूसरा बहुत मुलायम। तीसरा बहुत छोटा था और चौथा बहुत तंग। पॉचवॉ बिल्कुल चौरस था और छठा बहुत गद्देदार। मगर सातवॉ पलंग उसके लिये बिल्कुल ठीक था सो वह उसी पलंग पर जा कर सो गयी।

जब सूरज सातवीं पहाड़ी के पीछे छिप गया और अँधेरा फैलने लगा तो उस छोटी झोंपड़ी के मालिक लोग घर लौटे।

इस झोंपड़ी के मालिक सात छोटे छोटे बौने थे जो सारा दिन सोने और रत्नों की खोज में पहाड़ खोदते थे।

उन्होंने अपनी अपनी छोटी मोमबत्तियॉ जलायीं और देखा कि वहॉ तो कोई था क्योंकि सभी सामान वैसा ही नहीं था जैसा वे छोड़ कर गये थे।

पहला बौना बोला — "मेरी कुरसी पर कौन बैठा?"

दूसरा बौना बोला — "मेरी तश्तरी में से किसने खाया?"

तीसरा बौना बोला — "मेरी रोटी किसने खायी?"

चौथा बौना बोला — "मेरी सब्जी किसने खायी?"

पॉचवॉ बौना बोला — "और मेरा कॉटा किसने इस्तेमाल किया?"

छठा बौना चिल्लाया — "किसने मेरे चाकू से काटा?"

और सातवॉ बौना बोला — "किसने मेरे प्याले में से शराब पी?"

तभी सबकी नजर अपने अपने पलंगों पर पड़ी।

पहले छह बौने एक साथ चिल्लाये — "हमारे पलंगों पर तो कोई सोया था।"

पर सातवॉ बोला — "वह यह है।"

वे लोग अपनी अपनी मोमबत्तियॉ ले आये और उनकी रोशनी में उस सोने वाले को देखते रहे, देखते रहे।

वे अपने छोटे मेहमान को देख कर इतने खुश हुए कि उन्होंने उसको जगाया नहीं बल्कि रात भर उसको वहीं आराम से सोने

दिया। सातवें बौने ने सभी के पास बारी बारी से एक एक घंटा सो कर अपनी रात गुजारी।

सुबह सवेरे ही सफेद राजकुमारी जाग गयी। उसने कमरे में चारों ओर सात छोटे बौने देखे तो वह घबरा गयी मगर जल्दी ही उसे लगा कि वे उसके दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हैं।

वह पलंग पर उठ कर बैठ गयी और उनकी तरफ देख कर मुस्कुराने लगी। अपना पूरा आराम करने के बाद वह और भी अधिक सुन्दर लगने लगी थी।

उसको बैठे देख कर सातों बौने उसके चारों तरफ खड़े हो गये और बोले — "बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

"सभी मुझे सफेद राजकुमारी कहते हैं।"

"तुमको हमारे घर का रास्ता कैसे मिला?"

इस सवाल के जवाब में उसने उन बौनों को अपनी पूरी कहानी सुना दी।

सातों बौनों ने उसकी कहानी बड़े ध्यान से सुनी और बोले — "क्या तुम्हें घर में काम करना आता है? क्या तुम हमारे लिये खाना बनाना, सिलाई, बुनाई, धुलाई तथा पलंग ठीक करना आदि काम कर सकती हो?

अगर तुम इस घर को ठीक से साफ सुथरा रख सकती हो तो तुम हमारे साथ रह सकती हो और फिर तुम्हें दुनियॉ में किसी चीज़ की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"हॉ, हॉ, क्यों नहीं, बड़ी खुशी से।" सफेद राजकुमारी ने कहा। सो वह वहॉ रह कर उन सातों बौनों का काम करने लगी।

रोज ही सातों बौने सुबह सातों पहाड़ियों में से एक पहाड़ी पर चले जाते और हीरे जवाहरात तथा सोना निकालते और हर शाम को सूरज डूबने के बाद ही लौटते। जब वे घर वापस आते उस समय उनका खाना मेज पर लगा होता था।

लेकिन हर सुबह वे सफेद राजकुमारी को रानी के बारे में चेतावनी देते और कहते — "हमें तुम्हारी मॉ पर विश्वास नहीं है। किसी भी दिन उसको तुम्हारे यहॉ होने का पता चल सकता है इसलिये उससे होशियार रहना और किसी को भी घर के अन्दर नहीं आने देना।"

बौनों का सोचना ठीक था। एक दिन रानी ने खुशी खुशी अपने जादू के शीशे से पूछा — "ओ शीशे, बता दुनियॉ में सबसे सुन्दर कौन है?"

और शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी, तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ उनकी झोंपड़ी में रहती है।"

रानी को बहुत गुस्सा आया क्योंकि उसका ख्याल था कि शिकारी ने उसको मार दिया था पर शिकारी ने तो उसको धोखा दिया और सफेद राजकुमारी अभी भी ज़िन्दा थी।

रानी सोच में पड़ गयी कि अब वह क्या करे। रात दिन सोचने के बाद उसके मन में एक विचार उठा।

उसने अपना चेहरा रंग लिया और एक फेरी वाली का वेश बना लिया। उसने यह सब इतनी खूबी से किया कि उसको कोई नहीं पहचान सका। फिर उसने एक टोकरी में झालर, बेलें, डोरियॉ रखीं और उन सातों बौनों के घर की तरफ चल दी।

सात पहाड़ियॉ पार कर वह उन बौनों के घर के सामने पहुॅची और दरवाजा खटखटाते हुए बोली — "सुन्दर सुन्दर डोरियॉ झालरें ले लो।"

सफेद राजकुमारी ने अपनी खिड़की से झॉका और बोली — "इधर आओ, दिखाओ तुम्हारी टोकरी में क्या है?"

"झालरें, बेलें, डोरियॉ, सब तरह की और सब रंगों में।" और यह कह कर उसने चटकीले रंगों वाली झालर का एक फन्दा सा बना लिया।

राजकुमारी ने सोचा — "उॅह, ये बौने बेकार में ही रानी से डरते हैं। इस ईमानदार औरत को अन्दर आने देने में कोई नुकसान नहीं है।" सो उसने उस औरत के लिये घर का दरवाजा खोल दिया।

वह औरत घर के अन्दर आ गयी और उसने उस औरत से कुछ सुन्दर बेलें ले लीं।

बेलें बेचने के बाद उस औरत ने कहा — "बेटी, तुम इस ढीली ढाली पोशाक में अच्छी नहीं लग रही हो। यहॉ आओ मेरे पास, मैं यह झालर तुम्हारी पोशाक में लगा दूँ ताकि तुम चुस्त हो जाओ।"

राजकुमारी को उस औरत की इस बात पर कोई शक नहीं हुआ सो वह उस तीखी चटकीली झालर को देखती हुई उस औरत के पास जा पहुँची।

उस औरत ने तुरन्त ही वह फन्दा उस लड़की की कमर में डाल कर इतना कस दिया जिससे उसकी सॉस रुक गयी और वह जमीन पर गिर पड़ी।

अब रानी खुशी से बोली — "अहा, अब मैं ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री होऊँगी।" और यह कह कर अपने घर वापस चली गयी।

यह अच्छी बात थी कि यह सब तब हो रहा था जब सूरज सातवीं चोटी के पीछे छिप रहा था इसलिये बौने जल्दी ही अपना काम खत्म कर के घर आ गये।

जब उन्होंने अपनी प्यारी सी नन्हीं सी राजकुमारी को जमीन पर पड़े देखा तो उन्हें दाल में कुछ काला लगा। राजकुमारी तो न कुछ

बोल रही थी न हिल डुल रही थी। उन्होंने उसे उठाया तो देखा कि एक झालर उसके शरीर पर बहुत कस कर बँधी हुई थी।

उन्होंने तुरन्त ही उसके बंधन काट दिये। बंधन कटते ही उसकी सॉस वापस आ गयी और उसने ऑखें खोल दीं और एक बार फिर सब कुछ ठीक हो गया।

जब बौनों ने सारी कहानी सुनी तो कहा — "वह फेरीवाली नहीं थी राजकुमारी, वह तो दुष्टा रानी थी। इसलिये आगे से होशियार रहना। हम जब घर पर न हों तो दरवाजा किसी के लिये कभी नहीं खोलना।"

जब रानी घर पहुँची तो रानी खुशी खुशी फिर से अपने जादुई शीशे के सामने खड़ी हो कर पूछने लगी — "ओ शीशे, अब बता संसार में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी, तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ झोंपड़ी में रहती है।"

रानी एक बार फिर चिन्ता में पड़ गयी कि अभी तो वह उस राजकुमारी को मार कर आयी है और वह अभी भी ज़िन्दा है। यह कैसे हुआ। वह फिर गुस्से से लाल पीली हो कर कहने लगी — "अबकी बार मैं ऐसी चाल चलूँगी कि वह बचेगी नहीं।"

यह दुष्टा रानी जादूगरनी भी थी सो अबकी बार उसने एक और चाल खेली।

उसने सोने की एक सुन्दर सी कंघी बनायी जो जहर में बुझी हुई थी। उसने फिर एक बुढ़िया का रूप रखा और सातों पहाड़ियॉ पार कर सातों बौनों के घर पहुँची और आवाज लगायी — "सुन्दर सुन्दर चीज़ें ले लो। सुन्दर सुन्दर चीज़ें ले लो।"

राजकुमारी ने फिर अपनी खिड़की से झॉका और बोली — "आज तुम अपने रास्ते जा सकती हो क्योंकि मुझे दरवाजा खोलने की और किसी को अन्दर घुसाने की इजाज़त बिल्कुल नहीं है।"

बुढ़िया ने कहा — "तुम्हें दरवाजा खोलने की जरूरत नहीं है और मेरा सामान देखने में तुम्हारा कोई नुकसान भी नहीं होगा।" यह कहते हुए उसने अपनी टोकरी से वह जहरीली कंघी निकाल कर उसको दिखायी।

राजकुमारी वह सुन्दर कंघी देख कर उसकी तरफ इतनी आकर्षित हुई कि वह बौनों की दी हुई चेतावनी को भूल गयी और उसने उस बुढ़िया के लिये घर का दरवाजा खोल दिया।

बेचारी राजकुमारी बड़े भोलेपन और विश्वास के साथ ललचाई ऑखों से उस कंघी की तरफ देख रही थी। तभी उस बुढ़िया ने वह कंघी उसके बालों में लगा दी।

पर जैसे ही उस कंघी ने उसके सिर की खाल छुई वैसे ही उसमें लगे जहर ने अपना काम शुरू कर दिया और राजकुमारी बेहोश हो कर गिर गयी।

रानी ने उसकी तरफ नफरत से देखा और मन में सोचा "शायद यह तुम्हारे लिये काफी है।" कह कर वह जल्दी जल्दी वहॉ से चली क्योंकि सूरज अब सातवीं चोटी के पीछे छिपने ही वाला था।

कुछ मिनटों बाद ही बौने आये तो उन्होंने सफेद राजकुमारी को फिर से फर्श पर पड़े देखा तो समझ गये कि आज रानी फिर आयी थी और राजकुमारी ने आज फिर उसके लिये घर का दरवाजा खोला था।

जल्दी ही उन्होंने बच्ची के बालों में लगी कंघी ढूँढ ली और उसे निकाल लिया। कंघी के निकलते ही उसने ऑखें खोल दीं और वह उठ कर बैठी हो गयी।

राजकुमारी की कहानी सुन कर बौने गम्भीर हो गये और बोले — "देखा राजकुमारी, वह कोई बुढ़िया नहीं थी वह तो रानी ही थी जो रूप बदल कर यहॉ आयी थी इसलिये अबकी बार तुम होशियार रहना। किसी से कोई चीज़ खरीदना नहीं और किसी भी कीमत पर किसी को अन्दर नहीं आने देना।"

राजकुमारी ने फिर पक्का वायदा किया कि वह बौनों का कहा मानेगी और किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलेगी।

इसी समय रानी अपने घर पहुँची तो एक बार फिर खुशी खुशी अपने जादुई शीशे के सामने खड़ी हो कर पूछने लगी — "ओ शीशे, बता संसार में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी, तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ उनकी झोंपड़ी में रहती है।"

यह सुन कर रानी की हॅसी फिर उड़ गयी और वह गुस्से से दॉत किटकिटाने लगी और बोली — "इस दुनियॉ में मैं ही सबसे सुन्दर हूॅ और मैं ही सबसे सुन्दर रहूॅगी।"

ऐसा कह कर वह पैर पटकती हुई अपने गुप्त कमरे में पहुॅची जहॉ कभी कोई दूसरा आता जाता नहीं था।

वहॉ उसने अपने जादू के असर से एक सेब बनाया जो सफेद और लाल रंग का था। वह देखने में ऐसा था कि उसको देख कर किसी के भी मुॅह में पानी आ जाये।

लेकिन अच्छाइयों से वह सेब कोसों दूर था क्योंकि उस सेब की खासियत यह थी कि उसका लाल हिस्सा जहरीला था।

फिर उसने एक किसान की पत्नी का वेश बनाया, उस जहरीले सेब को साधारण सेबों के साथ अपनी टोकरी में रखा और एक बार फिर वह सातों पहाड़ियों को पार कर वह उन सातों बौनों के घर जा पहुॅची जहॉ राजकुमारी रहती थी और जा कर पहले की तरह उनकी झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

राजकुमारी ने खिड़की से झॉका और बोली — "मुझे न तो किसी को अन्दर बुलाने की इजाज़त है और न ही कोई चीज़ खरीदने की। सातों बौनों ने मुझे मना किया है।"

किसान की पत्नी ने कहा — "कोई बात नहीं बेटी। मुझे अपने सेब बेचने में कोई परेशानी नहीं है वह तो मैं कहीं और भी बेच लूँगी पर यह देखो, यह सुन्दर सेब मैं खास तुम्हारे लिये लायी हूँ और तुम्हें मुफ्त में देने को तैयार हूँ।"

"नही नहीं, मुझे अजनबियों से भी कोई चीज़ लेने की इजाज़त नहीं है।"

"ऐसा लगता है कि तुम डर रही हो। क्या जहर से? देखो, यह मैंने इस सेब को काट दिया और यह कोई नुकसान भी नहीं करेगा। इसका यह सफेद आधा हिस्सा मैं खाती हूँ और यह लाल मीठा हिस्सा तुम खा लो।"

यह सब देख कर राजकुमारी के मुँह में पानी भर आया और वह देर तक इन्तजार न कर सकी। उसने अपना नन्हा हाथ खिड़की से बाहर निकाला और उस सेब का वह लाल हिस्सा उस किसान की पत्नी से ले कर जैसे ही खाया वैसे ही वह फर्श पर गिर पड़ी।

नफरत भरी एक नजर राजकुमारी पर डाल कर रानी ज़ोर से बोली — "बर्फ के समान सफेद, खून के समान लाल और आबनूस

की लकड़ी के समान काले बालों वाली लड़की, अब देखती हूँ कि बौने तुझे कैसे बचाते हैं।"

रानी को अब खुशी के मारे घर पहुँचना मुश्किल हो गया। घर पहुँचते ही उसने शीशे से फिर पूछा — "क्यों शीशे, अब बता दुनियाँ में सबसे सुन्दर कौन है?"

और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने सुना — "ओ रानी, दुनियाँ में तू ही सबसे सुन्दर है।" अब रानी के दिल दिमाग में शान्ति थी।

रानी के जाने के बाद जब वे सातों बौने घर लौटे तो उन्होंने देखा कि घर में कहीं रोशनी नहीं थी। न चिमनी से धुँआ उठ रहा था, न लैम्प जलाये गये थे और न मेज पर खाना था। सफेद राजकुमारी फर्श पर पड़ी थी और उसकी साँस भी नहीं चल रही थी।

उन्होंने सोचा कि हमें इसे जरूर बचाना चाहिये। उन्होंने अपनी अपनी मोमबत्तियाँ जलायीं और कोई भी जहरीली चीज़ ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उनको कहीं भी कुछ भी नहीं मिला।

उन्होंने उसकी पोशाक ढीली की, बालों में हाथ फेरा, चेहरा धोया, पर कुछ नहीं हुआ। वह बेचारी बच्ची न हिली, न बोली और ना ही उसने अपनी आँखें खोलीं।

सब बौने दुखी थे। "क्या करें? हम जो कुछ कर सकते थे वह हमने सभी कुछ कर के देख लिया। लगता है राजकुमारी तो अब हमेशा के लिये हमारे हाथ से गयी।"

और फिर सब बौनों ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। वे लोग पूरे तीन दिन तक रोते रहे और जब वे चुप हुए तब भी राजकुमारी बिना हिले डुले पड़ी हुई थी। लेकिन वह अभी भी ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे कि अभी अभी सोयी हो।

बौनों ने आपस में कहा — "यह तो अभी भी उतनी ही सुन्दर दिखायी दे रही है जितनी पहले दिखायी देती थी। पर क्योंकि हम उसे जगा नहीं सके इसलिये हमें इसकी देखभाल ठीक से करनी चाहिये।"

सो उन्होंने उसका शरीर रखने के लिये शीशे का एक बक्सा बनवाया जिस पर लिखा था "सफेद राजकुमारी"।

उस बक्से में उन्होंने राजकुमारी को रखा और उस बक्से को पहाड़ों की उन सातों चोटियों में से एक चोटी पर ले गये जहॉ वे खुदायी करते थे। वहॉ उन्होंने वह बक्सा पेड़ों और फूलों के पास रख दिया।

वहॉ तीन पक्षी भी उसके मरने पर शोक प्रगट करने पर आये — पहले एक उल्लू आया, फिर एक कौआ आया और फिर एक छोटी फाख्ता आयी।

अब रोज छह बौने ही खुदायी के लिये जाते थे क्योंकि एक बौना बारी बारी से राजकुमारी की देखभाल के लिये वहॉ रहता था। हफ्ते, महीने, साल बीत गये पर राजकुमारी उसी बक्से में लेटी रही। न हिली, न डुली और न उसने ऑखें ही खोलीं।

उसका चेहरा पहले की तरह सफेद था। उसके गाल अभी भी लाल थे। जहॉ उसका ताबूत रखा था फूल वहॉ खूब तेज़ी से उग रहे थे, बादल भी खूब उड़ रहे थे और चिड़ियॉ भी वहॉ आ कर खूब गातीं थीं। जंगली जानवर पालतू हो गये थे और वहॉ आश्चर्य से खड़े रह कर उसको घंटों देखते रहते थे।

इन सबके साथ साथ वहॉ एक और जीव भी आया। वह भी उसको आश्चर्य से खड़ा देखता रह गया। पर वह न तो चिड़िया थी, न खरगोश, और न हिरन, बल्कि वह तो एक छोटा राजकुमार था जो उन सात पहाड़ियों पर रास्ता भूल गया था।

उसने जब इस राजकुमारी को देखा तो बस देखता ही रह गया। उसने बौनों से कहा — "आप मुझे यह शीशे का बक्सा घर ले जाने दें और इसके बदले में आप मुझसे जितना सोना चाहें ले लें।"

लेकिन बौनों ने कहा — "हम संसार की दौलत ले कर भी इसे किसी को नहीं दे सकते।"

राजकुमार ऑखों में ऑसू भर कर बोला — "अगर आप दौलत नहीं लेना चाहते तो न लें पर आप दयावान हैं कम से कम इसी लिये आप इसे मुझे दे दें।

जाने क्यों मेरा मन इसी की तरफ खिंचा जा रहा है। अगर आप मुझे इसे घर ले जाने देंगे तो मैं इसकी अपने खजाने की तरह देखभाल करूँगा।"

यह सुन कर बौनों ने वह बक्सा उसे दे दिया। राजकुमार ने उनको धन्यवाद दिया और अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बक्से को कन्धे पर उठा कर ले जाने के लिये कहा। सो वे उस बक्से को अपने कन्धों पर उठा कर ले चले।

बहुत सावधानी बर्तने के बावजूद एक पहाड़ी पर एक आदमी का पैर फिसल गया। इससे वह बक्सा पूरी तरह हिल गया और राजकुमारी के गले में से उस जहरीले सेब का टुकड़ा बाहर आ गया। और यह लो वह राजकुमारी तो जाग गयी।

सबने मिल कर वह बक्सा खोला। राजकुमारी को अपने आपको वहॉ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

राजकुमार दौड़ा आया और बक्से में से उसे निकाला। राजकुमार ने फिर उसे सारा हाल बताया कि कैसे वह उसको वहॉ से अपने घर ले कर जा रहा था और उससे प्रार्थना की कि वह उससे शादी कर ले। राजकुमारी ने हॉ कर दी।

उधर रानी को एक शादी में आने का बुलावा मिला। वह अपने सबसे अच्छे कपड़ों में तैयार हुई और जाने से पहले अपने उसी जादुई शीशे के पास अचानक जा कर खड़ी हो गयी और बोली — "ओ शीशे, बता दुनियॉ में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने कहा — "ओ रानी, तुम सबसे सुन्दर हो पर सफेद राजकुमारी अभी भी ज़िन्दा है और शादी के लिये तैयार है। वही सबसे सुन्दर है।"

रानी ने सुना तो ताड़ गयी कि वह बुलावा राजकुमारी की शादी का ही था। वह फिर गुस्से से लाल पीली हो गयी पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी।

राजकुमार और राजकुमारी की शादी हो गयी और वे दोनों और सातों बौने बहुत समय तक आनन्द से रहे।

4 रम्पिलस्टिल्टस्किन[18]

एक बार की बात है कि रूस के किसी हिस्से में एक गरीब आदमी रहता था जो लोगों का आटा पीस कर अपना और अपनी सुन्दर एकलौती बेटी का पेट भरता था।

एक दिन उस राज्य के राजा ने उसे बुला भेजा। जब वह गरीब आदमी राजा के दरबार में आया तो वह डर के मारे थर थर कॉप रहा था। बजाय चुप रहने के घबराहट में उसके मुॅह से निकला — "मेरे एक बेटी है जो भूसे को सोने के तारों में कात सकती है।"

"अच्छा? अगर तुम जैसा कह रहे हो वह सच है तो तुम्हारी बेटी तो बड़ी ही होशियार और चतुर है। तुम उसे कल हमारे दरबार में ले कर आओ हम भी उसे देखना चाहेंगे।" राजा ने कहा।

अगले दिन वह आदमी अपनी बेटी के साथ राजा के दरबार में हाजिर हुआ।

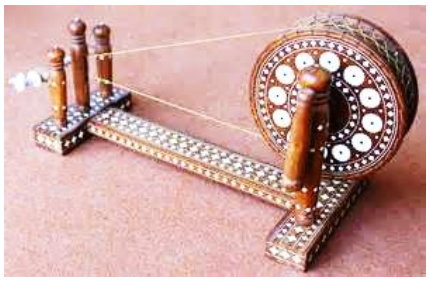

राजा उस लड़की को एक कमरे में ले गया जो भूसे से भरा हुआ था। उस कमरे में भूसे के अलावा बैठने के लिये एक चौकी, भूसा कातने के लिये एक चरखा और धागा लपेटने के लिये कुछ लकड़ी की रीलें रखीं थीं।

[18] Rumpelstiltskin – a folktale from Russia, Asia.

राजा ने उस लड़की से कहा — "अब तुम अपना काम शुरू कर दो। अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगें।" ऐसा कह कर राजा ने कमरे का ताला लगा दिया और चला गया।

वह लड़की चौकी पर बैठ गयी और उस भूसे को देखने लगी। वह उसे सोने में कैसे काते, वह नहीं जानती थी। सुबह का ख्याल आते ही वह और भी अधिक डर गयी। उसे और तो कुछ नहीं सूझा बस वह अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा कर रोने लगी।

इतने में एक आश्चर्यजनक घटना घटी। अचानक ही बन्द कमरे का दरवाजा खुला और एक अजीब सी बनावट का छोटा सा आदमी उस कमरे में आया।

ऐसा आदमी उसने अपने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। उस आदमी ने आते ही कहा — "नमस्ते, तुम इतनी देर से क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या दुख है?"

लड़की ने कहा — "क्या बताऊँ मुझे क्या दुख है। मुझे यह सारा भूसा सोने के तारों में कातना है और मुझे यह काम आता नहीं है।"

उस आदमी ने कहा — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली — "मेरे गले में जो यह माला पड़ी है यह मैं तुम्हें दे दूँगी।" उस आदमी ने वह माला ले ली और चरखे के सामने बैठ गया।

घर्र घर्र घर्र, चरखे के तीन बार घुमाने में ही एक रील सोने के तार से भर गयी। घर्र घर्र घर्र, और चरखे के तीन बार दोबारा घुमाने में ही दूसरी रील भी भर गयी।

रात भर वह आदमी इसी तरह से घर्र घर्र करता रहा और सुबह होने से पहले सारा भूसा उन रीलों पर सोने के तारों के रूप में लिपट चुका था। इस तरह सारा भूसा कात कर सुबह होने से पहले ही वह आदमी वहाँ से गायब हो गया।

सुबह को जब राजा आया तो वह इतना सारा सोना देख कर बजाय खुश होने के आश्चर्यचकित ज़्यादा हुआ। लेकिन वह इतने सोने से ही सन्तुष्ट नहीं था। सोने की झलक ने उसको और ज़्यादा लालची बना दिया था।

अब वह उस लड़की को एक दूसरे कमरे में ले गया जो पहले कमरे से भी बड़ा था और भूसे से भरा हुआ था। राजा ने उस लड़की से फिर वही कहा — "अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगे।"

एक बार फिर वह लड़की उस भूसे से भरे कमरे में अकेली रह गयी। वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

पल भर में ही दरवाजा खुला और वही अजीब सा छोटा आदमी फिर अन्दर आया। उसने फिर पूछा — "अगर मैं तुम्हारे इस भूसे को सोने में कात दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने कहा — "अब मेरे पास यह अँगूठी है। तुम यह ले लेना।"

उस आदमी ने वह अँगूठी उसके हाथ से उतार ली और चरखे के सामने बैठ गया। घर्र घर्र घर्र, रात भर में उसने वह सारा भूसा कात कर सोने के तारों में बदल दिया और पहले की तरह सुबह होने से पहले ही गायब हो गया।

सुबह होते ही जब राजा आया तो वह उस सोने को देख कर बहुत खुश हुआ परन्तु अभी भी वह उतने सोने से सन्तुष्ट नहीं था।

वह उस लड़की को एक तीसरे कमरे में ले गया जो पहले दो कमरों से कहीं ज़्यादा बड़ा था और पूरे का पूरा भूसे से भरा हुआ था। इस बार उसने उस लड़की से कहा — "इस भूसे को अगर तुम सुबह तक सोने में बदल दो तो तुम मेरी रानी बन जाओगी।"

जब वह लड़की कमरे में अकेली रह गयी तो वह फिर बड़े ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। एक बार फिर वह छोटा आदमी फिर अन्दर आया और बोला — "अबकी बार तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं तुम्हारा यह सारा भूसा सोने में कात दूँ?"

लड़की सिसकियाँ भरते हुए बोली — "अब तो मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"अच्छा, तो वायदा करो कि जब तुम रानी बन जाओगी तो अपना पहला बच्चा मुझे दे दोगी।"

"न तो मैं रानी बनूँगी न मेरे बच्चा होगा" यही सोच कर उसने उस आदमी से वायदा कर लिया कि वह रानी बनने के बाद अपना पहला बच्चा उसको दे देगी।

हर बार की तरह इस बार भी उस छोटे आदमी ने सारा भूसा फिर से सोने के तारों में कात दिया और सुबह होने से पहले ही चला गया।

जब राजा सुबह आया तो इतने सारे सोने को देख कर फूला न समाया। उसने सोचा कि लड़की सुन्दर है और उसने उसे धन भी बहुत दिया है सो उसने अपना वायदा निभाते हुए उससे शादी कर ली।

अब वह लड़की रानी बन गयी थी सो वह बहुत खुश थी और उस आदमी के बारे में सब कुछ भूल चुकी थी जिसने उसे सोना कात कर रानी बनाया था। एक साल बाद रानी के एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया। रानी और राजा फूले न समाये।

कुछ दिनों बाद वह अजीब आदमी अचानक ही रानी के कमरे में आया और बोला — "अपना वायदा पूरा करो और यह बच्चा मुझे दे दो।" रानी ने डर के मारे अपने बच्चे को अपनी छाती से चिपटा लिया।

रानी ने अपने बच्चे के बदले में उसे राज्य का सारा खजाना देने को कहा परन्तु उस आदमी ने साफ मना कर दिया और बोला — "मुझे तो खजाने के बदले में आदमी का बच्चा ज़्यादा पसन्द है।"

इस बात को सुन कर रानी बहुत रोयी, बहुत चिल्लायी। उसका रोना चिल्लाना सुन कर उस आदमी को उस लड़की पर दया आ गयी।

उसने कहा — "ठीक है, मैं तुमको तीन दिन का समय देता हूँ, अगर तुमने मेरा नाम बता दिया तो यह बच्चा तुम्हारे ही पास रहेगा नहीं तो फिर इसे मैं ले जाऊँगा।" और यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

उस रात रानी उन सब नामों को याद करती रही जो उसने कभी सुने थे। सुबह रानी ने एक आदमी बुलवाया और उससे देश के सभी लड़कों के नाम इकट्ठे करने को कहा।

जब वह छोटा आदमी अगले दिन आया तो उस लड़की ने नामों की एक लम्बी लिस्ट पढ़ दी पर उस आदमी का नाम उस लिस्ट में कहीं नहीं था।

अगले दिन फिर रानी ने उस आदमी को दूसरे देश में लड़कों के नाम मालूम करने भेजा। वह शाम तक फिर एक लम्बी लिस्ट ले कर आ गया।

शाम को जब वह छोटा आदमी आया तो रानी ने वे सब नाम उसको बताये जो कि उसकी लिस्ट में थे कि उस लिस्ट में उसका

नाम था या नहीं पर उस लिस्ट में भी उसका नाम नहीं था। रानी बहुत निराश हुई।

तीसरा दिन आखिरी दिन था। अगर आज रानी उस छोटे आदमी का नाम मालूम नहीं कर पायी तो वह छोटा आदमी उसके बच्चे को ले जायेगा। दिन भर रानी बहुत परेशान रही और अपने भेजे आदमी के वापस आने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करती रही।

उस दिन रानी का आदमी बहुत देर से लौटा और बोला — "आज मुझे कोई और नया नाम तो मालूम नहीं पड़ा रानी जी परन्तु जब मैं जंगल के किनारे एक ऊँचे पहाड़ से आ रहा था तो वहाँ मैंने एक घर देखा।

उस घर के सामने आग जल रही थी और उस आग के चारों तरफ एक अजीब सा छोटा सा आदमी नाच रहा था और गा रहा था — "आज मैं रोटी बना रहा हूँ। कल मैं रानी का बच्चा ले लूँगा। मेरा नाम वह कभी नहीं जान पायेगी इसलिये वह शर्त जीत भी नहीं पायेगी क्योंकि मेरा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन[19] है।"

रानी बहुत खुश हुई। जब वह छोटा आदमी आया तो उसने ऐसा बहाना किया जैसे वह उसका नाम जानती ही न हो। कई नाम लेने के बाद उसने कहा रम्पिलस्टिल्टस्किन।

[19] Rumpelstiltskin

अपना नाम सुन कर वह आदमी बहुत गुस्सा हुआ और गुस्से में भर कर उसने अपना पैर फर्श पर दे मारा। इससे उसका पैर फर्श में धॅस गया।

इस पर वह और भी अधिक गुस्सा हुआ और किसी तरह अपना पैर फर्श से निकाल कर वहॉ से भागता नजर आया और फिर उसको कभी किसी ने नहीं देखा।

इसके बाद रानी अपने बच्चे के साथ निडर हो कर रही।

5 सातवीं राजकुमारी[20]

बच्चो, क्या तुमने कभी कोई ऐसी भी कहानी सुनी है जिसमें केवल कोई अपने बालों के लिये ही जीता हो। तो लो पढ़ो यह कहानी। यह कहानी उन छह राजकुमारियों की है जो केवल अपने बालों के लिये ही जीती थीं।

एक बार रूस देश में एक राजा था। उसने एक जिप्सी लड़की से शादी की। वह अपनी रानी को बहुत प्यार करता था और उसको इतनी अधिक सॅभाल कर रखता था मानो वह शीशे की बनी हो।

उसके भाग जाने के डर से उसने रानी को एक ऐसे महल में रखा हुआ था जो बहुत बड़े बागीचे में बना था और उस बागीचे के चारों तरफ ऊॅची ऊॅची रेलिंग लगी थी।

रानी ने कई बार राजा से प्यार से कहा कि वह उस रेलिंग के बाहर जाना चाहती है परन्तु राजा नहीं माना।

वह घन्टों अपने महल की छत पर बैठी रेलिंग के उस पार देखती रहती। उसके पूर्व में घास के बड़े बड़े मैदान थे, पश्चिम में ऊॅची ऊॅची पहाड़ियॉ थीं, उसके उत्तर में भीड़ भाड़ वाला बाजार था

[20] The Seventh Princess – a folktale from Russia, Asia

और दक्षिण में कल कल करती नदी। बस इन्हीं को देख कर वह अपना मन बहलाया करती थी।

कुछ समय बाद उसके दो जुड़वॉ बेटियॉ हुई। जिस दिन उनका नाम रखा जाना था राजा रानी के पास आया और उससे कोई भेंट मॉगने के लिये कहा। रानी ने अपनी छत से पूर्व की तरफ देखा और बोली "मुझे वसन्त चाहिये।"

राजा ने तुरन्त पचास हजार मालियों को बुलाया और सबको अलग अलग प्रकार के फूलों के पौधे लाने का तथा उनको रेलिंग के भीतर लगाने का हुक्म सुना दिया।

जब यह सब हो गया तो एक दिन राजा रानी के साथ उस फूलों के बगीचे में गया और रानी से बोला — 'प्रिये, देखो यह वसन्त तुम्हारे लिये है।" और रानी एक आह भर कर रह गयी।

अगले साल रानी ने फिर दो जुड़वॉ बेटियों को जन्म दिया, और एक बार फिर उनके नाम रखने के दिन राजा रानी के पास आया और उससे कोई भेंट मॉगने के लिये कहा।

इस बार रानी ने अपनी छत के दक्षिण की तरफ देखा और चमकीले नीले पानी को देख कर बोली "मुझे नदी चाहिये।"

राजा ने तुरन्त ही पचास हजार मजदूर बुलवाये और उन्हें बागीचे में एक नदी और उसमें सुन्दर सा फव्वारा लगाने के लिये हुक्म दे दिया। जब वह सब बन गया तो राजा एक दिन अपनी रानी के साथ उस फव्वारे के पास गया।

फव्वारे से पानी निकल निकल कर संगमरमर के बने एक गोले में गिर रहा था। राजा बोला — "देखो प्रिये, यह नदी तुम्हारे लिये है।" लेकिन रानी केवल उठते गिरते पानी को ही देखती रह गयी, बोल कुछ भी न सकी।

अगले साल रानी ने फिर दो जुड़वॉ लड़कियों को जन्म दिया, और एक बार फिर उनके नाम रखने के दिन राजा रानी के पास आया और उससे कोई भेंट मॉगने के लिये कहा।

इस बार रानी ने अपनी छत के उत्तर की तरफ भीड़ भाड़ वाला शहर देखा और बोली "मुझे लोग चाहिये।"

राजा ने तुरन्त पचास हजार बाजा बजाने वाले शहर में रवाना कर दिये। कुछ देर बाद वे छह बहुत ही ईमानदार स्त्रियॉ ले कर लौटे। राजा ने रानी से कहा — "यह लो तुम्हारे लिये आदमी मौजूद हैं।"

रानी ने चुपके से अपने ऑसू पोंछे और अपनी छहों बेटियों को जो उगते हुए सूर्य की तरह लाल, सुबह की तरह मन को प्यारी लगने वाली, और दोपहर की तरह चमकीली थीं उन छहों स्त्रियों को दे दिया ताकि हर एक राजकुमारी को उसकी एक आया मिल सके।

अगले साल रानी ने केवल एक लड़की को जन्म दिया जो रानी की तरह सॉवली सलोनी थी, जबकि राजा खूब लम्बा और गोरा था।

उसके नाम रखने वाले दिन भी राजा ने रानी से कोई भेंट माँगने के लिये कहा। रानी ने अबकी बार पश्चिम की तरफ देखा तो उधर से एक जंगली कबूतर और छह हंस उड़ कर आ रहे थे। रानी उनको देख कर तुरन्त बोल पड़ी "मुझे पक्षी चाहिये।"

राजा ने तुरन्त पचास हजार पक्षी पकड़ने वालों को भेज दिया। उनके जाने के बाद रानी ने राजा से कहा — 'प्रिय, अभी मेरे बच्चे पालनों में हैं और मैं रानी हूँ पर कुछ समय बाद ये पालने खाली हो जायेंगे और मैं भी रानी नहीं रहूँगी तब मेरी सातों लड़कियों में से कौन सी लड़की रानी बनेगी?"

राजा के जवाब देने से पहले ही वे पक्षी पकड़ने वाले आ गये। राजा ने उन पक्षियों को देखा और बोला — "रानी, जिस राजकुमारी के बाल सबसे अधिक लम्बे होंगे वही रानी होगी।"

रानी ने अपनी छहों आयाओं को बुलाया और राजा का आदेश सुना कर बोली — "इसलिये याद रखो, मेरी लड़कियों के बालों की रोज ठीक से सार सँभाल करना क्योंकि तुम्हारा आने वाला कल भी कल की होने वाली रानी पर निर्भर है।"

उन्होंने पूछा — "सातवीं राजकुमारी के बालों की देखभाल कौन करेगा।"

रानी ने कहा — "उसके बालों की देखभाल मैं खुद करूँगी।"

अब क्या था हर आया में होड़ लग गयी। सभी आया यह चाहती थीं कि उसकी अपनी राजकुमारी रानी बननी चाहिये।

रोज वे उनको फूलों के बगीचे में ले जातीं, फव्वारे के पानी से उनके बालों को धोतीं और धूप में सुखातीं। फिर वे उनको कंघी करतीं और तब तक करती रहतीं जब तक कि वे पीले रेशम की तरह से नहीं चमकने लगते। फिर वे उनकी चोटियॉ बनातीं, उनमें रिबन लगातीं और फूल गूँधतीं।

तुमने उन राजकुमारियों जैसे सुन्दर बाल कभी किसी के नहीं देखे होंगे और न ही किसी आया को किसी के बालों पर इतनी मेहनत करते देखा होगा। जहॉ भी वे छहों राजकुमारियॉ जातीं छह हंस भी उनके साथ ही जाते।

लेकिन सातवीं राजकुमारी ने कभी अपने बाल फव्वारे के पानी से नहीं धोये। वह अपने बालों को हमेशा लाल रूमाल से बॉध कर और ढक कर रखती थी। उसके साथ एक कबूतर रहता था।

यह सब वह छिपा कर तब करती जब उसकी बहिनें छत पर अपने हंसों से खेल रही होतीं।

आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब रानी का आखिरी समय आया। उसने अपनी सब लड़कियों को बुलाया। एक एक कर के सबको आशीर्वाद दिया और राजा से छत पर चलने की प्रार्थना की।

राजा उसको छत पर ले गया वहॉ रानी ने चारों तरफ देख कर अपनी ऑखें हमेशा के लिये बन्द कर लीं।

राजा के ऑसू अभी सूखे भी न थे कि एक दिन शहर के दरवाजे पर बाजों की आवाज आयी और दरबान कहने आया कि

दुनियॉ का राजकुमार आया है। राजा ने उसके स्वागत में शहर के दरवाजे खोल दिये। दुनियॉ का राजकुमार अपने नौकरों के साथ शहर के अन्दर आया।

राजकुमार ऊपर से ले कर नीचे तक सुनहरे कपड़ों से ढका था। उसकी टोपी की ऊॅचाई राजा के कमरे की ऊॅचाई के बराबर थी। राजकुमार के आगे आगे चिथड़ों में लिपटा एक नौजवान चला आ रहा था।

राजा ने कहा — "आपका स्वागत है राजकुमार।" मगर राजकुमार कुछ न बोला, उसका मुॅह बन्द था और ऑखें झुकी हुई थीं।

लेकिन चिथड़ों में लिपटे उस नौजवान ने जवाब दिया "धन्यवाद" और राजा का हाथ प्रेम से पकड़ लिया। राजा को इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ, वह बोला — "क्या बात है? क्या राजकुमार खुद नहीं बोल सकते?"

उस चिथड़े में लिपटे नौजवान ने जवाब दिया — "नहीं, उनको कभी किसी ने बोलते नहीं सुना। राजा साहब, संसार में सभी तरह के लोग होते हैं, बोलने वाले भी और न बोलने वाले भी, अमीर भी और गरीब भी, सोचने वाले भी और करने वाले भी, ऊपर देखने वाले भी और नीचे देखने वाले भी।

मेरे मालिक ने मुझे अपना नौकर रखा है क्योंकि वह अमीर हैं और मैं गरीब हूॅ। वह सोचते हैं और मैं करता हूॅ। वह चुप हैं तो मैं बोल सकता हूॅ।"

राजा ने पूछा — "ये यहॉ क्यों आये हैं?"

नौकर ने कहा — "ये यहॉ आपकी बेटी से शादी करने आये हैं क्योंकि संसार चलाने के लिये एक स्त्री की जरूरत तो होती है न।"

राजा ने कहा — "हॉ यह तो है पर मेरे सात लड़कियॉ हैं। वह सबसे तो शादी नहीं कर सकते।"

नौकर ने कहा — "ये होने वाली रानी से शादी करेंगे।"

राजा ने कहा — "मैं अपनी सातों लड़कियों को बुलवाता हूॅ। अब उनके बाल नापने का समय आ गया है।"

सातों राजकुमारियों को बुलवाया गया। उनमें से छहों बड़ी गोरी लड़कियॉ तो अपनी अपनी आयाओं के साथ थीं पर छोटी सॉवली लड़की अकेली ही अन्दर आयी।

नौकर ने तुरन्त ही सबको देख लिया परन्तु राजकुमार की ऑखें नीची ही रही उसने किसी को नहीं देखा। राजा ने छहों राजकुमारियों के बाल नपवाये तो सबके बाल बराबर ही निकले।

राजा बोला — "अगर मेरी सातवीं बेटी के बाल भी इतने ही लम्बे निकले तो फिर मैं क्या करूॅगा?"

सातवीं राजकुमारी बोली — "ऐसा नहीं होगा पिता जी।" ऐसा कह कर उसने अपने सिर पर बॅधा अपना लाल रूमाल खोल दिया।

उसके बालों की लम्बाई उसकी बहिनों को बालों जितनी नहीं थी क्योंकि उसके बाल लड़कों के बालों की तरह कटे हुए थे।

राजा ने पूछा — "अरे, तुम्हारे बाल किसने काटे?"

"मेरी मॉ ने पिता जी। वह रोज मेरे बालों को कैंची से काट देती थी।"

राजा चिल्लाया — "अब कोई भी रानी बने पर तुम रानी नहीं बनोगी।"

सो यह उन छह राजकुमारियों की कहानी है जो केवल बालों के लिये ज़िन्दा थीं।

उन राजकुमारियों में से कोई भी राजकुमारी उस राजकुमार की रानी नहीं बनी क्योंकि सभी के बाल एक जैसे लम्बे थे। बाकी की ज़िन्दगी भी उन्होंने अपने बालों की देखभाल में बिता दी जब तक कि उनके बाल बिल्कुल सफेद नहीं हो गये।

और दुनियॉ का वह राजकुमार भी उनका तब तक इन्तजार करता रहा जब तक कि किसी के बाल इतने लम्बे न हो जायें जब तक कि उनमें से कोई रानी बनने के लायक न हो जाये।

लेकिन सातवीं राजकुमारी ने अपना लाल रूमाल फिर से बॉधा और मैदान, नदियों, बाजारों तथा पहाड़ियों की तरफ भाग गयी, और उसका कबूतर और राजकुमार का वह नौजवान नौकर भी उसके साथ ही चले गये।

उसने नौकर से पूछा — "लेकिन राजकुमार तुम्हारे बिना कैसे रहेगा?"

उसने जवाब दिया — "जैसा वह चाहेगा वह वैसा ही करेगा क्योंकि दुनियॉ में तरह तरह के लोग हैं कुछ लोग अन्दर रहते हैं और कुछ बाहर।"

6 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा[21]

रूस की यह कहानी एक बहुत ही मशहूर कहानी है। लो पढ़ो यह कहानी अब तुम हिन्दी में।

एक बार एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया पत्नी अपनी बेटी वासिलीसा[22] के साथ रहते थे। एक बार वह बुढ़िया बहुत बीमार पड़ी तो एक दिन उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "बेटी मैं बहुत जल्दी ही मरने वाली हूँ इसलिये जो मैं कहती हूँ तू उसको ध्यान से सुन।"

इसके बाद उसने अपनी चादर के नीचे से एक छोटी सी गुड़िया निकाली और उसे वासिलीसा को देते हुए कहा — "देख तू इस गुड़िया को रख और इसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करना और किसी और को इसके बारे में बताना नहीं।

जब तुझे किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो इस गुड़िया को कुछ खाना देना और उससे सलाह मॉगना। यह तुझे बतायेगी कि तुझे क्या करना है।"

इसके बाद मॉ ने अपनी बेटी को प्यार से चूमा और ऑखें बन्द कर ली। उसने अपनी आखिरी सॉस ले ली थी।

---

[21] Vasilissa the Wise and Baba Yaga – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[22] Vasilissa

काफी समय तक तो बूढ़े ने अपनी पत्नी का दुख मनाया पर फिर दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी एक विधवा थी और उसकी अपनी दो बेटियॉ थीं। उसकी दोनों बेटियॉ बहुत ही बुरी थीं। उनको खुश करना बहुत मुश्किल काम था।

वासिलीसा इतनी सुन्दर थी कि उसकी दोनों सौतेली बहिनें उससे बहुत जलती थीं। वे और उनकी मॉ तीनों उसको हमेशा ही सताती रहती थीं। वे उससे सुबह से शाम तक काम कराती रहती थीं और फिर भी उसको डॉटती रहती थीं।

वह हमेशा यह चाहती थीं कि हवा से उसका चेहरा खराब हो जाये या फिर धूप में सख्त हो जाये या फिर बारिश में काला पड़ जाये।

पर फिर भी वासिलीसा उन सबके ये ताने चुपचाप सहती रहती और अपना सारा काम समय पर पूरा कर लेती। उसकी सौतेली बहिनें क्योंकि कोई काम नहीं करती थीं वे बहुत मोटी और बदसूरत होती जा रही थीं जब कि वह दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे सुन्दर और सुन्दर होती जा रही थी।

उसकी गुड़िया उसकी जब तब बहुत सहायता करती। रोज सुबह वासिलीसा गाय का दूध दुहती और उस गुड़िया को देती और कहती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूॅ

और रात को जब सब सो जाते तो वह अपना दरवाजा बन्द कर लेती और गुड़िया को अपनी बॉहों में झुलाती। वह उसको अपने खाने में से बचा हुआ खाना खिलाती और फिर गाती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

फिर वह उस गुड़िया से कहती कि वह कितनी दुखी थी। कैसे उसकी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें उसको हमेशा डॉटती रहतीं। वह गुड़िया पहले तो खाती पीती फिर उसको तसल्ली देती और उसका रोज का काम भी करा देती।

जब वासिलीसा छाया में बैठ कर अपने बालों में फूल गूँथती तो वह गुड़िया उसकी फूलों की क्यारियॉ साफ कर देती। उसकी रसोईघर में आग जला देती। उसके घर के फर्श झाड़ बुहार देती। उसका नाश्ता बना देती। और वह भी सब पलक झपकते ही।

यही नहीं बल्कि वह गुड़िया उसको कुछ ऐसी पत्तियॉ भी देती जिनको लगाने से उसकी खाल सूरज की धूप, हवा और बारिश से बची रहे। इससे वह और ज़्यादा सुन्दर होती जा रही थी।

एक दिन पतझड़ के मौसम में वासिलीसा का पिता बाजार गया। उसको वहॉ कई दिन तक रहना था।

उस रात जब अँधेरा हो गया तो बहुत ज़ोर की बारिश पड़ने लगी। बारिश की बूंदें खिड़कियों पर ज़ोर ज़ोर से पड़ रही थी।

हवा भी बहुत तेज़ बह रही थी। वह हवा गुफाओं में जा कर बहुत तेज़ आवाज कर रही थी।

सौतेली मॉ ने तीनों लड़कियों को एक एक काम सौंपा। सबसे बड़ी वाली लड़की को उसने कढ़ाई का काम दिया। दूसरी बेटी को उसने मोजा बुनने का काम दिया और वासिलीसा को उसने सूत कातने का काम दिया।

जहॉ वे तीनों लड़कियॉ बैठी बैठी अपना काम कर रही थीं वहॉ उनकी मॉ ने कोने में केवल एक बिर्च के पेड़ की शाख जलती छोड़ दी और सोने चली गयी। कुछ देर तक तो वह शाख जली पर फिर अचानक वह बुझ गयी।

दोनों सौतेली बहिनें चिल्लायीं — "अब हम क्या करें। चारों तरफ तो ऍधेरा ही ऍधेरा है और हमको अपना काम खत्म करना है। किसी को तो रोशनी लानी ही पड़ेगी।"

सबसे बड़ी बेटी बोली — "मैं तो बाबा यागा के घर जा नहीं रही।"

दूसरी बेटी बोली — "मैं भी उसके घर नहीं जा रही।"

तो दोनों एक साथ बोलीं — "तब तो वासिलीसा को ही उसके घर जाना पड़ेगा और उसके घर से रोशनी लानी पड़ेगी।"

ऐसा कह कर उन दोनों ने अपनी सौतेली बहिन को बाबा यागा के घर से रोशनी लाने के लिये धक्का दे कर बाहर निकाल दिया।

बेचारी वासिलीसा पहले तो जानवरों के बाड़े में गयी वहाँ उसने कुछ खाने के टुकड़े अपनी गुड़िया को खिलाये और बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

और फिर उसने उसको बताया कि उसकी सौतेली बहिनों ने उसको बाबा यागा के घर जा कर रोशनी लाने को कहा है। वह चुड़ैल जादूगरनी तो उसको यकीनन खा ही जायेगी।

उस छोटी गुड़िया ने अपना खाना शान्ति से चुपचाप खाया। खाना खाने के बाद उसकी दोनों आँखें दो चमकीली जलती हुई मोमबत्ती की तरह से चमकने लगीं।

वह बोली — "डरो नहीं वासिलीसा। तुम मुझे अपने पास ही रखो और बेधड़क हो कर तुम बाबा यागा के पास जाओ। बाबा यागा तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती।"

वासिलीसा ने गुड़िया को अपनी जेब में रखा और अँधेरे जंगल की तरफ चल दी। वहाँ उसके चारों तरफ के पेड़ ऊँचे ऊँचे खड़े हो गये। अब आसमान में न तो चाँद और न ही तारे दिखायी दे रहे थे।

अचानक पता नहीं कहाँ से एक घुड़सवार वहाँ से गुजरा। उस घुड़सवार का मुँह बिल्कुल सफेद था। उसका शाल[23] भी सफेद था। उसका घोड़ा भी सफेद था और

[23] Translated for the word "Cloak". A fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.

उसकी लगाम भी सफेद थी जो अँधेरे जंगल में उजली उजली चमक रही थी।

जैसे ही वह वहाँ से वह गुजरा तो सुबह की रोशनी पेड़ों से छन छन कर आने लगी और वासिलीसा उस रोशनी में चलती चली गयी।

तभी एक दूसरा घुड़सवार अपना घोड़ा दौड़ाता आया। उसका चेहरा लाल था। उसका शाल भी लाल था। उसका घोड़ा भी लाल था और उसके घोड़े की लाल लगाम उस सुबह की रोशनी में लाली फैला रही थी।

जैसे ही वह लाल चेहरे वाला घुड़सवार वहाँ से गुजरा तो लाल लाल सूरज निकल आया और उसकी गर्म गर्म किरनें वासिलीसा के चेहरे को छूने लगीं। वे किरनें उसके बालों पर पड़ी ओस की बूँदों को सुखाने लगीं।

वासिलीसा बिना आराम किये जंगल में सारा दिन चलती रही। शाम तक चलते चलते वह जंगल में एक खुली जगह में आ गयी।

उस खुली जगह के बीच में मुर्गी के पंजों पर लकड़ी की एक झोंपड़ी खड़ी थी। उस झोंपड़ी के चारों तरफ एक चहारदीवारी लगी हुई थी जिस पर आदमियों की खोपड़ियाँ सजी हुई थीं।

उस चहारदीवारी में एक दरवाजा था जिसके डंडे एक मरे हुए आदमी की टाँगों के थे। उस दरवाजे के कुंडे मरे हुए आदमी की

बाँहों के थे और उस दरवाजे के ताले मरे हुए आदमी के दाँतों के थे।

इस सबको देख कर वासिलीसा तो वहाँ डर के मारे बिल्कुल ही बिना हिले डुले जमीन से चिपकी खड़ी रह गयी।

तभी एक तीसरा घुड़सवार वहाँ अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उसका चेहरा काला था। उसका शाल भी काला था। उसका घोड़ा भी काला था और उसके घोड़े की लगाम भी काली ही थी।

जैसे ही वह वहाँ आया तो वह अपने घोड़े से उतरा और उन खोपड़ियों की अँधेरी आँखें जो उस झोंपड़ी की चहारदीवारी पर लगी थीं आग की तरह चमकने लगीं। इससे वहाँ खुली जगह में दिन की तरह रोशनी हो गयी।

यह देख कर वासिलीसा काँपने लगी। इनको देख कर तो वह इतनी डर गयी कि हिल भी नहीं पा रही थी। पर इससे ज़्यादा बुरा हाल तो उसका अभी होने वाला था।

जल्दी ही उसने महसूस किया कि हवा काँप रही थी और उसके पैरों के नीचे जमीन हिल रही थी। बाबा यागा जंगल में अपनी ओखली में बैठी, उसको अपने मूसल से उड़ाती और झाड़ू से अपने पीछे के निशान मिटाती उड़ती चली आ रही थी।

झोंपड़ी के दरवाजे पर आ कर वह रुकी, और वहॉ उसने अपनी नुकीली नाक उस लड़की की तरफ कर के हवा में कुछ सूँघा और बोली — "फू फ़ी फ़ो फुम। मुझे एक रूसी के खून की खुशबू आ रही है। तुम कौन हो?"

लड़की बोली — "मैं वासिलीसा हूँ। मेरी बहिनों ने मुझे यहॉ रोशनी लाने के लिये भेजा है।"

वह जादूगरनी चिल्लायी — "आहा वासिलीसा। मैं तुम्हारी सौतेली मॉ को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। तो तुमको रोशनी चाहिये। इसके लिये तुमको यहॉ ठहर कर मेरे लिये पहले कुछ काम करना पड़ेगा। उसके बाद हम देखेंगे।" फिर वह अपने दरवाजे की तरफ मुड़ी और बोली —

ओ मेरे मजबूत कुंडे खुल जा, खुल जा मेरे चौड़े दरवाजे खुल जा

दरवाजा तुरन्त ही खुल गया। दरवाजा खुलते ही बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी अन्दर चली गयी। वासिलीसा उसके पीछे पीछे थी। जैसे ही दोनों उस दरवाजे के अन्दर घुसीं तो वह दरवाजा अपने आप फिर से वैसे ही कस कर बन्द हो गया।

अन्दर पहुँचते ही उस जादूगरनी का बागीचा था जिसमें एक बिर्च का पेड़[24] खड़ा हुआ था। वह बिर्च का पेड़ वासिलीसा की ऑखें निकालने के लिये नीचे की तरफ

[24] Birch tree is normally a tall tree. Its wood is very hard. See its picture above.

झुका तो जादूगरनी चिल्लायी — "उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

पेड़ ने उसको छोड़ दिया। वे आगे चले तो झोंपड़ी के दरवाजे पर एक बहुत ही भयानक कुत्ता लेटा हुआ था वह उस लड़की को देख कर उसको काटने दौड़ा।

जादूगरनी वहॉ भी चिल्लायी — "ओ कुत्ते, उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

यह सुन कर कुत्ते ने भी उसको छोड़ दिया। दोनों घर में अन्दर घुसीं तो अन्दर एक काली बिल्ली वासिलीसा को खरोंचने के लिये दौड़ी।

जादूगरनी उससे भी चिल्ला कर बोली — "छोड़ दे उसको, ओ बिल्ली। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

फिर वह वासिलीसा से बोली — "तुम देख रही हो न वासिलीसा? तुम मुझसे ऐसे ही नहीं बच सकतीं। मेरी बिल्ली तुमको खरोंच लेगी। मेरा कुत्ता तुमको काट लेगा। मेरा बिर्च का पेड़ तुम्हारी ऑखें निकाल लेगा और मेरा दरवाजा तो तुमको अन्दर ही नहीं आने देगा।"

अन्दर जा कर बाबा यागा पत्थर के बने एक चूल्हे पर जा कर लेट गयी और अपने रसोईघर से ही चिल्ला कर बोली — "आ ओ लड़की, मेरा खाना ले आ।"

तभी एक काली ऑखों वाली नौकरानी वहॉ खाना ले कर आयी। उसका वह खाना दस लोगों के खाने के बराबर था —

एक बालटी भर कर गाय का मॉस था
दस लोटे भर कर दूध था, एक भुना हुआ सूअर था
बीस मुर्गे थे और चालीस बतखें थीं
दो बैल के मॉस की पाई थीं और चीज़ थी
साइडर और घर की बनी शराब थी
एक बैरल बीयर थी और एक बालटी क्वास थी

बाबा यागा ने वह सब खाना बड़े लालची ढंग से खाया और वासिलीसा के खाने के लिये तो केवल हड्डियॉ ही बचीं। खाना खा कर जादूगरनी सोने चल दी।

चलते चलते वह वासिलीसा से बोली — "देखो यह अनाज का थैला ले जाओ और इसमें से अनाज के दाने बीन लो। इसके भूसे में अनाज का कोई दाना नहीं रहना चाहिये। जब तक मैं सो कर उठती हूँ तब तक तुम इस काम को खत्म कर लो नहीं तो मैं तुमको खा जाऊँगी।"

कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और खर्राटे मारने लगी। उसके खर्राटों की आवाज से आस पास की सब लकड़ियॉ भी हिलने लगीं।

बेचारी वासिलीसा ने डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया के सामने रखा और उसकी सलाह मॉगी।

गुड़िया ने चुपचाप वह डबल रोटी का टुकड़ा खाया और बोली — "तुम डरो मत। तुम अपनी प्रार्थना कहो और सोने जाओ। सुबह शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है।"

वासिलीसा यह सुन कर सोने चली गयी। जैसे ही वह लड़की सो गयी उस छोटी गुड़िया ने अपनी साफ आवाज में पुकारा —

कबूतरों चिड़ियों चैटफिन्च काइट[25] आज की रात तुम्हारे लिये बहुत काम है
ओ मेरी पंखों वाली दोस्तों तुम्हारे काम पर सुन्दर वासिलीसा की ज़िन्दगी निर्भर है।

गुड़िया की पुकार सुन कर बहुत सारी चिड़ियें झुंड में उड़ती हुई वहॉ आ गयीं – इतनी सारी चिड़ियें कि उन्हें ऑखें भी नहीं देख सकतीं थीं और उन्हें जबान भी गिन नहीं सकती थी।

उन सबने उस भूसे में से अनाज के सारे दाने बीन दिये। फिर उन्होंने उन दानों को थैले में भर दिया और भूसे को डिब्बे में डाल दिया। इस तरह उन्होंने रात खत्म होने से पहले पहले सारा काम खत्म कर दिया।

जैसे ही वे चिड़ियॉ अपना काम खत्म कर के चुकीं तो एक बार फिर से वह सफेद घोड़े वाला घुड़सवार आ कर गुजर गया और एक नयी सुबह हो गयी।

जब बाबा यागा सुबह सो कर उठी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हुआ कि उसका सारा काम खत्म हो चुका था।

[25] They all are different kinds of birds

बाबा यागा फिर बोली — "देखो मैं बाहर जा रही हूँ। तुम वह सफेद लोभिया[26] और पोस्त के बीजों[27] का थैला उठा लो और उनको अलग अलग कर लो। अगर यह काम मेरे लौटने तक नहीं हुआ तो मैं तुमको अपने शाम के खाने में भून कर खा जाऊँगी।"

यह कह कर उसने दरवाजा खोला और ज़ोर से सीटी बजायी। उसकी ओखली और मूसल तुरन्त ही वहाँ आ गये। वह अपनी ओखली के अन्दर बैठी और पल भर में ही अपने घर के कम्पाउंड में से बाहर निकल कर पेड़ों के ऊपर उड़ने लगी।

उसके जाने के बाद वह लाल रंग वाला घुड़सवार वहाँ आया और लाल रंग का सूरज आसमान में निकल आया।

वासिलीसा ने फिर डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया को खिलाया और उससे सहायता माँगी। जल्दी ही गुड़िया ने अपनी साफ आवाज में कहा —

मेरे पास आओ ओ घर और मैदान के चूहो
ये बीज चुन दो वरना यह बेचारी मर जायेगी

यह सुनते ही बहुत सारे चूहे दौड़ते हुए वहाँ आ गये – इतने सारे कि उन सबको न तो आँखें देख सकती थीं और न जबान बता

[26] Translated for the words "Black-eyed Peas". See its picture above.
[27] Translated for the words "Poppy Seeds".

सकती थी। उन्होंने दिन खत्म होने से पहले पहले ही अपना सारा काम खत्म कर दिया।

जब वे अपना काम खत्म कर रहे थे तभी काले रंग का एक घुड़सवार वहॉ से गुजरा और रात होने लगी। चहारदीवारी पर लगी हुई खोपड़ियों की ऑखें आग की तरह से जगमगाने लगीं, पेड़ सनसना कर हिलने लगे और उनकी पत्तियॉ हिलने लगीं।

बाबा यागा वापस आ रही थी। उसने पूछा — "क्या तुमने वह सब कर लिया जो मैं तुमसे कह कर गयी थी?"

"जी दादी मॉ। सब कर लिया।"

उसका सारा काम खत्म देख कर बाबा यागा तो बहुत गुस्सा हो गयी क्योंकि इसकी तो उसको बिल्कुल भी आशा नहीं थी पर वह कुछ कर भी नहीं सकती थी क्योंकि उसका सारा काम तो खत्म हो गया था।

वह बोली — "ठीक है तुम जा कर सो जाओ अब मैं खाना खाऊॅगी।"

वासिलीसा ऑगीठी के पीछे फटे कपड़ों पर लेट गयी। वह वहॉ लेटी लेटी बाबा यागा और काली ऑखों वाली नौकरानी की बातें सुनती रही।

बाबा यागा उससे कह रही थी — "ऑगीठी जलाओ और उसको खूब गर्म कर के खूब लाल कर लो। जब मैं सो कर उठूॅगी तो उस लड़की को अपनी ऑगीठी में भूनूॅगी।"

उसके बाद वह अँगीठी पर जा कर लेट गयी। उसने अपनी ठोड़ी एक आलमारी पर रख ली, अपनी नाक एक बैन्च पर रख दी और अपने आपको अपने पैर से ढक लिया। उसने इतनी ज़ोर से खर्राटे मारने शुरू कर दिये कि सारा जंगल हिलने लगा।

वासिलीसा यह सब सुन कर रोने लगी। उसने अपनी छोटी गुड़िया अपनी जेब से निकाली और उसके सामने डबल रोटी का एक टुकड़ा रख कर बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

गुड़िया ने उसको बताया कि उसको क्या करना है।

वासिलीसा रसोईघर में गयी और उस काली आँखों वाली नौकरानी के सामने सिर झुकाया और बोली — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। जब तुम अँगीठी जलाओ तो लकड़ी पर थोड़ा सा पानी डाल देना ताकि वे कम कम जलें। इस काम के लिये तुम मेरा यह सिर का स्कार्फ रख लो।"

नौकरानी बोली — "ठीक है वासिलीसा। मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। आज से पहले मुझे किसी ने कभी कोई भेंट नहीं दी है। मैं जा कर उस जादूगरनी के पैर सहलाती हूँ ताकि वह और देर तक सोये। इतनी देर में तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाना।"

वासिलीसा ने पूछा — "पर क्या वे तीनों घुड़सवार मुझे पकड़ कर यहॉ वापस नहीं ले आयेंगे?"

नौकरानी बोली — "ओह नहीं। देखो न वह जो सफेद रंग का घुड़सवार है वह सुबह है। वह जो लाल रंग का घुड़सवार है वह उगता हुआ सूरज है और वह जो काले रंग का घुड़सवार है वह रात है। वे तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।"

इस बात से सन्तुष्ट हो कर वासिलीसा झोंपड़ी से भाग ली पर वह बड़ी काली बिल्ली उसके ऊपर तुरन्त ही कूदी।

वह उसके चेहरे को खरोंच देती कि तभी उसने उस बिल्ली की तरफ एक पाई[28] फेंक दी। बिल्ली पाई खाने में लग गयी और वासिलीसा सीढ़ियॉ उतरने लगी।

नीचे उतरी तो बाबा यागा का कुत्ता बाहर निकला। वह उसे खा जाता अगर वह उसको हड्डी न फेंक देती तो।

अब वह घर से बाहर जाने वाले रास्ते पर भाग रही थी कि बिर्च के पेड़ ने अपनी शाखाओं से उसके चेहरे को मारने की कोशिश की पर तुरन्त ही उसने उनको अपने बालों के एक रिबन से बॉध दिया और पेड़ ने उसको बाहर जाने दिया।

[28] Pie is a baked stuffed sweet or savory dish – here it is pumpkin stuffed. It is stuffed between the layers of white flour flat bread dough. There are apple pie, strawberry pie, meat pie etc etc. See its picture above.

घर के बाहर जाने वाला दरवाजा बार बार खुलता और बन्द हो रहा था तो उसने उसके कब्जों[29] में सुबह की थोड़ी सी ओस लगा दी। दरवाजा खुल गया और वह उसके बाहर निकल गयी।

फिर उसको अपनी बहिनों के लिये रोशनी की याद आयी तो उसने चहारदीवारी पर से एक खोपड़ी उठायी, उसको एक डंडे पर लगाया और अपने घर की तरफ भाग ली।

उस खोपड़ी की ऑखों से निकलती हुई चमकती हुई रोशनी उसको उसके घर का रास्ता दिखा रही थी।

इस बीच बाबा यागा जाग गयी। उसने देखा कि लड़की तो भाग गयी। वह अपनी काली ऑखों वाली नौकरानी पर चिल्लायी — "तुमने उसको जाने ही क्यों दिया?"

नौकरानी बोली — "क्योंकि उसने मुझे अपना स्कार्फ दिया। मैंने तुम्हारी इतने दिनों सेवा की है पर तुमने मुझे सिवाय बुरा भला कहने के और कुछ नहीं दिया।"

फिर वह अपनी बड़ी काली बिल्ली की तरफ घूमी और उस पर चिल्लायी — "तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

बिल्ली बोली — "उसने मुझे पाई दी। मैं तुम्हारी इतने साल सेवा करती रही पर तुमने तो मुझे कभी डबल रोटी के ऊपर का टुकड़ा तक नहीं दिया।"

[29] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

तब वह जादूगरनी गुस्से में भर कर घर के बाहर भागी और अपने कुत्ते से बोली — "और तुम बताओ कि तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

"क्योंकि उसने मुझे हड्डी दी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की पर तुमने तो मुझे खाने के लिये हड्डी का कभी कोई छोटा सा टुकड़ा भी नहीं दिया।"

यह सुन कर जादूगरनी और बाहर की तरफ भागी और बिर्च के पेड़ से बोली — "ओ बिर्च के पेड़, क्या तुमने अपनी शाखाऐं उसके चेहरे पर नहीं मारीं?"

बिर्च का पेड़ बोला — "नहीं, मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने अपने बालों में से रिबन निकाल कर उससे मेरी शाखाऐं बॉध दी थीं। मैं यहॉ दस साल से खड़ा हूँ पर तुमने तो मेरी शाखाओं में कभी एक धागा भी नहीं बॉधा।"

अब तो बाबा यागा का गुस्सा बहुत ऊपर चढ़ गया। वह भागी भागी दरवाजे पर गयी और उस पर चिल्ला कर बोली — "दरवाजे, दरवाजे। क्या तुमने उसको नहीं रोका?"

दरवाजा बोला — "नहीं, मैंने उसको नहीं रोका। मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने मेरे कब्जों में ओस लगायी थी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की है पर तुमने तो उन पर कभी पानी भी नहीं छिड़का।"

बाबा यागा गुस्से में भर कर उड़ चली। उसने अपने कुत्ते और बिल्ली को पीटा, नौकरानी को कोड़े मारे, बिर्च के पेड़ को काटा और दरवाजे को तोड़ा।

पर यह सब करते करते वह इतना थक गयी कि वह उस लड़की के बारे में बिल्कुल ही भूल गयी।

इस बीच वासिलीसा उस खोपड़ी की रोशनी में अपने घर भाग गयी। अगले दिन सुबह सवेरे वह अपने घर पहुँची तो वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो तभी भी कोई रोशनी नहीं थी।

उसकी सौतेली माँ और बहिनें उसको दरवाजे पर ही मिल गयीं। वे तीनों उसके ऊपर एक साथ चिल्लायीं — "अरी तू तो किसी काम की नहीं, कहाँ रह गयी थी तू?"

और वह खोपड़ी उसके हाथ से छीनते हुए वे उसको घर के अन्दर ले गयीं। उसको घर के अन्दर ले जाते ही एक अजीब सी घटना घटी।

उस खोपड़ी की चमकती हुई आँखें वासिलीसा की सौतेली माँ और बहिनों के ऊपर जम गयीं और उनकी रोशनी उनके अन्दर घुसती चली गयी। उन्होंने अपने आपको बचाने की कितनी कोशिश की पर वे आँखें उनका पीछा करती ही रहीं।

इससे वे तीनों जलती रहीं, काली होती रहीं, जब तक कि वे पूरी की पूरी जल नहीं गयीं। केवल वासिलीसा ही बची रही।

अगली सुबह वासिलीसा ने वह खोपड़ी ली और उसको बागीचे में गाड़ दिया। कुछ समय बाद वहॉ गहरे लाल रंग के गुलाब का एक पेड़ उग आया।

उसी दिन वासिलीसा का पिता बाजार से घर वापस लौटा और वासिलीसा से सारी कहानी सुनी तो वह अपनी उस बुरी पत्नी और उसकी दोनों बिगड़ी हुई बेटियों से छुटकारा पा कर बहुत खुश हुआ।

उस दिन के बाद वासिलीसा और उसके पिता दोनों शान्ति से रहने लगे।

वासिलीसा उस गुड़िया को अभी भी अपनी जेब में रखती। क्या पता उसको कब उसकी जरूरत पड़ जाये।

7 बेवकूफ इवान और जादुई पाइक मछली[30]

एक बार की बात है कि रूस में एक जगह तीन भाई रहते थे। उनमें से दो भाई तो बहुत अक्लमन्द थे पर तीसरा भाई कुछ बेवकूफ सा था। इस तीसरे भाई का नाम था इवान[31]। इवान सारा दिन अँगीठी के पास बैठा बैठा अँगूठा चूसता रहता और सपने देखता रहता।

जाड़े के मौसम के एक दिन जब दोनों बड़े भाई बाजार जाने के लिये तैयार हो रहे थे तो उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि वे बाजार जा रहे हैं। उनके पीछे वह उनकी पत्नियों का कहना माने।

उन्होंने साथ में यह भी कहा — "अगर तुम ऐसा करोगे तो हम तुम्हारे लिये लाल रंग के जूते ला कर देंगे।"

यह सुन कर वह बेवकूफ मुस्कुराया और जा कर अँगीठी पर लेट गया। जब उसके भाई लोग चले गये तो उसके उन बड़े भाइयों की पत्नियों ने उससे कहा — "जाओ और ज़रा हमारे लिये नदी से पानी ला दो।"

बेवकूफ बोला — "बाहर बहुत ठंडा है। मैं पानी नहीं ला सकता।"

पत्नियों ने कहा — "अगर तुम नहीं जाओगे तो हम अपने पतियों से कह देंगी और फिर तुमको नये जूते नहीं मिलेंगे।"

---

[30] Ivan the Fool and the Magic Pike – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[31] Ivan – a name of a Russian man, name of the youngest brother

इवान कुछ भुनभुनाते हुए बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है। मैं अभी आपके लिये पानी लाने जाता हूँ।"

वह अँगीठी से नीचे उतरा, उसने अपना पुराना कोट पहना और दो बालटी और एक कुल्हाड़ी ले कर जमी हुई नदी की तरफ पानी लाने चल दिया।

वहाँ जा कर उसने जमी हुई नदी की बर्फ में एक छेद किया और उसमें से दो बालटी पानी निकाला और उनको ले कर घर चला।

उसने बस ऐसे ही पानी की तरफ एक निगाह डाली तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से एक बालटी में तो एक बहुत बड़ी मछली तैर रही थी – एक पाइक मछली[32]।

उस मछली को देख कर इवान को बहुत खुशी हुई। वह बोला — "वाह मेरी कितनी अच्छी किस्मत है। आज रात तो मैं खाने में इस मछली का सूप खाऊँगा।"

पर तभी एक दूसरे आश्चर्य ने उसको आश्चर्य में डाल दिया। वह मछली आदमी की आवाज में बोली — "मुझे जाने दो इवान, मुझे जाने दो। मैं एक दिन तुमको इसका बदला जरूर दूँगी।"

बेवकूफ इवान हँस पड़ा — "तुम मेरे लिये क्या अच्छा काम कर सकती हो? इससे अच्छा तो यह है कि मैं तुमको घर ले जाऊँ और शाम को खाने में खाऊँ।"

[32] Pike fish is a large kind of fish

पर मछली ने उससे फिर से प्रार्थना की — "मुझे जाने दो इवान, मुझे जाने दो। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी।"

यह सुन कर इवान अपना सिर खुजाता हुआ बोला — "अगर मैं तुमको जाने दूँ तो तुम साबित करो कि जो कुछ तुम कह रही हो सच कह रही हो। तुम मेरी बालटियों को बिना एक बूँद पानी बिखेरे घर तक पैदल चला कर भेज दो।"

मछली बोली — "ठीक है। बस तुमको यह कहना है "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो।"

सो वह बेवकूफ इवान तुरन्त ही बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ बालटियों तुम अपने आप घर चली जाओ।"

बस तुरन्त ही उन बालटियों के लकड़ी के पैर निकल आये और वे उन लकड़ी के पैरों से पहाड़ों पर चढ़ने लगीं। इवान ने भी उस मछली को तुरन्त ही नदी में छोड़ दिया और अपनी बालटियों के पीछे भाग लिया।

इस बीच वे बालटियाँ गाँव के बाजार की सड़क से हो कर जा रही थीं। गाँव के लोग उन बालटियों को चलता देख कर आश्चर्य से उनको घूर रहे थे। उनका मुँह तो बस खुला का खुला ही रह गया था।

इवान मुस्कुराता हुआ उन बालटियों के पीछे पीछे भागा जा रहा था। बालटियाँ जा कर सीधी उसके लकड़ी के मकान में घुस गयीं

और जा कर एक बैन्च पर बैठ गयीं। जबकि वह बेवकूफ इवान अपनी गर्म अँगीठी के पीछे जा कर बैठ गया।

जब उसकी भाभियों ने यह देखा कि इवान पानी ले आया तो वे इवान से बोलीं — "जाओ अँगीठी के लिये थोड़ी लकड़ी और काट लाओ।"

बेवकूफ अपनी जगह से हिला भी नहीं बस ज़रा सा फुसफुसाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ कुल्हाड़ी तुम आलमारी में से नीचे उतरो और अपने आप लकड़ी काट कर लाओ।"

जैसे ही इवान यह फुसफुसाया कि उसकी कुल्हाड़ी आलमारी पर से कूदी और मकान के पीछे की तरफ भाग कर अपने आप ही लकड़ी काटने लगी। कटे हुए लकड़ी के लट्ठे भी एक एक कर के घर में आ कर जमा होने लगे और फिर अँगीठी में जा कर कूद गये।

फिर उसके भाइयों की पत्नियों ने उससे जंगल से लकड़ी काटने के लिये जाने के लिये कहा। अब उसके करने के लिये कुछ नहीं था बस वह अँगीठी से नीचे उतरा और अपने जूते पहने। इस बार उसने एक कुल्हाड़ी और एक लम्बी सी रस्सी और साथ में ले ली।

फिर उसने मकान के कम्पाउंड में से स्ले[33] उठायी और बोला — "भाभियों दरवाजा खोलो।"

यह देख कर उसकी भाभियॉ चिल्लायीं — "अरे, यह क्या? तुमने तो स्ले में घोड़े भी नहीं जोते। कैसे जाओगे?"

इवान मुस्कुरा कर बोला — "मुझे घोड़ों की जरूरत नहीं है।"

उसकी भाभियों ने घर का दरवाजा खोल दिया और वह चिल्लाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूॅ वह तुम करो। ओ स्ले तुम पेड़ों की तरफ भाग चलो और वही करो जो मुझे अच्छा लगे।"

यह कहते ही उसकी स्ले दरवाजे में से हो कर इतनी तेज़ी से उड़ चली कि उसकी दोनों भाभियॉ तो उसको आश्चर्य से देखती हुई वहीं बर्फ पर गिर पड़ीं। उस स्ले को उड़ता देख कर और दूसरे गॉव वाले भी आश्चर्य से नीचे गिर पड़े।

वे चिल्लाये — "पकड़ लो इसको, पकड़ लो इसको।" पर बेवकूफ ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि अपनी स्ले को और ज़्यादा तेज़ भगा दिया।

[33] Sleigh – Sleigh is a wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by two or four powerful dogs or horses. See its picture above.

जब वह जंगल पहुँचा तब उसने अपनी स्ले को रुक जाने को कहा — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मुझे और चालें दिखाओ और मेरे लिये लकड़ी काटो।"

तुरन्त ही कुल्हाड़ी ने लकड़ी काटनी शुरू कर दी। एक एक कर के लकड़ी कट कर इवान की स्ले में इकट्ठी होने लगी और अपने आप ही बँध कर उनके गट्ठर भी बनने लगे।

जब उसकी स्ले भर गयी तब वह उन गट्ठरों के ऊपर चढ़ कर बैठ गया और बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। हमारा काम खत्म हो गया अब घर की तरफ चलो।"

उसकी स्ले तुरन्त ही उसके घर की तरफ उड़ चली। घर पहुँच कर वह फिर अपनी अँगीठी पर जा कर लेट गया और सो गया।

कुछ दिन बीत गये, जल्दी से या देर से यह तो पता नहीं, पर एक दिन ज़ार[34] को इस बेवकूफ के बारे में पता चला तो उसने अपना एक नौकर इसको अपने महल में लाने के लिये भेजा।

जब शाही नौकर गाँव में आया तो वह इन भाइयों के मकान में आया और इस बेवकूफ को महल चलने के लिये कहा। पर बेवकूफ इवान ने अँगीठी के ऊपर से सोते हुए नींद में कहा — "चले जाओ यहाँ से और मुझे सोने दो।"

यह सुन कर ज़ार का नौकर बहुत गुस्सा हो गया। उसने उसकी पीठ पर एक डंडा मारा। पर डंडा मार कर तो उसको पछताना पड़ा

[34] Tsar or Tzar, pronounced as Zaar – a title of the emperor of Russia before 1917.

क्योंकि तुरन्त ही इवान बुड़बुड़ाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ डंडे, इस आदमी को बताओ कि इसने मुझे मार कर क्या हासिल किया है।"

बस फिर क्या था उस शाही नौकर का मोटा लकड़ी का डंडा उसी नौकर को मारने लगा। वह बेचारा नौकर वहाँ से सिवाय महल की तरफ भागने के और कुछ नहीं कर सका।

जब वह ज़ार के पास पहुँचा और उसको सब बताया तो ज़ार को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अपने सलाहकार को बुलाया और उससे कहा — "उस बेवकूफ लड़के को ढूँढो और उसको यहाँ ले कर आओ।"

उस अक्लमन्द सलाहकार ने एक टोकरी में शहद के केक, सूरजमुखी के बीज और बिलबैरीज़[35] भरीं और उस बेवकूफ के गाँव चल दिया।

उसने उस बेवकूफ के भाइयों को ढूँढा और उनसे पूछा कि उनके भाई को सबसे ज़्यादा क्या पसन्द था। भाइयों ने जवाब दिया — "वह तुम्हारे लिये कुछ भी करेगा अगर तुम उसके साथ दया का बर्ताव करो तो। और उसको अगर सबसे ज़्यादा चमकीले लाल रंग के कपड़े देने का वायदा करो तो।"

[35] Bill Berries is the other name of Blueberries. See its picture above

सो उस अक्लमन्द सलाहकार ने उस बेवकूफ को वह खाने की टोकरी दी और कहा — "अगर तुम मेरे साथ महल चलोगे तो ज़ार तुमको बहुत बढ़िया लाल रंग की पोशाक देगा। लाल रंग के जूते देगा और एक लाल रंग का काफ्तान भी देगा।"

बेवकूफ ने इसका जवाब देखने से पहले कुछ सोचा फिर बोला — "ठीक है। तो फिर मैं चलता हूँ। पर जब मैं चाहूँगा मैं तभी आऊँगा और अपने रास्ते से ही आऊँगा।"

यह सुन कर सलाहकार चला गया। उधर इवान भी अपनी अँगीठी पर फिर से सो गया। जब वह जागा तो वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ अँगीठी, जैसे हम यहाँ बैठे हुए हैं उसी हालत में तुम अपनी पूरी गति के साथ ज़ार के घर चलो।"

बस इवान के मुँह से शब्द निकलने की देर थी कि अँगीठी अपने आप उठी, दरवाजे में से बाहर निकली, बाहर कम्पाउंड में आयी, गाँव की सड़क पर गयी और ज़ार के महल की तरफ चल पड़ी। बेवकूफ इवान उस अँगीठी के ऊपर बैठा हुआ था।

जब अँगीठी महल के पास आयी तो ज़ार ने खिड़की के बाहर झाँका तो उसको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि एक अँगीठी उड़ कर उसके महल की तरफ आ रही थी।

जब इवान महल में आया तो ज़ार महल के दरवाजे पर खड़ा हुआ था।

ज़ार चिल्लाया — "ओ बेवकूफ इधर देखो। मैंने तुम्हारे बारे में कई शिकायतें सुनी हैं कि तुमने बहुत सारे भले लोगों को नीचे गिराया है। अब मैं तुमको जेल में बन्द करने वाला हूँ।"

उसी पल ज़ार की बहुत सुन्दर बेटी लुडमिला[36] महल की खिड़की पर खड़ी हुई थी और नीचे का दृश्य देख रही थी। जब बेवकूफ ने उसको देखा तो वह उससे तुरन्त ही प्यार करने लगा।

वह फुसफुसाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मैं चाहता हूँ कि यह सुन्दर लड़की इस बेवकूफ के प्यार में पड़ जाये।"

इसके बाद में उसने यह भी कहा — "ओ ॲगीठी, जल्दी से घर चलो।"

ॲगीठी घूमी और बर्फ के ऊपर फिसलती हुई इवान के गॉव की तरफ चल दी। वह घर पहुँच गयी और अपनी जगह जा कर खड़ी हो गयी। वह बेवकूफ भी घर पहुँच कर सो गया।

इस बीच महल में एक और हल्ला गुल्ला मच गया। राजकुमारी लुडमिला बीमार पड़ गयी। वह अपने प्रेमी के लिये रोती रही और चिल्लाती रही। उसने अपने पिता से कहा कि वह उसको उस बेवकूफ से शादी करने दे।

ज़ार को अपनी बेटी पर बहुत गुस्सा आया कि उसकी बेटी एक बेवकूफ से शादी करना चाहती है पर वह क्या करता सो उसने

[36] Ludmilla – the name of the daughter of Tsar (Tzar)

अपने सलाहकार को फिर से उस बेवकूफ को महल लाने के लिये भेजा।

तो एक बार फिर वह अक्लमन्द सलाहकार उस बेवकूफ के गॉव कई तरह की केक और मीठी शराब ले कर चला। वहॉ पहुॅच कर उसने इवान को बहुत अच्छे अच्छे खाने का लालच दे कर ललचाया।

जब इवान पेट भर कर खा चुका तो वह फिर से सो गया। सलाहकार ने उसको अपनी गाड़ी में रखा और महल ले गया।

नाराज ज़ार ने तुरन्त ही एक ऐसे बहुत बड़े बैरल[37] को बनाने का हुक्म दिया जिसमें दो लोग बन्द किये जा सकें और उसको लोहे की पत्तियों से बॉधा जा सके।

जब वह बैरल बन गया तो उसने बेवकूफ इवान और राजकुमारी लुडमिला दोनों बदकिस्मत प्रेमियों को इस बैरल में बन्द कर दिया और समुद्र में फेंक दिया।

जब इवान जागा तो राजकुमारी ने रो कर उससे अपनी बदकिस्मती के बारे में कहा पर इवान को तो कोई डर ही नहीं था। उसने साफ साफ ज़ोर से कहा — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूॅ

[37] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

वह तुम करो। हवा तुम बह कर इस बैरल को जमीन पर ले चलो और सूखे रेत पर ले जा कर ठहरा दो।"

अचानक एक बहुत बड़ा तूफान आया, बहुत ऊँची ऊँची लहरें उठीं और वे बैरल को किनारे पर ले जा कर सूखे रेत पर छोड़ आयीं।

जब वे बैरल से बाहर निकले तो राजकुमारी बोली — "यहाँ हम रहेंगे कहाँ? इस ठंडी रेत पर तो हम मर ही जायेंगे।"

इस पर इवान बोला — "तुम चिन्ता न करो राजकुमारी।"

और फिर वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। यहाँ एक सोने का महल बन जाये।"

तुरन्त ही एक सोने के गुम्बद वाला महल रेत पर आ कर खड़ा हो गया। उसके चारों तरफ हरे हरे पत्तों के बागीचे थे जिनमें खुशबूदार फूल लगे हुए थे और उनमें बहुत सारी चिड़ियें चहचहा रही थीं।

राजकुमारी और वह बेवकूफ उस सोने के महल के सोने के दरवाजे से उस महल के अन्दर गये। वे उसके संगमरमर के बने हुए कमरों मे घूमे और फिर उसमें रखे साटिन के काउचों पर बैठ गये।

राजकुमारी ने अपने प्रेमी को प्यार से देखा तो उसने एक गहरी साँस ली। वह बोली — "ओह इवान, काश तुम इतने सीधे न होते। काश तुम्हारी नाक इतनी लम्बी न होती। काश तुम्हारे बाल इतने लाल न होते।"

इवान को इस बारे में तय करने कोई देर नहीं लगी।

वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मैं एक लम्बा सुन्दर आदमी बन जाऊँ जो अपनी प्यारी राजकुमारी को खुश रख सकूँ।"

और वह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन गया जैसे सुबह का आसमान। एक इतना सुन्दर आदमी जो शायद ही कभी इस धरती पर पैदा हुआ हो। और दोनों उस सोने के महल में रहने लगे।

कुछ समय बाद एक दिन ज़ार शिकार खेलने के लिये बाहर निकला तो यह देख कर हैरान रह गया कि समुद्र के किनारे रेत पर एक सोने का महल खड़ा था जो वहाँ पहले कभी नहीं था।

वह चिल्लाया — "मेरी जमीन पर यह इतना बड़ा महल बनाने की हिम्मत किसने की?"

इवान ज़ार को अपने महल के दरवाजे पर मिला और उसको अपने महल में अन्दर ले गया। वहाँ जा कर उसको एक ऐसी मेज पर बिठाया जिस पर बहुत सारे खाने लगे हुए थे। ज़ार ने वहाँ खाया पिया और उसके खाने पीने की बहुत तारीफ की।

आखिर ज़ार ने इवान से पूछा — "पर तुम कौन से इतने बड़े ज़ार या ड्यूक हो जिसने इतना बड़ा महल यहाँ बनवा लिया?"

इवान बोला — "क्या आपको उस बेवकूफ की याद है जो एक अँगीठी के ऊपर सवार हो कर आपके घर आया था? क्या आपको उस बेवकूफ की याद है जिसको आपने अपनी बेटी

राजकुमारी लुडमिला के साथ बैरल में बन्द कर के समुद्र में फिंकवा दिया था? मैं वही बेवकूफ इवान हूँ।

अगर मैं चाहूँ तो अभी इसी समय आपको और आपके पूरे राज्य को इस समुद्र की तली में पहुँचा सकता हूँ।"

ज़ार ने डर के मारे अपने हाथ ऊपर कर दिये और उससे माफी माँगी। वह बोला — "तुम मेरी बेटी को मेरे आशीर्वाद के साथ ले सकते हो। और साथ ही मेरा आधा राज्य भी। पर तुम मेरी ज़िन्दगी बख्श दो। मैं तुमसे अपनी ज़िन्दगी की भीख माँगता हूँ।"

इवान ने ज़ार को माफ कर दिया और राजकुमारी से शादी कर ली। अपनी इस शादी की उसने इतनी बड़ी दावत की जितनी कि रूस में शायद ही कभी हुई हो। इसमें उसने बहुत सारे लोगों को बुलाया था।

जब पुराना ज़ार मर गया तो इवान रूस का इतना अच्छा राजा हो गया जितना कि रूस ने पहले कभी शायद ही देखा हो।

8 जानवरों का बदला[38]

कैटोफे इवानोविच[39] बिल्ला अपनी जवानी के दिनों में एक बहुत ही अच्छा चूहा पकड़ने वाला हुआ करता था पर अब वह बूढ़ा होता जा रहा था सो वह अपने मालिक के लिये किसी काम का नहीं रह गया था।

एक दिन उसका मालिक उस बिल्ले को जंगल में ले गया और उसको वहीं छोड़ आया। उस बिल्ले ने सोचा कि उसने अपने मालिक की ज़िन्दगी भर तो सेवा की और उसको उसका बस यही बदला मिला कि उसको जंगल में छोड़ दिया गया और वह भी अकेले।

फिर भी वह वहॉ अकेला नहीं था। दो तेज़ ऑखें उसको देख रही थीं। वे थीं लिसा लोमड़ी[40] की ऑखें। लिसा लोमड़ी अब यह सोच रही थी कि वह कैसे उस बिल्ले का फायदा उठाये।

जंगल के किसी जानवर ने भी इतना भयानक जानवर पहले कभी नहीं देखा था तो उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

---

[38] The Animals' Revenge – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[39] Catofay Ivanovich – name of the male Cat

[40] Lisa female fox

लिसा बोली — "हलो भाई, तुम तो कुछ ऐसे दिखायी दे रहे हो जैसे तुम्हारे बुरे दिन आ गये हों। तुम अगर चाहो तो मेरे साथ रह सकते हो। मेरा घर कोई बहुत बढ़िया घर तो नहीं है पर सूखा है और गर्म है।"

बिल्ला बोला — "धन्यवाद, मैं तुम्हारे साथ जरूर रहना चाहूँगा।"

सो लोमड़ी उस बिल्ले को अपने घर ले गयी। जब वह बिल्ला लिसा लोमड़ी के उस मिट्टी वाले मकान में घुसा तो वह लोमड़ी अपने पड़ोस के सारे जानवरों को यह खबर देने के लिये बाहर भाग गयी।

वह उनसे जा कर बोली — "बुरी खबर है दोस्तों, बड़ी बुरी खबर है। आज यहाँ एक नया गवर्नर आया है। वह सचमुच में बड़ा भयानक है। उसकी नुकीली मूँछें हैं। सुई जैसी तेज़ जबान है। उसकी आँखें अँधेरे में चमकती हैं और उसके पंजे तो बिल्कुल ही चाकू जैसे हैं।

जब वह सोता है तो वह खर्राटे तो ऐसे मारता है जैसे कोई आदमी खर्राटे मारता है। जब वह जागता है तो वह पुकारता है "और और।" और वह सन्तुष्ट तो कभी होता ही नहीं है।"

यह सुन कर जानवरों की तो ऊह और आह ही निकल गयी। कोई चीख दिया तो कोई ई ई ई ई कर बैठा।

लोमड़ी बोली — "पर देखो इस बात का ध्यान रखना कि हालाँकि अब तो वह मेरे घर में ठहरा हुआ है पर उसने मुझे मेरे घर

से बाहर ही खाने की कोशिश की थी। लेकिन अब वह यह चाहता है कि तुम सब लोग उसके लिये खाना ले कर आओ।"

फिर सब तरफ आह और ओह की आवाज सुनायी पड़ने लगी।

मीशा भालू[41] अपना पेट खुजाते हुए और एक पैर से दूसरे पैर पर अपना बोझ डालते हुए बोला — "बिना गवर्नर के ज़िन्दगी बहुत मुश्किल है।"

सब जानवर गवर्नर का यह हुक्म ले कर अपने अपने घरों को चले गये। अगले दिन वे सब लोमड़ी के घर इकट्ठे हुए।

लेवन भेड़िया चीज़ और दही ले कर आया।

मीशा भालू घर की बनी शराब ले कर आया।

बरान भैंसा अंडों की एक टोकरी ले कर आया।

कूज़्मा बकरा[42] कुछ चिड़ियें ले कर आया जो सब साफ की हुई थीं।

लिसा लोमड़ी ने अपना सिर बाहर निकाला और अपना पंजा उठाया और बोली — "चुप दोस्तो चुप, थोड़ा धीरज रखो। गवर्नर साहब अभी आराम कर रहे हैं।"

कूज़्मा बकरा चिल्लाया — "ओ लिसा, जाओ और जा कर उसको जगाओ। हमारे पास सारा दिन नहीं है यहॉ बैठने के लिये।"

---

[41] Misha Bear

[42] Levon Wolf, Baran Ram, Kuzma Goat

पर लोमड़ी ने उसकी बात बीच में ही काट दी — "माफ करना आप लोग जब मुझसे बात करें तो थोड़ी नम्रता से बात करें। मैं गवर्नर की साथिन हूँ। हमारे नये मालिक ने मुझे इस काम का यह इनाम दिया है कि उसने मुझे अपनी पत्नी बना लिया है।"

जानवरों ने मजबूरी में एक दूसरे की तरफ देखा, अपने अपने कन्धे उचकाये और चुप हो गये।

अचानक लिसा लोमड़ी बोली — "खड़े हो जाओ। गवर्नर साहब आ रहे हैं। जल्दी से अपनी अपनी भेंटें मेरे दरवाजे पर रख दो।"

जानवर तो बेचारे डर के मारे हिल भी नहीं पा रहे थे। हर जानवर आगे जाने के लिये एक दूसरे को कह रहा था।

आखिर यह जिम्मेदारी बूढ़े कूज़्मा बकरे पर पड़ी जो इतना बहरा था कि उसको लिसा लोमड़ी की बहुत सारी बातें तो सुनायी ही नहीं पड़ीं। वह आगे बढ़ा और जल्दी से अपनी भेंट लोमड़ी के आगे रख दी।

इसके बाद आया मीशा भालू। जैसे ही वह भीड़ में से बाहर आया और उसने लोमड़ी के घर के अँधेरे दरवाजे की तरफ देखा तो उसमें उसने एक बहुत ही भयानक मूँछों वाले चेहरे पर एक जोड़ी जलती हुई आँखें देखीं।

उस चहरे को देख कर उसकी तो टॉगें हीं कॉप गयीं। उसने उन्हीं कॉपती टॉगों से वापस जाने से पहले उस गवर्नर को बार बार झुक कर सलाम किया और वहॉ से तेज़ी से भाग लिया।

लिसा लोमड़ी बोली — "रास्ता दो रास्ता दो। गवर्नर साहब आ रहे हैं।"

यह सब तो जानवरों के लिये बहुत था। उन्होंने तुरन्त ही अपनी अपनी पूँछ घुमायी और पेड़ों और झाड़ियों में जा कर छिप गये।

इस बीच कैटोफ़े इवानोविच बिल्ला कुछ सोता हुआ सा जंगल के साफ मैदान में आया। उसकी पूँछ बड़े भयानक रूप से इधर से उधर घूम रही थी।

वह अपनी उस दावत के सामने खड़ा था जो उसके लिये लिसा लोमड़ी के घर के दरवाजे पर लगायी गयी थी। उसने उस खाने को जल्दी जल्दी लालचीपने से खाना शुरू कर दिया। बीच बीच में वह ज़ोर ज़ोर से म्याऊँ म्याऊँ भी बोलता जाता था – "और और।"

जब वह बिल्ला खाना खाने में लगा हुआ था तो मीशा भालू ने हिम्मत जुटा कर झाड़ी में से अपना सिर बाहर निकाल कर उसको ठीक से देखना चाहा।

उसके इस तरह से सिर बाहर निकालने पर पत्तियों में आवाज हुई तो दूसरे जानवरों ने भी इधर उधर देखा। बिल्ला अपने आपको

भूल गया और उधर की तरफ यह सोचते हुए कूद गया कि वहॉ कोई चूहा था।

बेचारा मीशा भालू तो डर के मारे वहीं बस मर सा ही गया सो वह वहॉ से बिजली की सी तेज़ी के साथ पेड़ों में से हो कर भाग लिया। और दूसरे जानवर भी उसके पीछे पीछे भाग लिये। वे इस डरावने जानवर से जितना दूर रह सकते थे उतना दूर रहना चाहते थे।

कुछ समय तक तो लिसा लोमड़ी उस बूढ़े बिल्ले को अपने साथ रखे रही पर फिर बाद में उसको लगा कि उसको अपने घर में रखने का उसको कोई फायदा नहीं था सो उसने उसको अपने घर से बाहर निकाल दिया।

एक बार फिर वह बिना घर का बिल्ला जंगल में इधर उधर घूमने लगा। घूमते घूमते वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ एक कैम्प लगा हुआ था। इस कैम्प में वे जानवर थे जो उससे डर कर भाग गये थे।

वहॉ जा कर वह बोला — "भाइयो और बहिनो, आप लोग मुझे माफ करें मैं आपमें से किसी को कोई नुकसान नही पहुँचाना चाहता। मैं कोई गवर्नर नहीं हूँ, मैं कैटोफ़े इवानोविच हूँ – एक बूढ़ा बिल्ला। असल में यह सब आप सबको मुझसे दूर रखने का लिसा लोमड़ी का प्लान था।"

यह सुन कर सारे जानवर उस बूढ़े बिल्ले को देखने के लिये एक एक कर के बाहर निकलने लगे और जब उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा बिल्ला तो एक बहुत ही सीधा सादा सा जानवर है तो उन्होंने उसके साथ लोमड़ी से बदला लेने का प्लान बनाना शुरू किया।

लैवन भेड़िया बोला — "मेरे दिमाग में एक प्लान आया है।" कह कर उसने सब जानवरों को अपना प्लान बताया।

सब जानवरों को भेड़िये का प्लान बहुत पसन्द आया। प्लान के अनुसार वे सब जानवर मछली पकड़ने के लिये जमी हुई नदी की तरफ चल दिये।

क्योंकि उस समय जाड़े का मौसम था नदी जमी हुई थी सो मछली पकड़ने का जाल डालने से पहले उनको उस नदी में एक छेद करना पड़ा। सबने मिल कर उस छेद में से एक थैला भर कर कई तरह की मछलियॉ पकड़ लीं।

इन मछलियों को पकड़ कर वे लोमड़ी के घर के पास एक खाली जगह में ले गये और वहॉ आग जला कर उनको भूनने लगे। भुनी हुई मछली की खुशबू लिसा लोमड़ी की नाक में पहुँची तो वह वहॉ देखने के लिये आयी।

वहॉ आ कर वह बोली — "हलो दोस्तो, एक मछली अपनी पुरानी दोस्त को भी दो न।"

लैवन भेड़िया बोला — "तुम भी अपने लिये मछली पकड़ लो और फिर जी भर कर खाओ।"

लोमड़ी बोली — "अगर मैं जानती कि मछली कैसे पकड़ी जाती है तो मैं जरूर पकड़ लेती।"

भेड़िया एक लम्बी सॉस लेकर बोला — "सुनो बहिन, इसमें कुछ खास नहीं करना है। बस नदी पर जाओ, अपनी पूँछ नदी के पानी में डालो और ज़ोर से बोलो — "मेरी पूँछ पर छोटी और बड़ी सब मछली आ जाओ।

यह सुन कर सारी मछलियॉ तुम्हारी घनी पूँछ पर आ कर चिपक जायेंगी। पर थोड़ा धीरज रखना नहीं तो तुम कुछ नहीं पकड़ पाओगी।"

लिसा लोमड़ी यह सुन कर बहुत खुश हुई और वह भी नदी से मछली पकड़ने के लिये नदी की तरफ चल दी। उसने अपनी पूँछ बर्फ में नीचे डाली और ज़ोर से बोली — "मेरी पूँछ पर छोटी और बड़ी सब तरह की मछली आ जाओ।" पर उसकी पूँछ पर तो कोई मछली नहीं आयी।

लोमड़ी बेचारी रात भर वहॉ बैठी बैठी ठंड में सिकुड़ती रही। सुबह होते होते उसकी पूँछ तो जम ही गयी थी। जब उसने उठने की कोशिश की तो उसने देखा कि वह तो वहॉ से उठ ही नहीं पा रही है।

अपनी पूँछ इतनी भारी देख कर वह यह सोच कर खुश हो गयी कि लगता है कि मेरी पूँछ पर बहुत सारी मछलियॉ चिपक गयी

हैं शायद इसी लिये मैं उठ नहीं पा रही हूँ। सो वह वहीं बर्फ में जमी हुई बैठी रही और सोचती रही कि अब वह क्या करे।

इतने में उसने देखा कि जानवर अपने अपने हाथों में लकड़ी के डंडे और मिट्टी के ढेले ले ले कर चले आ रहे हैं। आते ही वे लोमड़ी पर टूट पड़े और उसके ऊपर कीचड़ उछालने लगे और सड़े हुए टमाटर फेंकने लगे।

लिसा लोमड़ी ने उस जमे हुए पानी से बाहर निकलने की बहुत कोशिश की। बड़ी मुश्किल से वह अपने आपको वहाँ से छुड़ा सकी। घायल और परेशान लँगड़ाती हुई वह वहाँ से बर्फ के ऊपर से होती हुई अपने घर की तरफ भाग ली।

इस तरह से जानवरों ने उस चालाक लिसा लोमड़ी से अपना बदला लिया।

9 बर्फ़ की लड़की[43]

उस समय आधी रात हो रही थी। पूरे चॉद की चॉदी जैसी किरनें सारी धरती पर पड़ रही थीं।

अचानक सारा आसमान उन चिड़ियों से भर गया जो गर्म जगहों से वापस लौट आयी थीं। वहॉ वसन्त सारी धरती पर अपनी पूरी शान से आ गया था और वहॉ हंस और सारस[44] भी दिखायी देने लगे थे।

उनमें से एक चिड़िया फ़र[45] के पेड़ों से घिरे हुए एक खुले मैदान में उतरते हुए बोली — "उफ़, यहॉ कितना ठंडा है। ठंड ने तो यहॉ सब शाखाओं को कितना सख्त बना दिया है। घास के मैदानों में घास नहीं है, पेड़ सब चुपचाप नंगे और जमे पड़े हैं, पेड़ों के ठंडे तनों पर उनके गोंद जमे हुए लटके पड़े हैं।"

वह कुछ देर के लिये वहॉ रुकी पर फिर वह ऊपर आसमान की तरफ देख कर बोली — "अपने ऊपर तो साफ आसमान है। चॉद तारों को देखो तो वे कितने प्यार से चमक रहे हैं पर इस धरती को देखो यह तो इतनी सख्ती से चमक रही है जैसे हीरे का हार।"

---

[43] Snowmaiden – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[44] Translated for the words "Swans and Cranes"

[45] Fir is a kind of evergreen tree which has conical leaves. It is used a s Christmas tree too. It is of several kinds, but one of its lind is shown here in the pictjure above.

जब वह यह सब कह रही थी तो उसके आसपास की सब चिड़ियें ठंड और शर्म से कॉप रही थीं।

वह चिड़िया फिर बोली — "मैं ही तुम्हारे इन सब दुखों की जड़ हूॅ। सोलह साल पहले मैंने ही लाल नाक वाले पाले[46] से प्यार किया था। तभी से वह मेरे ऊपर राज कर रहा है।

क्योंकि हमारी एक बेटी है इसलिये मैं उसके खिलाफ भी नहीं जा सकती। वह उसको बहुत ही गहरे जंगल में अपने बर्फ के महल में रखता है।

उसी की वजह से मैं उससे झगड़ने से भी डरती हूॅ। और इसी वजह से हम लोग बहुत दुख में हैं – उफ़ यह बेरहम ठंड और जाता हुआ वसन्त का यह मौसम।"

सुन्दर वसन्त अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी। उसने अपनी बेटी के बारे में सोचते हुए एक लम्बी सॉस भरी। तभी वह बड़ा सा बूढ़ा लाल नाक वाला पाला जंगल में से बाहर आया।

वह सुन्दर वसन्त से खुशी से बोला — "हलो ओ सुन्दर वसन्त।"

सुन्दर वसन्त बोली — "हलो मिस्टर पाले। हमारी बेटी बर्फ की बेटी कैसी है?"

[46] Red-nosed Frost

पाला बोला — "वह बिल्कुल ठीक है। मैं उसको अपने बर्फ के महल में अपने साथ ही रखता हूँ। अब तो वह इतनी बड़ी हो गयी है कि अब उसको किसी आया की भी जरूरत नहीं है।"

सुन्दर वसन्त ने उससे कुछ नाराज होते हुए कहा — "ओ बूढ़े, तुम किसी लड़की के दिल के बारे में कुछ नहीं जानते। वह अब सोलह साल की है। तुमको अब उसे जहाँ भी वह जाना चाहे वहाँ जाने देना चाहिये।"

बूढ़ा पाला बोला — "और सूरज उसको देख ले तो? क्या उसका दिल आदमियों के प्यार के लिये पिघल नहीं जायेगा? और फिर यारीलो सूरज देव[47] उसको अपने कब्जे में ले लेंगे।"

इस तरह से दोनों माता पिता रात भर जंगल मे बैठे बैठे अपनी बेटी की किस्मत का फैसला करते रहे कि उनको उसके बारे में क्या करना चहिये और फिर आखीर में एक नतीजे पर पहुँचे।

लाल नाक वाला पाला बोला — "मुझे मालूम है कि एक जवान लड़की को ठीक से देखभाल की जरूरत होती है पर क्योंकि तुम्हारे पास तो उसको देखने भालने का समय ही नहीं है इसलिये हम उसको ऐसे अच्छे दिल वाले किसानों की देखभाल में रख देंगे जो बहुत ही नम्र हों और जिनके अपना कोई बच्चा न हो।

[47] Yarilo Sun God

वहॉ बर्फ की लड़की के पास रोज के करने के लिये काफी काम होगा तो वह सपने देखना भी छोड़ देगी। इसके अलावा वहॉ उस पर किसी आदमी की निगाह भी नहीं पड़ेगी।"

सो बस यही तय रहा।

अगली सुबह एक बूढ़ा और उसकी पत्नी जंगल में अपनी अॅगीठी में आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठी करने आये। उस दिन क्योंकि वसन्त की छुट्टी थी सो वह बूढ़ा बहुत खुश था और बड़े उत्साह में था। वह गाना गाता चला आ रहा था और उसके पैर भी जमीन पर सीधे नहीं पड़ रहे थे।

पर उसकी पत्नी बहुत खुश नहीं थी। गॉव से आती बच्चों की आवाज उसको अच्छी नहीं लग रही थी क्योंकि उसको अपने शान्त घर की याद आ रही थी।

उस बूढ़े ने पत्नी से कहा — "अरे खुश रहा करो। मैं तुम्हें एक बात बताऊॅ? चलो हम लोग यहॉ अपने लिये बर्फ की एक बेटी बनाते हैं।"

बुढ़िया उसकी बेवकूफी पर गुस्सा हो गयी और उस पर चिल्लायी — "तुमको शर्म नहीं आती? अगर लोग हमको ऐसे बच्चों वाले खेल खेलते देख लेंगे तो क्या कहेंगे।"

बूढ़े ने उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए नीचे पड़ी बर्फ इकट्ठी करनी शुरू कर दी। पहले उसने बर्फ का एक गोला बनाया फिर उसके बॉहें और टॉगें लगायीं और फिर उसके कन्धों पर सिर रखा।

उसके एक नाक लगायी और उसके चेहरे पर मुँह और ऑखें बना दीं।

जैसे ही वह यह बना कर चुका तो एक अजीब सी बात हुई जिससे दोनों बूढ़े पति पत्नी का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

उस बर्फ की बनी लड़की के होठ तो लाल हो गये। उसकी ऑखें खुल गयीं। उसने प्यार से उस बूढ़े जोड़े की तरफ देखा और मुस्कुरायी। उसने अपने शरीर से अपनी बर्फ झाड़ी और उस बर्फ के ढेर में से बाहर निकल आयी – एक जीती जागती लड़की।

दोनों पति पत्नी तो उस ज़िन्दा लड़की को देख कर भौंचक्के रह गये। बूढ़े को लगा कि वह जो पी कर आया था शायद इसी लिये उसकी ऑखें उसके साथ चालें खेल रही थीं पर उसकी तो पत्नी भी उस लड़की को ही घूरे जा रही थी।

आखिर बूढ़ा बोला — "प्यारी बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़की बोली — "मेरा नाम बर्फ की लड़की[48] है।"

बिना किसी हिचकिचाहट के वे उसको अपने घर ले गये। जब वह लड़की उनके साथ जा रही थी तो उसने मुड़ कर कहा — "विदा पिता जी, विदा मॉ, विदा मेरे जंगल के घर।"

पर क्या वह केवल जंगल के पेड़ों की पत्तियों के हिलने की ही आवाज थी या फिर सचमुच में ही उस बर्फ की लड़की की आवाज

[48] Translated for the word "Snowmaiden"

का किसी ने जवाब दिया — "विदा ओ बर्फ की बेटी, विदा, विदा, विदा, विदा... ।"

उनको ऐसा लगा जैसे पेड़ों ने उसको झुक कर विदा दी और घनी झाड़ियों ने हट कर उसको जाने का रास्ता दिया।

समय गुजरता गया और वह बर्फ की लड़की बड़ी होती गयी – दिन ब दिन नहीं, बल्कि हर घंटे। वह हर रोज पहले से भी बहुत ज़्यादा सुन्दर होती जाती थी।

उसकी खाल बर्फ से भी ज़्यादा सफेद थी। उसके सफेद बाल सफेद राख जैसे थे या फिर चॉदी के बिर्च के पेड़[49] जैसे रंग के थे। उसकी ऑखें नीले आसमान से भी ज़्यादा नीली थीं।

उन बूढ़े पति पत्नी के पास उस बर्फ की लड़की के लिये प्यार की कोई कमी नहीं थी। वे तो बस सारा दिन उसी को देखते रहते थे।

वह जब बड़ी हो गयी तो वह बहुत ही दयालु थी। वह घर में सारा काम करती थी। जब वह गाना गाती थी तो सारा गॉव उसका गाना सुनने के लिये रुक जाता था।

जल्दी ही वसन्त का मौसम आ गया और उसके साथ साथ आ गयी सूरज की धूप। धरती गर्म होने लगी। बर्फ की जो गन्दगी पड़ी

[49] Silver Birch Tree. See its picture above.

रह गयी थी उसके बीच में हरी हरी घास दिखायी दिखायी देने लगी और लार्क चिड़िया[50] गाने लगी।

इस धूप के आने से सब लोग बहुत खुश थे पर वह बर्फ की लड़की बहुत दुखी थी। उसको दुखी देख कर उसके माता पिता ने पूछा — "क्या बात है बेटी, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?"

लड़की फुसफुसाती हुई बोली — "नहीं मॉ मेरी तबियत ठीक है। पिता जी मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है।"

धीरे धीरे पहले फूल खिलने लगे। फिर घास के मैदान पीले गुलाबी और नीले रंग के फूलों से भर गये। वसन्त की सारी चिड़ियॉ वहॉ वापस आ गयी थीं।

बर्फ की लड़की धीरे धीरे और ज़्यादा शान्त और दुखी होती गयी। वह सूरज से छिप जाती। वह किसी ठंडी जगह को ढूँढती रहती। जब बारिश होती तो वह अपने हाथ उसके नीचे फैला देती।

एक बार काले बादलों का एक टुकड़ा फट गया और उसमें से बटन जितने बड़े बड़े ओले पड़ने लगे। उन ओलों को देख कर तो वह इतनी खुश हुई कि वह उनको पकड़ने के लिये ऐसे दौड़ी जैसे वे कोई कीमती जवाहरात हों।

पर जैसे ही सूरज ने उनको पिघला दिया तो वह ऐसे रो पड़ी जैसे किसी भाई के मरने पर उसकी अपनी बहिन रोती है।

[50] Lark is a small bird with yellow breast

एक दिन जब गर्मियॉ आने वाली थीं तो गॉव की कुछ लड़कियों के एक झुंड ने बर्फ की लड़की को खेलने के लिये बाहर बुलाया।

उन्होंने कहा — "आओ न हमारे साथ, हम लोग गर्मियॉ मनाने के लिये बाहर जा रहे हैं।" पर बर्फ की लड़की तो उनसे बच कर साये में जा कर सिकुड़ कर बैठ गयी।

यह देख कर उसकी बुढ़िया मॉ ने कहा — "जाओ न बेटी, अपनी दोस्तों के साथ खेल आओ। तुमको हम बूढ़ों के साथ घर में नहीं बैठना चहिये। जाओ और धूप का आनन्द लो।"

उन लड़कियों में से एक लड़की ने जिसका नाम अन्ना[51] था बर्फ की लड़की का हाथ पकड़ा और उसको मैदान की तरफ खींच ले गयी।

उन्होंने वहॉ साथ साथ फूल इकट्ठे किये, उनकी माला बना कर अपने बालों में गूँथे। फिर उन्होंने गाने गाये और जंगल के रास्तों के बराबर बराबर कूदती फॉदती रहीं।

उस दिन सारा गॉव ज़िन्दादिल हो रहा था। खुशियॉ मना रहा था। लड़के लड़कियॉ सब एक दूसरे के साथ खेल रहे थे।

पर केवल बर्फ की लड़की ही दुखी थी। वही अकेली घूम रही थी। उसका सिर नीचे लटका हुआ था। उसके जमे हुए होठों पर कोई मुस्कुराहट नहीं थी।

[51] Anna – name of one of the village girls

अचानक उसने बॉसुरी पर एक संगीत सुना तो उसने इधर उधर देखा। उसने देखा कि एक चरवाहा लड़का उसके सामने खड़ा है और उसको नाच के लिये बुला रहा है।

पहले तो उसने मना कर दिया और हिचकते हुए दूसरी लड़कियों के पीछे छिप गयी पर वह लड़का उसको बार बार बुलाता रहा।

चरवाहा लड़का बोला — "आओ प्रिय बर्फ की लड़की आओ, मेरे साथ नाचो। मैं अपनी बॉसुरी केवल तुम्हारे लिये ही बजाऊँगा और इस तरह मैं तुम्हारे होठों पर मुस्कुराहट ले कर आऊँगा।"

इस चरवाहे लड़के का नाम लैल[52] था। उसको इस बर्फ की लड़की से प्यार हो गया था। उसने उस लड़की का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

दूसरी लड़कियों ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा क्योंकि वह तो उस चरवाहे लड़के के साथ गोल गोल नाच रही थी और उसके पीले गालों पर गुलाबी चमक आ गयी थी।

उस दिन के बाद से लैल उसकी खिड़की के नीचे अक्सर ही बॉसुरी बजाया करता था। वह उसको बातें करने के लिये खेतों और मैदानों में बुला लेता।

[52] Lel – the name of the shepherd boy

वह नीली ऑखों वाली लड़की भी खुशी से अपने दोस्त के साथ दौड़ी चली जाती। वह उसके साथ घूमती और फूलों के हार बनाती। फिर उनसे अपने आपको सजाती।

लैल भी उसको बहुत प्यार करता था पर उसने कभी यह महसूस नहीं किया कि वह लड़की भी अपने दिल में उसको प्यार करती थी या नहीं। उसकी दोस्ती उस लड़के को एक बच्चे की दोस्ती जैसी भोली भाली दोस्ती लगती थी।

एक दिन लैल जंगल में अकेला ही टहल रहा था कि उसने वहॉ गहरे रंग की ऑखों वाली अन्ना को देखा। अन्ना जब देखती कि लैल उस बर्फ की लड़की को तो बहुत प्यार करता था और उससे ऑखें चुरा लेता था तो उसको बहुत जलन होती थी

पर जब आज अन्ना ने देखा कि लैल अकेला ही टहल रहा है तो उसने सोचा कि उसको उसका ध्यान अपनी तरफ खींचने की एक बार फिर कोशिश करनी चाहिये।

वह उसके पास पहुॅची और बड़े मीठे शब्दों में बोली — "आज मैं तुमको यहॉ अकेले घूमते देख कर कितनी खुश हूॅ लैल। मेरे दिल में तुम्हारे लिये बहुत प्यार उमड़ रहा है। मुझे अपनी ऑखें और गाल चूमने दो। मैं तुम्हारा दिल अपने प्यार से भर दूॅगी।" कह कर उसने लैल को गले से लगा लिया।

उस नौजवान चरवाहे का दिल भी यह सुन कर प्यार से भर गया। पर तभी बर्फ की लड़की पेड़ों के बीच में से निकली और

अन्ना और लैल के सामने आ खड़ी हुई। वह कुछ समझी नहीं कि वहॉ क्या हो रहा था सो वह वहीं रुक गयी।

तुरन्त ही लैल अन्ना से अलग हो गया और बर्फ की लड़की को समझाने के लिये दौड़ा। वह उससे बड़ी नर्मी से बोला — "देखो बर्फ की लड़की, अन्ना का दिल मेरे दिल जैसा बहुत प्यारा है पर तुम्हारा दिल बहुत ठंडा और खाली है। तुम उसकी तरह से प्यार क्यों नहीं कर सकतीं?"

यह सुन कर बर्फ की लड़की के गालों पर ऑसू बहने लगे। वह जंगल की तरफ मुड़ी और उधर भाग गयी। वह जब तक भागती रही जब तक कि वह एक गहरी झील के पास नहीं आ गयी जिसमें गुलाबी और सफेद लिली खिली हुई थी।

उस झील के चारों तरफ फूलों वाली झाड़ियॉ और पेड़ थे जिनकी शाखाऐं झील के चमकते हुए पानी की तरफ झुकी हुई थीं।

उसके किनारे पर खड़े हो कर वह सिसकते हुए बोली — "ओ मेरी मॉ, इन दुख भरे ऑसुओं से तुम्हारी यह बेटी तुमसे कहती है कि तुम मुझे प्यार करना सिखा दो। मुझे एक इन्सान का दिल दे दो मॉ, मैं तुमसे भीख मॉगती हूॅ।"

यह सुन कर झील में से सुन्दर वसन्त निकली और अपनी सिसकती हुई बच्ची की तरफ प्यार से देख कर बोली — "मैं तुमको केवल एक घंटा दे सकती हूॅ क्योंकि कल जब सुबह होगी तो यारीलो सूरज देवता अपना गर्मी का मौसम शुरू कर देंगे और फिर

मुझे यहॉ से एक साल के लिये चले जाना पड़ेगा। तुम्हारी क्या इच्छा है मेरी बच्ची बोलो?"

बर्फ की लड़की के मुँह से बस एक शब्द निकला "प्यार"।"

कॉपते हुए दिल से बर्फ की लड़की आगे बोली — "मेरे आस पास के सब लोग प्यार करते हैं मॉ। सब खुश हैं और सन्तुष्ट हैं। केवल मैं ही हूँ जिसमें प्यार नहीं है।

न तो मैं किसी को प्यार करती हूँ और न ही मैं किसी को प्यार करने के काबिल हूँ। मॉ मैं प्यार करना चाहती हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि मैं किसी को कैसे प्यार करूँ?"

उसकी मॉ दुखी हो कर बोली — "बेटी, क्या तुम अपने पिता की बात भूल गयीं? तुम अच्छी तरह जानती हो कि प्यार का क्या मतलब है। उसका मतलब है तुम्हारी मौत।"

बर्फ की लड़की बोली — "तो इससे तो अच्छा यह है कि मैं जल्दी से जल्दी मर जाऊँ। प्यार का एक पल, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो मुझे इस बिना प्यार वाली ज़िन्दगी से ज़्यादा प्यारा है।"

सुन्दर वसन्त एक आह भर कर बोली — "ऐसा ही हो मेरी बच्ची। प्यार का स्रोत मेरे सिर पर लगे इस लिली के ताज में है तुम इसको ले लो और अपने सिर पर पहन लो।"

बर्फ की लड़की ने खुशी से मॉ के सिर पर से वह लिली के फूलों वाला ताज ले लिया और अपने सिर पर रख लिया।

जैसे ही उसने वह ताज अपने सिर पर रखा वह चिल्लायी — "मॉ मेरे दिल में यह कैसी अजीब सी हलचल मच रही है। दुनियॉ की सुन्दरता देखने के लिये मेरी तो ऑखें खुल रही हैं। मैं चिड़ियों का गाना सुन पा रही हूॅ। मॉ मेरे दिल में वसन्त की खुशी भरी जा रही है।"

उसकी मॉ बोली — "मेरी प्यारी बच्ची वसन्त की खुशबू ने तुम्हारी आत्मा को भर दिया है। तुमको अपने दिल में प्यार की पूरी ताकत का बहुत जल्दी ही पता चल जायेगा।

पर मेरी बच्ची, एक बात का ध्यान रखना। तुम अपने प्यार को यारीलो की तेज़ नजर से बचा कर रखना। उसकी गुलाबी किरनों की तारीफ करने के लिये सुबह को बाहर मत खड़ी रहना। जल्दी से पत्तों के साये में या जंगल की ठंडक में दौड़ जाना। अच्छा विदा मेरी बच्ची।"

इन आखिरी शब्दों के साथ ही सुन्दर वसन्त झील में डूबती चली गयी। बर्फ की लड़की जंगल के रास्तों पर कूदती फॉदती चल दी।

रास्ते में जब उसने बॉसुरी की आवाज सुनी तो उसका दिल तो बहुत ज़ोर से धड़कने लगा। वह उस आवाज की तरफ दौड़ पड़ी।

जल्दी ही वह एक खुले मैदान में आ पहुँची जहाँ सूरज चमक रहा था। वहाँ फ़र के पेड़ के पास एक लकड़ी का लट्ठा पड़ा हुआ था और उस लट्ठे के ऊपर बैठा हुआ लैल बहुत दुखी मन से अपनी बाँसुरी बजा रहा था।

वह जिस लड़की को प्यार करता था उसको देखते ही वह कूदा और खुशी से चिल्लाया — "ओ बर्फ की लड़की, मैं तुमको सारा दिन ढूँढता रहा। मुझे अपने उन जल्दी में कहे गये शब्दों के लिये माफ कर दो। तुम तो मुझसे बहुत गुस्सा होगी न?"

बर्फ की लड़की धीरे से बोली — "नहीं लैल। वह गुस्सा नहीं था जो मेरे दिल में भरा हुआ था, वह तो प्यार था। अब मुझे पता चला कि दुनियाँ में कहीं प्यार तो है ही नहीं।"

लैल बोला — "ओ बर्फ की लड़की तो तुम्हारे भी दिल है? तुम भी मुझसे प्यार करती हो?"

बर्फ की लड़की बोली — "हाँ मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं तुमसे प्यार करना कभी नहीं छोड़ूँगी लैल, कभी नहीं।"

उसी समय उसने आसमान की तरफ देखा तो बोली — "हमको जल्दी करनी चाहिये। यारीलो की किरनें मुझे बहुत डरा रही हैं। मुझे उनसे बचा लो लैल, क्योंकि उनसे मुझे बहुत तकलीफ पहुँचती है।"

लैल कुछ गुस्सा सा हो गया क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पा रहा था कि वह बर्फ की लड़की कह क्या रही थी।

लैल बोला — "प्रिय बर्फ की लड़की, हम अपना प्यार दिन की रोशनी से हमेशा के लिये नहीं छिपा सकते।"

जब वह यह सब बोल रहा था तो सूरज की चमकती हुई किरनें आसमान में और ऊपर चढ़ती जा रही थीं। सुबह का धुँधलका गायब होता जा रहा था और जमीन पर पड़े बर्फ के आखिरी टुकड़े भी पिघलते जा रहे थे।

कि तभी सूरज की एक किरन बर्फ की लड़की पर पड़ी। दर्द से चिल्लाते हुए वह बर्फ की लड़की लैल से दूर हट गयी और फुसफुसाते हुए लैल से प्रार्थना की कि वह उसके लिये अपनी बाँसुरी आखिरी बार एक बार फिर से बजा दे।

लैल ने अपने काँपते होठों पर बाँसुरी रखी और उसे बजाना शुरू किया। जैसे ही उसने बाँसुरी बजाना शुरू किया बर्फ की लड़की की आँखों से आँसू बह निकले।

उसके चेहरे का रंग उतर गया। उसके पैर नीचे से पिघलने लगे। धीरे धीरे उसका शरीर भीगी हुई जमीन में धँसता चला गया केवल उसके सिर का लिली के फूलों का ताज ही जमीन पर रखा रह गया। बस।

धीरे से एक सफेद कोहरे का बादल उठा और उठ कर साफ आसमान में जा कर गायब हो गया।

यह देख कर लैल चिल्लाया — "ओ बर्फ की लड़की, मेरी प्यारी बर्फ की लड़की, तुमने मुझसे सूरज से अपनी रक्षा करने के लिये कहा था पर मैंने नहीं सुना और अब मेरी ऑखों के सामने सामने तुम वसन्त की आखिरी बर्फ की तरह से पिघल गयीं। मुझे माफ कर दो, ओ बर्फ की लड़की मुझे माफ करदो।"

पर उसका रोना तो किसी ने सुना ही नहीं।

किसी ने नहीं, मतलब सिवाय एक दुखी मॉ के जो लिली से भरी झील में रहती थी और दूसरे उस बूढ़े लाल नाक वाले पिता पाले ने जो दूर उत्तरी बर्फ में रहता था।

10 फ़ैनिस्ट बाज़[53]

यह लोक कथा भी रूस की एक बहुत ही मशहूर लोक कथा है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि रूस में एक बहुत ही अमीर किसान अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। कूछ दिन बाद उसकी पत्नी मर गयी तो उसकी सबसे छोटी बेटी मारूष्का[54] बोली — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये घर मैं सँभाल लूँगी।"

और वह एक अच्छी गृहस्थी सँभालने वाली साबित हुई। पर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत ही आलसी और कामचोर थीं। उनको कोई भी चीज़ बहुत देर तक खुश नहीं रख सकती थी – न तो कोई पोशाक, न कोई फ्राक, न ही कोई काफ्तान।

एक दिन वह किसान बाजार जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये।

उसकी बड़ी बेटियाँ तुरन्त बोलीं — 'पिता जी आप हम दोनों के लिये खूब बढ़िया सिल्क का शाल ले कर आना जिस पर लाल और सुनहरे रंग में फूल बने हों।"

मारूष्का चुप रही तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी तुम्हारे लिये?"

---

[53] Fenist the Falcon – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[54] Marushka – the name of the youngest daughter

मारूष्का बोली — "पिता जी, मेरे लिये तो बस फ़ैनिस्ट बाज़[55] का एक पंख लेते आइयेगा।"

यह सुन कर किसान बाजार चला गया और जब वह वहाँ से लौट कर आया तो वह अपनी दोनों बड़ी बेटियों के लिये तो दो शाल ले लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसको सारे बाजार में ढूँढने पर भी नहीं मिला।

कुछ महीने बाद वह फिर बाजार गया तो उसने फिर अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये बाजार से क्या लाये।

उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने कहा कि वह उनके लिये चाँदी के जूते ले कर आये पर मारूष्का ने धीरे से कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

उस दिन भी वह किसान सारे दिन बाजार में फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख ढूँढता रहा। वह अपनी बड़ी बेटियों के लिये चाँदी के जूते तो खरीद लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसे उस दिन भी कहीं नहीं मिला।

और एक बार फिर वह मारूष्का की मँगायी हुई चीज़ नहीं ला सका। एक बार फिर उसकी बेटी ने उसको तसल्ली दी — "पिता जी आप बहुत चिन्ता न करें आपको वह फिर मिल जायेगा।"

कुछ महीने बाद वह किसान एक बार फिर बाजार जाने लगा तो उसने अपनी बेटियों से एक बार फिर पूछा कि वह उनके लिये क्या

[55] Translated for the word "Falcon". See its picture above

ले कर आये तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये नारंगी रंग के गाउन ले कर आये।

पर जब मारूष्का से पूछा गया तो उसने वही कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

पिता बाजार चला गया। उसने अपनी बड़ी बेटियों के लिये नारंगी गाउन तो खरीद लिये पर फैनिस्ट बाज़ का पंख उसको उस दिन भी हर दूकान पर पूछने पर भी कहीं नहीं मिला।

वह बेचारा बड़ा नाउम्मीद हो कर घर लौट रहा था कि रास्ते में उसको एक बहुत ही बूढ़ा मिला। वह बूढ़ा किसान से बोला — "गुड डे भाई। तुम किधर जा रहे हो?"

किसान ने जवाब दिया — "तुमको भी गुड डे भाई। मैं बड़ा दुखी हो कर घर वापस जा रहा हूँ। मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लाने के लिये कहा था पर मुझे लाख ढूँढने पर भी वह कहीं नहीं मिला।"

वह बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। उसने अपनी जेब से बिर्च के पेड़ की छाल का एक बक्सा निकाला और उस किसान से बोला — "जो तुम्हें चाहिये वह मेरे पास है। मुझे मालूम है कि तुम्हारी बेटी इस पंख के लायक है सो यह पंख उसी का है।"

कह कर उस बूढ़े आदमी ने वह पंख बक्से के साथ उस किसान को दे दिया। वह किसान बहुत खुश हो गया।

हालॉकि किसान को वह पंख किसी दूसरे मामूली पंख जैसा ही लगा पर उसने उस पंख को ले कर उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

घर पहुॅच कर उसने अपनी तीनों बेटियों की चीज़ें उनको दे दीं। उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने अपने अपने गाउन पहन कर देखे और अपनी सबसे छोटी बहिन की हॅसी उड़ायी — "इस पंख को तो तुम अपने बालों में लगा लेना और फिर देखना तुम कितनी सुन्दर लगती हो।"

मारूष्का बस ज़रा सा मुस्कुरा दी बोली कुछ नहीं।

उस रात को जब घर में सब लोग सो गये तो मारूष्का ने बक्से में से अपना वह पंख निकाला और नीचे फर्श की तरफ उड़ा दिया। फिर वह फुसफुसायी — "मेरे पास आओ ओ फैनिस्ट, मेरे चमकीली ऑखों वाले बाज़।"

और वह पंख तुरन्त ही एक चमकीली ऑखों वाले नौजवान में बदल गया। वह नौजवान इतना सुन्दर था जितना कि सुबह का आसमान होता है।

दोनों आपस में तब तक बात करते रहे जब तक सुबह पौ नहीं फट गयी। पर पौ फटते ही वह नौजवान फर्श से टकराया और फिर से बाज़ बन गया। मारूष्का ने अपनी खिड़की खोल दी और वह बाज़ उसमें से हो कर आसमान में उड़ गया।

इस तरह उसने उस नौजवान को तीन रात बुलाया।

लेकिन चौथी रात को उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने किसी को अपनी बहिन के कमरे में बातें करते सुन लिया और सुबह को एक बाज़ को उसकी खिड़की से बाहर उड़ते देख लिया।

उस दिन दोनों खुराफाती बहिनों ने अपनी बहिन के कमरे की खिड़की पर एक बहुत ही तेज़ चाकू लगा दिया। जब रात हुई तो जब वह बाज़ वहॉ आया तो उस तेज़ चाकू से टकरा गया। उसके दोनों पंख उसकी धार से कट गये थे।

मारूष्का तो सो रही थी। वह सोती रही उसको कुछ पता ही नहीं चला।

बाज़ एक गहरी सॉस ले कर बोला — "अच्छा विदा प्रिये। अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो तो तुम मुझे फिर पा लोगी। पर मुझे पाना इतना आसान नहीं होगा।

तुमको धरती के दूसरे छोर तक जाना पड़ेगा। तुमको तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ने होंगे और तीन पत्थर की डबल रोटी खानी होंगी।"

रात के अँधेरे में किसी तरह से मारूष्का ने उसके ये शब्द सुन लिये। वह तुरन्त बिस्तर से उठी और अपनी खिड़की की तरफ भागी पर उसको देर हो चुकी थी। वह बाज़ तो जा चुका था। उसकी खिड़की पर तो बस उसके कुछ खून की बूँदें पड़ी थीं।

मारूष्का बहुत देर तक रोती रही। वह इतना रोयी कि उसके ऑसुओं में वे खून की बूँदें बह गयीं।

अगली सुबह वह अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने प्यार को ढूँढ सकूँ। मैं अपना प्यार ढूँढने जा रही हूँ।"

किसान बेचारा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि उसकी बेटी इतनी मुश्किल यात्रा पर जा रही है पता नहीं वह फिर उसको कब देख पायेगा। पर उसको मालूम था कि उसको उसे जाने देना ही चाहिये।

सो उसके आशीर्वाद से मारूष्का ने तीन लोहे के जूते बनवाये, तीन लोहे के डंडे बनवाये और तीन पत्थर की डबल रोटियॉ बनवायीं। उन सबको ले कर वह धरती के उस छोर की तरफ अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पड़ी।

वह खुले हुए मैदानों में चली, वह अँधेरे जंगलों में से हो कर गुजरी, वह उँची ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ी।

चिड़ियों ने उसको अपने गीतों से खुश रखा, नदियों ने उसके पैर धोये और अँधेरे जंगलों ने उसका स्वागत किया। किसी जंगली जानवर ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि उन सबको मालूम था कि वह एक वफादार लड़की थी।

वह तब तक चलती रही जब तक उसका एक लोहे का जूता टूटा, एक लोहे का डंडा टूटा और उसने एक पत्थर की डबल रोटी खा ली।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह में निकल आयी। वहाँ उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी। वह गोल गोल घूम रही थी और उसमें कोई खिड़की नहीं थी।

मारूष्का बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई वह झोंपड़ी घूमती घूमती रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर बाबा यागा[56] लेटी हुई थी। वह एक पतली सी स्त्री थी जिसकी लम्बी टेढ़ी नाक थी और एक दाँत था जो उसकी ठोड़ी के नीचे तक लटका हुआ था।

मारूष्का उससे डरी नहीं। उसने जादूगरनी को अपने बारे में बताया कि वह क्या करने निकली थी और उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

बाबा यागा बोली — "मेरी प्यारी बच्ची, तुमको तो अभी बहुत दूर जाना है क्योंकि फ़ैनिस्ट तो बहुत दूर रहता है।

[56] Baba Yaga – a very famous Russian folktale character, a witch, normally wicked, but sometime she helps too. Read more stories about Baba Yaga in the book "Roos Ki Baba Yaga" written in Hindi. Available from hindifolktales@gmail.com

उस देश की रानी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है जिसने तुम्हारे फैनिस्ट को एक जादू का रस पिला दिया है। उस रस के जादू के असर से उसने उसको अपने आपसे शादी करने के लिये भी राजी कर लिया है। पर मैं उसको ढूँढने में तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

लो यह लो चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा और इनको ले कर उसके महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुम को फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

उसके बाद बाबा यागा ने उसको सुनहरे धागे का एक गोला दिया और कहा कि वह उस धागे को जंगल में लुढ़काती चली जाये तो वह उसको उसकी दूसरी बहिन के पास पहुँचा देगा। वह वहाँ से उसको आगे बतायेगी कि उसको क्या करना है।"

बाबा यागा को धन्यवाद दे कर मारूष्का अपने रास्ते पर चल दी। पेड़ों ने उसका रास्ता रोक लिया, जंगल बहुत अँधेरा हो गया और उस अँधेरे में उल्लू भी बोलने लगे।

फिर भी वह चलती गयी चलती गयी जब तक कि उसका दूसरा लोहे का जूता नहीं टूट गया, दूसरा लोहे का डंडा नहीं टूट गया और उसकी पत्थर की दूसरी डबल रोटी भी खत्म नहीं हो गयी।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह पर आ गयी। वहाँ पर भी उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और वह भी गोल गोल घूम रही थी।

वहाँ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी वह घूमती हुई झोंपड़ी भी रुक गयी और उसमें खिड़कियाँ और एक दरवाजा खुल गया। मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर भी बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर एक दूसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी बहिन से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उसको उसकी बहिन के दिये हुए चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा दिखाये।

वह बोली — "बहुत अच्छे मेरी प्यारी बिटिया। मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। यह सोने की सुई और चाँदी का फ्रेम[57] ले जाओ हो सकता है कि वह रानी इनको खरीदना चाहे। पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक वह तुमको तुम्हारे फैनिस्ट से मिलने न दे।

[57] Frame – a frame of wood or iron or any metal used to keep the cloth in place to embroider it – see its picture above. In this picture it is round It may be rectanigular or square too.

मगर इससे पहले तुमको मेरी बड़ी बहिन के पास जाना पड़ेगा। इसके आगे वही तुमको बतायेगी कि तुमको क्या करना है।"

मारूष्का ने दूसरी बाबा यागा को धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गयी। उसने वह सोने के धागे वाला गोला फिर से आगे लुढ़काया और उसके पीछे पीछे पेड़ों के बीच में से हो कर चली।

इस बार पेड़ों की शाखाओं ने उसके कपड़ों की आस्तीनें फाड़ दीं, उसके चेहरे पर खरोंचें डाल दीं, चिड़ियों ने भी कोई गीत नहीं गाया और जंगली जानवर भी उसकी तरफ रास्ते भर देखते रहे। पर वह पीछे देखे बिना ही आगे बढ़ती रही।

धीरे धीरे उसके तीसरे लोहे के जूते भी फट गये, तीसरा लोहे का डंडा भी टूट गया और तीसरी पत्थर की डबल रोटी भी खत्म हो गयी।

उसी समय वह तीसरी खुली जगह में आ निकली। वहॉ भी उसको पहले जैसी एक झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और घूम रही थी।

वहॉ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई घूमती हुई वह झोंपड़ी भी यह सुन कर तुरन्त रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर तीसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी दोनों बहिनों से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी। वह बाबा यागा बोली — "फ़ैनिस्ट बाज़ को पाना आसान नहीं है, प्यारी बेटी। तुम को धरती के आखीर तक जाना पड़ेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

तुम यह चाँदी की अटेरन[58] लो और यह सोने की तकली[59] लो और इनको ले कर महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी तुमसे इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुमको तुम्हारे फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

मारूष्का ने उसको भी धन्यवाद दिया और अपना सोने के धागे वाला गोला जमीन पर लुढ़का दिया। वह धागा उसको एक बड़े डरावने जंगल में से ले कर चला।

वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि उसने किसी के चिंघाड़ने की और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी। बहुत सारे उल्लू वहाँ से उड़े और उसके चारों तरफ घूमने लगे। बहुत सारे चूहे

[58] Translated for the word "Distaff". The spun thread is kept on this. See its picture above.
[59] Translated for the word "Spindle". The cotton is spun from this. See its picture above.

उसके पैरों में इधर उधर घूमने लगे। खरगोश रास्ते पर कूदने लगे। वह डर कर रुक गयी।

तभी एक बड़ा सा भूरा भेड़िया वहाँ आ गया और मारूष्का से बोला — "डरो मत मारूष्का। आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको महल तक ले चलता हूँ।"

मारूष्का उसकी पीठ पर बैठ गयी और भेड़िया उसको सोने के धागे के गोले के पीछे पीछे हवा की तेज़ी से उड़ा कर ले चला।

घास के हरे हरे मैदान पलक झपकते निकल गये। पहाड़ जो आसमान तक ऊँचे ऊँचे थे वे भी आसानी से पार हो गये।

आखिर वे एक क्रिस्टल के महल के पास आ पहुँचे। उसका सोने का गुम्बद सूरज की रोशनी में चमक रहा था। रानी उस महल की सफेद मीनार से नीचे झाँक रही थी।

मारूष्का ने भेड़िये को धन्यवाद दिया, अपनी गठरी उठायी और मीनार के नीचे की तरफ चली। वहाँ पहुँच कर वह बहुत ही नम्रता से बोली — "योर मैजेस्टी, क्या आपको किसी ऐसी नौकरानी की जरूरत है जो सूत काते, बुनाई और कढ़ाई करे?"

रानी बोली — "ओ लड़की, अगर तुम यह तीनों काम कर सकती हो तो अन्दर आ जाओ और काम करना शुरू कर दो।"

इस तरह मारूष्का उस महल में नौकरानी का काम करने लगी।

एक दिन मारूष्का ने सारा दिन बिना रुके काम किया और जब शाम आयी तो उसने अपना सोने का अंडा और चॉदी की तश्तरी ली और रानी को दिखायी।

तुरन्त ही वह अंडा उस तश्तरी में घूमने लगा और घंटिया बजने की आवाज सुनायी देखने लगी। अचानक उस तश्तरी में रूस के सारे बड़े बड़े शहर दिखायी देखने लगे।

यह देख कर तो रानी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। वह बोली — "चॉदी की यह तश्तरी और सोने का यह अंडा तुम मुझे बेच दो।"

मारूष्का बोली — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे चमकीली ऑखों वाले फ़ैनिस्ट बाज़ से मिलने दें।"

रानी राजी हो गयी बोली — "ठीक है। आज रात को जब वह सो जायेगा तब तुम उसके कमरे में जा सकती हो।"

जब रात हो गयी तो मारूष्का फ़ैनिस्ट बाज़ के कमरे की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि फ़ैनिस्ट बाज़ तो गहरी नींद सो रहा है।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की पर वह उसको जगा नहीं सकी क्योंकि रानी ने उसकी कमीज में जादू की एक पिन लगा दी थी।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की, उसको पुकारा, उसकी गहरी काली भौंहों को चूमा, उसके पीले हाथों को सहलाया पर वह तो सोता ही रहा किसी तरह भी नहीं जागा।

सुबह जब खिड़की से सूरज की किरनें अन्दर आयीं तब तक भी जब वह अपने प्रिय फ़ैनिस्ट को नहीं जगा सकी तो उसको वहाँ से वापस आना पड़ा।

अगले दिन फिर उसने लग कर काम किया और शाम को उसने अपना चाँदी का फ्रेम और सोने की सुई निकाली। सुई ने अपना काम अपने आप करना शुरू कर दिया तो मारूष्का बुड़बुड़ायी — "तू एक ऐसा कपड़ा काढ़ जिससे वह अपनी आँखों की भौंहों को रोज सुबह साफ कर सके।"

इस बार मारूष्का ने रानी को सुई और फ्रेम दिखाया तो रानी उसको भी तुरन्त ही खरीदने के लिये कहने लगी। मारूष्का ने फिर वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार फिर से देखने दें।"

रानी फिर राजी हो गयी — "ठीक है, तुम उसको आज की रात फिर देख सकती हो।"

जब रात हुई तो मारूष्का एक बार फिर से फ़ैनिस्ट के सोने के कमरे में गयी पर वह तभी भी बहुत ही गहरी नींद सो रहा था। बहुत उठाने पर भी वह नहीं उठा।

वह बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह तो गहरी नींद ही सोता रहा क्योंकि चालाक रानी ने उसके बालों में कंघी करते समय एक जादू की पिन लगा दी थी जिसकी वजह से मारूष्का उसको लाख कोशिश करने पर भी नहीं जगा सकी। सुबह होने पर उसको अपनी कोशिश छोड़ देनी पड़ी और उसको वहॉ से आना पड़ा।

उस दिन भी उसने सारा दिन खूब लग कर काम किया और जब शाम हुई तो उसने अपनी चॉदी की अटेरन और सोने की तकली निकाली और रानी को दिखायी।

पहले की तरह से रानी ने इस बार भी उनको उससे खरीदना चाहा पर मारूष्का ने फिर से वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये चीज़ें बेचने के लिये नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार आखिरी बार फिर से देखने दें।"

रानी यह सोचते हुए फिर राजी हो गयी कि मारूष्का उसको जगाने में कामयाब नहीं हो पायेगी क्योंकि आज उसको वह जादू का रस पिला कर सुला देगी। वह बोली— "ठीक है, तुम उसको आज की रात एक बार और देख सकती हो।"

रात हुई और मारूष्का एक बार फिर आखिरी बार फ़ैनिस्ट के सोने वाले कमरे में घुसी। फ़ैनिस्ट और दिनों की तरह से आज भी गहरी नींद सो रहा था।

मारूष्का फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह नहीं जागा तो वह फिर नाउम्मीद हो कर रो पड़ी। फ़ैनिस्ट सारी रात सोता रहा और हालॉकि मारूष्का ने उसको जगाने की फिर से बहुत कोशिश की पर वह नहीं उठा।

अब सुबह होने वाली थी सो मारूष्का ने अखिरी विदा कहने और बाहर जाने से पहले उसके काले बालों में अपना हाथ फेरा कि उसका एक गर्म ऑसू उसके गालों से लुढ़क कर फ़ैनिस्ट के कन्धे पर गिर पड़ा। इससे फ़ैनिस्ट की मुलायम खाल जल गयी।

इस जलन को महसूस कर के वह हिला और उसने अपनी ऑखें खोल दीं। मारूष्का को वहॉ देख कर वह तुरन्त उठ बैठा और बोला — "अरे, क्या यह तुम हो? मेरा खोया हुआ प्यार।"

कहते कहते वह रो पड़ा। उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। "इसका मतलब यह है कि तुमने तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ दिये और तीन पत्थर की डबल रोटियॉ भी खा लीं।

तुम धरती के इस कोने तक यात्रा कर आयीं। अब हमको कोई अलग नहीं कर सकता मारूष्का, कोई नहीं।"

अब फ़ैनिस्ट का जादू टूट चुका था सो वह मारूष्का को शाही दरबार में ले गया। वहॉ दरबार ने फैसला दिया कि रानी को देश निकाला दे दिया जाये और मारूष्का को वहॉ की रानी बना दिया जाये क्योंकि वह बहुत बहादुर थी, अक्लमन्द थी और मजबूत थी।

और फिर ऐसा ही हुआ।

11 बैला और भालू[60]

एक बूढ़े पति पत्नी थे जिनके एक पोती थी जिसका नाम था बैला। हालॉकि उनका घर एक अँधेरे जंगल के पास था फिर भी उनका मकान था बहुत साफ सुथरा। हर गर्मियों में उनकी पोती बैला उनके पास उनके उस साफ सुथरे मकान में रहने के लिये आ जाती थी।

एक गर्मी के दिन उसकी दोस्तों ने उसको मैदान में जाने के लिये बुलाया ताकि वे वहॉ से मुशरूम[61] तोड़ सकें। बैला चिल्लायी — दादी, बाबा, क्या मैं खेलने जाऊँ? मैं आपके लिये बहुत सारे मुशरूम तोड़ कर लाऊँगी। मैं वायदा करती हूँ।"

वे बूढ़े पति पत्नी बोले — "हॉ हॉ बेटी, जाओ भाग जाओ। पर ज़रा ध्यान रखना कि जंगल के ज़्यादा पास मत जाना नहीं तो भेड़िये या भालू तुम्हें खा जायेंगे।"

"ठीक है।" कह कर बैला अपनी दोस्तों के साथ जंगल के किनारे वाले मैदान की तरफ भाग गयी। बैला को मालूम था कि सबसे अच्छे और सबसे बड़े मशरूम जंगल में लगे हुए पेड़ों और झाड़ियों के नीचे ही मिलते थे।

---

[60] Bella and the Bear – a folktale from Russia, Asia. Translated rrom the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[61] Mushroom are any of the several edible species of fleshy, spore-bearing fruiting body of a fungus, typically produced above ground on soil or on its food source. See its picture above.

अब क्योंकि वह यह जानती थी कि अच्छे और बड़े मुशरूम कहॉ मिलते हैं तो वह उनको लेने के लिये अपनी धुन में आगे बढ़ती हुई अपने दोस्तों से कब अलग हो गयी उसको पता ही नहीं चला।

वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ की तरफ एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की तरफ जाती रही और अपनी टोकरी बढ़िया बढ़िया मुशरूमों से भरती रही – कत्थई, सफेद, लाल, पीले।

मुशरूम इकट्ठा करते करते वह जंगल में अन्दर और और अन्दर तक चलती चली गयी... कि अचानक उसने अपने सामने देखा और उसको लगा कि वह तो खो गयी है। वह डर गयी।

डर के मारे वह चिल्लायी — "हलो ओ ओ ओ। हलो ओ ओ ओ।" पर उसके हलो का कोई जवाब ही नहीं दे रहा था।

पर कोई दूसरा था जो उसको सुन रहा था। तभी पेड़ों की पत्तियॉ में सरसराहट हुई और एक कत्थई रंग का भालू उनमें से निकल कर बाहर आ गया।

जब उसने उस छोटी लड़की को देखा तो उसने खुशी से अपनी बॉहें उसकी तरफ फैला दीं। वह बोला — "आहा, तुम तो मेरी एक बहुत अच्छी नौकरानी साबित होगी मेरी प्यारी।"

कह कर उसने उस लड़की को अपनी बॉहों में उठाया और उसको अँधेरे जंगल में अपने घर ले गया। जब वह जंगल के अन्दर पहुँच गया तो वह उस पर गुर्रा कर बोला — "चलो आग जलाओ

और मेरे लिये दलिया बनाओ। मुझे भूख लगी है। फिर मेरा घर साफ करो।"

बैला की नयी खराब ज़िन्दगी भालू के घर में इस तरह शुरू हुई। बैला इस डर से कि भालू कहीं उसको खा न ले उसके घर में रोज ही सुबह से शाम तक काम करती पर साथ में वह यह भी सोचती रहती कि वह वहॉ से किस तरह से बच कर भाग सकती है। आखिर उसके दिमाग में एक विचार आया।

एक दिन वह भालू से बड़ी नम्रता से बोली — "मिस्टर भालू, क्या मैं एक दिन के लिये अपने घर जा सकती हूॅ ताकि मैं अपने दादी बाबा को यह दिखा आऊॅ कि मैं ज़िन्दा हूॅ और ठीक हूॅ।"

भालू गुर्राया — "नहीं कभी नहीं। तुम यहॉ से कहीं नहीं जाओगी। अगर तुम्हें उनके लिये कोई सन्देश देना भी है तो वह सन्देश उनके लिये मैं खुद ले कर जाऊॅगा।"

बैला ने ठीक यही प्लान किया था।

सो उसने कुछ चैरी पाई बनायीं और उनको एक प्लेट में ऊॅचे तक सजा दिया। फिर वह एक बड़ी सी टोकरी ले आयी और भालू को बुला कर उससे कहा — "मिस्टर भालू, मैं ये पाई इस बड़ी टोकरी में रख रही हूॅ। तुम इनको मेरे घर ले जाओ और मेरे दादी बाबा को दे देना। और उनसे कहना कि ये पाई आपकी बेटी ने आपके लिये भिजवायी हैं।

पर याद रखना कि इस टोकरी को तुम रास्ते में खोलना नहीं और इन पाई को तो तुम छूना भी नहीं। मैं इस मकान की छत से तुमको देखती रहूँगी।"

भालू बोला — "ठीक है ओ सुन्दर लड़की। पर जाने से पहले मैं ज़रा सा सो लूँ।"

जैसे ही भालू सोया बैला जल्दी से घर की छत पर चढ़ गयी। वहाँ जा कर उसने एक लट्ठे की अपनी जैसी एक मूर्ति बनायी और उसको वहाँ खड़ा कर के उसको अपना कोट और स्कार्फ पहना दिया।

यह सब कर के वह नीचे आ गयी। फिर वह उस टोकरी में बैठ गयी जिसमें उसने पाई रखी थीं और पाई की प्लेटें अपने सिर पर रख ली।

जब भालू सो कर उठा तो उसने देखा कि पाई की टोकरी तैयार थी। उसने उस टोकरी को अपनी चौड़ी पीठ पर रख लिया और गॉव की तरफ चल दिया।

वह पेड़ों के बीच से हो कर चलता जा रहा था। बोझ की वजह से वह लड़खड़ा कर चल रहा था सो वह उसकी वजह से थक भी बहुत जल्दी गया।

वह एक पेड़ के टूटे हुए तने के पास रुक गया और आराम करने के लिये वहाँ बैठ गया।

उसको लगा कि पहले वह उस टोकरी में से एक पाई खाले तब वह आगे जायेगा पर जैसे ही वह टोकरी खोलने वाला था कि उसको बैला की आवाज सुनायी पड़ी — "तुम वहाँ सारे दिन मत बैठो मिस्टर भालू और पाई तो तुम बिल्कुल छूना भी मत।"

भालू ने इधर उधर देखा तो उसको अपने घर की छत पर केवल बैला की मूर्ति ही दिखायी दी। वह बोला — "ओह इस लड़की की ऑखें तो बहुत तेज़ हैं।"

वह उठा और फिर चल पड़ा। वह अपना वह भारी बोझ ले कर फिर चलता गया चलता गया। जल्दी ही वह एक दूसरे कटे हुए पेड़ के तने के पास आ गया।

बोझे से थके हुए उसने सोचा कि अब तो मैं अपने घर से काफी दूर आ गया हूँ अब वह लड़की मुझे नहीं देख पायेगी सो मैं यहाँ थोड़ी देर आराम करता हूँ और एक पाई खाता हूँ। सो वह वहीं बैठ गया।

जैसे ही वह पाई की टोकरी खोलना चाहता था कि एक बार फिर बैला की आवाज सुनायी पड़ी — "बैठो नहीं। और हाँ पाई तो बिल्कुल छूना भी नहीं। जैसा कि मैंने तुमसे कहा था सीधे मेरे गाँव जाओ और ये पाई मेरे दादी बाबा को दे कर आओ।"

भालू ने फिर पीछे देखा पर इस बार तो उसको अपना घर भी दिखायी नहीं दिया। उसने फिर वही सोचा कि इस लड़की की ऑखें

तो बहुत ही तेज़ हैं पर यह देख कहॉ से रही है। सो वह फिर चल दिया।

पेड़ों के बीच से होता हुआ, घाटी में से गुजरता हुआ, घास के मैदानों को पार करता हुआ आखिर वह एक बड़े से घास के मैदान में आ निकला।

अब तक वह बहुत थक गया था। उसने सोचा "मुझे यहॉ अपने थके हुए पैरों को कुछ आराम जरूर देना चाहिये और मुझे अब भूख भी बहुत लगी है सो मैं एक पाई भी खा लेता हूँ और यहॉ तो वह मुझे देख भी नहीं पायेगी क्योंकि अब तो मैं अपने घर से बहुत दूर आ गया हूँ।"

पर यहॉ भी उसको दूर से एक आवाज आती सुनायी दी — "मिस्टर भालू, मैं तुम्हें यहॉ से देख रही हूँ। और उन चैरी पाई को छूने की तो तुम हिम्मत भी नहीं करना। चलते जाओ बस चलते जाओ।"

इस बार भालू कुछ परेशान हो गया और डर भी गया। वह फिर गुर्राया "इसकी ऑखें कितनी तेज़ हैं, उफ़।" और फिर आगे चल दिया।

चलते चलते आखिर वह बैला के गॉव आ पहुँचा। वहॉ जा कर उसने बैला के घर का दरवाजा खटखटाया — "दरवाजा खोलो मैं आपके लिये आपकी पोती की तरफ से कुछ भेंट ले कर आया हूँ।"

जैसे ही बैला के दादी बाबा ने यह सुना तो वे दरवाजा खोलने भागे। उधर भालू की आवाज सुन कर गॉव भर के कुत्ते वहॉ भौंकते हुए आ गये।

कुत्तों के भौंकने से वह भालू इतना डर गया कि उसने वह टोकरी तो वहीं दरवाजे पर छोड़ी और बिना पीछे देखे सीधा जंगल की तरफ भाग गया।

जब बैला के दादी बाबा ने दरवाजा खोला तो उनको तो यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक टोकरी उनके दरवाजे पर रखी थी और वहॉ कोई भी नहीं था।

बैला के बाबा ने टोकरी का ढक्कन उठाया और उसमें अपनी ऑखें गड़ा कर देखा तो उनको बड़ी मुश्किल से अपनी ऑखों पर विश्वास हुआ कि चैरी पाई के नीचे उनकी छोटी सी पोती ज़िन्दा और ठीक ठाक बैठी थी।

बैला के दादी बाबा दोनों खुशी से नाच उठे। उन्होंने बैला को टोकरी में से निकाल कर गले लगा लिया और उसकी होशियारी की बहुत तारीफ की कि किस तरह वह उस भालू को चकमा दे कर अपने घर वापस आ गयी थी।

जल्दी ही यह खबर बैला की दोस्तों को भी मिल गयी सो वे भी वहीं आ गयीं। उन्होंने भी बैला को गले लगाया। बैला भी भालू के चंगुल से छूट कर बहुत खुश थी।

इस बीच भालू घने जंगल में से हो कर अपने घर पहुँचा और ऊपर छत पर जा कर उस मूर्ति पर चिल्लाया कि वह उसके लिये चाय बनाये।

पर उसको यह जानने में बहुत देर नहीं लगी कि वह बैला नहीं बल्कि उसकी मूर्ति थी और बैला तो उसको चकमा दे कर उस टोकरी में बैठ कर निकल गयी थी।

12 गुलाबी सेब और सोने का कटोरा[62]

एक बार एक बूढ़े पति पत्नी अपनी तीन बेटियों के साथ रहते थे। उनकी दोनों बड़ी बेटियॉ तो बहुत ही बेरहम और आलसी थीं पर उनकी सबसे छोटी बेटी तान्या[63] बहुत ही शान्त और सीधे स्वभाव की थी।

उनकी दोनों बड़ी बेटियॉ आलसी तो थी हीं पर साथ में वे बेवकूफ भी बहुत थीं। वे सारे दिन घर में बैठी रहतीं जबकि तान्या सारे दिन सुबह से शाम तक घर और बागीचे में काम करती रहती।

एक दिन उनके पिता को भूसा ले कर उसको बेचने के लिये बाजार जाना था तो उसने अपनी तीनों बेटियों से कहा कि वह वहॉ से उन सबके लिये कुछ न कुछ ले कर आयेगा।

तो उसकी बड़ी बेटी बोली — "पिता जी आप मेरे लिये सिल्क का कपड़ा ले कर आइयेगा।"

उसकी दूसरी बेटी बोली — "पिता जी मेरे लिये आप लाल मखमल का कपड़ा ले कर आइयेगा।"

पर तान्या कुछ नहीं बोली तो उसके पिता ने पूछा — "और तान्या तुम्हारे लिये? तुम्हारे लिये मैं क्या लाऊॅ?"

---

[62] The Rosy Apple and the Golden Bowl – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[63] Tanya – name of the youngest daughter

तान्या बोली — "एक गुलाबी सेब और एक सोने का कटोरा।"

यह सुन कर उसकी बड़ी बहिनें बड़ी ज़ोर से हॅसीं और बोलीं — "अरे तुम कितनी बेवकूफ हो। हमारे घर में तो कितना बड़ा सेब का बागीचा है। तुमको जितने चाहिये उतने सेब तोड़ लो। फिर तुम पिता जी से सेब क्यों मॅगवा रही हो?

और जहॉ तक कटोरे का सवाल है वह तुम्हें किस लिये चाहिये? क्या करोगी तुम उसका? क्या तुम उसमें बतख को खाना खिलाओगी?"

"नहीं मेरी बहिनों। मैं सेब को कटोरे में लुढ़काऊॅगी और कुछ जादू के शब्द बोलूॅगी। एक बार मैंने एक भिखारिन को एक केक दिया था तो उसने मुझे वे शब्द बताये थे।"

यह सुन कर उसकी बहिनें अबकी बार और ज़ोर से हॅस पड़ीं। उनकी हॅसी की आवाज सुन कर उनका पिता वहॉ आ गया और बोला — "बस बस काफी हो गया। मैं तुम सबके लिये तुम्हारी पसन्द की चीज़ें ले कर आऊॅगा।"

कह कर वह बूढ़ा बाजार चला गया। उसने अपना भूसा बेचा, अपनी तीनों बेटियों के लिये उनकी पसन्द की चीज़ें खरीदीं और घर वापस आ गया।

दोनों बड़ी बहिनें अपनी अपनी चीज़ें देख कर बहुत खुश थीं। वे तुरन्त ही उन कपड़ों की अपनी पोशाक बनाने बैठ गयीं और अपनी छोटी बहिन के साथ मजाक भी करती रहीं।

वे तान्या से बोलीं — "तुम यहॉ बैठो हमारे पास और इस कटोरे में अपना सेब लुढ़काओ।"

तान्या एक कोने में चुपचाप बैठ गयी और अपना सेब उस सोने के कटोरे में लुढ़काने लगी और फुसफुसा कर गाने लगी —

ओ गुलाबी सेब लुढ़क लुढ़क, मेरे छोटे से सोने के कटोरे में लुढ़क
मुझे घास के मैदान और समुद्र दिखा, और जंगल और खेत दिखा
और इतने ऊॅचे पहाड़ दिखा, जो आसमान तक जाते हों

अचानक घंटियॉ बजनी शुरू हो गयीं और सारा मकान रोशनी से भर गया। वह गुलाबी सेब उस सोने के कटोरे में चारों तरफ घूम रहा था।

तभी उस कटोरे में उसको समुद्र और घाटियॉ, मैदानों में तलवार और ढाल लिये हुए सिपाही, घास के मैदान, समुद्र पर पानी के जहाज़, ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ जो आसमान को छू रहे थे दिन की तरह से साफ दिखायी देने लगे।

उस सबको देख कर उसकी दोनों बड़ी बहिनों को तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। पर उस समय उनके दिमाग में

केवल एक ही विचार आया कि वे किसी तरह से अपनी छोटी बहिन से वह गुलाबी सेब और सोने का कटोरा ले लें।

पर तान्या की ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि वह उनमें से किसी से भी अपनी चीज़ बदले। वह अपने उस गुलाबी सेब और सोने को कटोरे को एक पल के लिये भी अपनी ऑखों से ओझल नहीं होने देती थी और रोज शाम को उनसे खेलती थी।

तान्या की बड़ी बहिनें इन्तजार करते करते थक गयीं तो एक दिन उन लड़कियों ने उसको जंगल ले जाने का निश्चय किया।

उन्होंने उससे कहा — "चलो न हमारी अच्छी बहिन। चलो आज जंगल चलते हैं और वहॉ से कुछ बैरीज़[64] और फूल तोड़ कर लाते हैं।"

पर वहॉ तो कोई बैरीज़ थी ही नहीं और न ही कोई फूल थे सो तान्या ने अपना गुलाबी सेब और सोने का कटोरा निकाला और धीरे से गाया —

ओ गुलाबी सेव लुढ़क लुढ़क, मेरे छोटे से सोने के कटोरे में लुढ़क
मुझे लाल स्ट्रौबैरी दिखा और नीले कौर्न फूल[65] दिखा
पौपीज़ डेज़ी और वौयलेट भी दिखा

[64] Berries are wild fruits with or without tones, such as straw berries, black berries, blue berries etc. See their picture above.

[65] Blue cornflower is a kind of flower. See its picture above.

तुरन्त ही घंटियॉ बजने लगीं और उसमें लाल स्ट्रौबैरीज़, नीले कौर्न फूल, पौपीज़, डेज़ी और वौयलेट के फूल प्रगट हो गये।

तान्या की दोनों बेरहम बहिनें पहले तो उसको देखती रहीं पर जल्दी ही उनके चेहरे पर एक नीच किस्म की चमक आयी।

उनकी बहिन चुपचाप एक लट्ठे पर बैठी अपने कटोरे की तरफ देख रही थी कि उन्होंने एक चाकू लिया और उसको मार कर एक सफेद बिर्च के पेड़ के नीचे दफना दिया।

फिर उन्होंने वह गुलाबी सेब और सोने का कटोरा उठा कर अपने पास रख लिया।

वे बैरीज़ और फूलों से भरी हुई टोकरियॉ ले कर जब घर पहुॅचीं तो शाम हो गयी थी। उन्होंने अपने माता पिता से कहा कि तान्या उनको छोड़ कर भाग गयी थी और बहुत ढूॅढने पर भी वह उनको नहीं मिली। शायद कोई भेड़िया या भालू उसको खा गया होगा।

यह सुन कर उनकी मॉ तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी पर उनके पिता ने कहा — "सेब को कटोरे में लुढ़काओ तो हो सकता है कि हम उसमें देख सकें कि वह कहॉ है।"

यह सुन कर दोनों बहिनें तो डर के मारे बिल्कुल ठंडी पड़ गयीं पर उनको वैसा करना पड़ा जैसा उनके पिता ने उनसे कहा था।

जब उन्होंने सेब को उस कटोरे में लुढ़काया तो वह उसमें नहीं लुढ़का और कटोरा भी नहीं घूमा। यह देख कर उन नीच बहिनों ने चैन की सॉस ली।

कुछ दिनों बाद एक नौजवान चरवाहा उस जंगल में अपनी एक खोयी हुई भेड़ ढूँढ रहा था कि वह उसी सफेद बिर्च के पेड़ के नीचे आ पहुँचा जिसके नीचे तान्या को दफन किया गया था।

उस पेड़ के नीचे मिट्टी का एक ताजा ढेर बना हुआ था और उसके चारों तरफ नीले रंग के कौर्न फूल लगे हुए थे। लम्बे पतले सरकंडे[66] भी फूलों के बीच में से निकल रहे थे।

उसने उन सरकंडों में से एक सरकंडा काट लिया और उसका बजाने के लिये एक पाइप बना लिया। जैसे ही उसने वह पाइप मुँह से लगाया तो वह तो अपने आप ही बजने लगा उसको उसे बजाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। उसने गाया —

बजो पाइप बजो ताकि मेरे पिता सुन सकें
बजो पाइप बजो ताकि मेरे पिता खुश हो जायें
मुझे मेरी बहिनों ने मार डाला, मैं सफेद बिर्च के पेड़ के नीचे लेटी हुई हूँ

[66] Translated for the word “Reeds”. See its picture above.

जब यह खबर तान्या के पिता के पास पहुँची तो उसने उस चरवाहे से उसको उस जगह ले जाने के लिये कहा जहाँ से उसने वह सरकंडा तोड़ा था।

वह नौजवान चरवाहा उसको जंगल में उस सफेद बिर्च के पेड़ के पास ले गया जहाँ से उसने वह सरकंडा काटा था, जिसके नीचे वह मिट्टी का ढेर बना हुआ था, और जहाँ नीले कौर्न फूल उग रहे थे।

दोनों ने मिल कर उस मिट्टी के ढेर को खोदा तो उनको एक उथली कब्र में तान्या का मरा हुआ ठंडा शरीर मिल गया। वह वहाँ लेटी हुई अभी भी उतनी ही सुन्दर लग रही थी जितनी पहले थी। वह ऐसी लग रही जैसे शान्ति से सो रही थी।

अचानक उस पाइप ने अपने आप ही गाना शुरू किया —

बजाओ पाइप बजाओ खुशी और दुख के गीत सुनो पिता जी सुनो जो में कहती हूँ
मैं तुमसे वह सब कहूँगी जो मुझे कहना है, अगर तुम शाही कुँए से पानी ले आओ

यह सुन कर दोनों बहिनें तो काँपने लगीं और पीली पड़ गयीं। वे अपने घुटनों पर गिर गयीं और उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। पर बिना किसी से कोई शिकायत किये हुए तान्या का पिता शाही कुँए से पानी लाने चले गया।

जब वह शाही महल पहुँचा तो उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और अपनी बेटी को ज़िन्दा करने के लिये उससे उसके कुँए

का पानी माँगा। राजा ने उसकी कहानी सुन कर उसको पानी ले जाने की इजाज़त दे दी।

जब वह पानी ले कर अपनी बेटी के पास लौटा तो उसने वह पानी उसकी भौंहों पर छिड़का। तुरन्त ही तान्या हिली, उसने अपनी आँखें खोलीं और उठ कर अपने माता पिता के गले लग गयी।

वह अभी भी वसन्त के फूल की तरह से ताजा थी। उसकी आँखें अभी भी सूरज की किरनों की तरह से चमक रही थीं। उसका चेहरा अभी इतना सुन्दर था जितना कि सुबह के समय का आसमान। उसके गालों पर उसके आँसू मोती की तरह चमक रहे थे।

राजा ने उसकी नीच बहिनों को बुलवाया और वह उनको मौत की सजा देने ही वाला था कि तान्या ने प्रार्थना कर के उनको माफ करवा दिया। पर फिर भी राजा ने उन दोनों को एक अलग टापू पर भेज दिया जो वहाँ से बहुत दूर था।

तान्या ने उस नौजवान चरवाहे से शादी कर ली जिसने सबसे पहले सफेद बिर्च के पेड़ के नीचे उसकी कब्र ढूँढी थी। उसके बाद से वह जंगल "पवित्र जंगल" कहलाने लगा।

13 फायरबर्ड[67]

रूस के कोहरे भरे पहाड़ों के पीछे समुद्र के ऊपर एक राजा रहता था। उसके पास सेब का एक बागीचा था जो उसको बहुत प्यारा था क्योंकि उस बागीचे में एक सुनहरे सेब का पेड़ खड़ा था।

एक बार एक चोर आया और रात में उस पेड़ से कुछ सेब चुरा कर ले गया।

राजा यह जान कर बहुत परेशान हुआ। उस रात उसने अपनी घुड़साल के रखवाले इवान को उस सेब के पेड़ की रखवाली करने के लिये कहा।

आधी रात गुजर गयी पर कुछ नहीं हुआ। पर उसके बाद अचानक ही वहॉ इतना उजाला हो गया जैसे दिन निकल आया हो। घुड़साल के रखवाले उस लड़के इवान ने ऊपर की तरफ उस सेब के पेड़ में देखा तो उसको वहॉ एक फायरबर्ड[68] दिखायी दी। वह सेब के फलों में अपनी चोंच मार रही थी।

---

[67] The Firebird – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[68] In Slavic folklore, the Firebird is a magical glowing bird from a faraway land, which is both a blessing and a bringer of doom to its captor. The Firebird is described as a large bird with majestic plumage that glows brightly emitting red, orange, and yellow light, like a bonfire that is just past the turbulent

इवान ने तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ कर उस फायरबर्ड की पूँछ पकड़ ली। पर उसने अपने आपको इवान के हाथों से छुड़ा लिया और उड़ गयी। मगर इवान के हाथ में उसका एक पंख रह गया।

अगली सुबह को इवान ने राजा को अपना इनाम दिखाया तो राजा का पूरा कमरा उस पंख की रोशनी से जगमगा रहा था।

राजा बोला — "इवान, तुम उस फायरबर्ड को पकड़ कर लाओ और साथ में चोर को भी पकड़ो।"

इवान ने राजा से झुक कर विदा ली, कुछ डबल रोटी, चीज़ और बीयर ली और चल दिया – पर वह नहीं जानता था कहाँ।

वह एक जंगल में घूम रहा था कि अचानक एक भूरे रंग का भेड़िया वहाँ आ गया। वह इवान से बोला — "आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं चोर पकड़ने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

इवान उसकी पीठ पर बैठ गया तो वह भेड़िया हवा की तेज़ी से उड़ गया। पलक झपकते मैदान भागे जा रहे थे, झीलें भी बड़ी तेज़ी से गुजरती जा रही थीं। पल भर में ही वे एक पहाड़ी पर खुली हुई जगह पर आ पहुँचे जहाँ धूप चमक रही थी।

यहाँ आ कर भेड़िया बोला — "अब तुम वह सुनो जो मैं कहता हूँ। तुम अपनी डबल रोटी और चीज़ को बीयर में मिला लो और

---

flame. The feathers do not cease glowing if removed, and one feather can light a large room if not concealed. In later iconography, the form of the Firebird is usually that of a smallish fire-colored peacock, complete with a crest on its head and tail feathers with glowing "eyes".

उसको जमीन पर बिखेर दो। फिर तुम किसी पेड़ के पीछे छिप जाओ।"

इवान ने वैसा ही किया। डबल रोटी और चीज़ बीयर में मिला कर और उसको जमीन पर बिखेर कर वह और भेड़िया दोनों एक पेड़ के पीछे छिप गये।

धीरे धीरे अँधेरा होने लगा तो वह जगह रोशनी से चमकने लगी। वहाँ कई फायरबर्ड आ रही थीं। वे उस बीयर में भीगी हुई डबल रोटी पर आ कर बैठ गयीं और उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगीं।

इवान पेड़ के पीछे खड़ा खड़ा यह सब देख रहा था। फायरबर्ड उसके अपने घर के मुर्गों से चार गुनी बड़ी थीं और उनकी पूँछें हजारों आग की चमक से भी ज़्यादा तेज़ चमक रही थीं।

वह धीरे धीरे उनके पीछे आया और जल्दी से उनमें से एक फायरबर्ड को उसकी पूँछ से पकड़ लिया। उसको उसने एक थैले में डाला और उस भेड़िये की पीठ पर बैठ गया। वे फिर हवा की तेज़ी से उड़ चले।

वे राजा के पास आये तो इवान ने अपना थैला राजा के पैरों के पास फर्श पर रख दिया और उसका मुँह खोला। थैले को खोलते ही कमरे में रोशनी की एक बाढ़ सी आ गयी। उस रोशनी को देखते ही राजा डर गया और उसने अपनी आँखें कस कर बन्द कर लीं।

वह चिल्लाया — "ओह हम तो आग से जले जा रहे हैं इवान। जल्दी से आग बुझाने वाले को बुलाओ।"

इवान हॅसा और बोला — "राजा साहब, यह आग नहीं है। मैं फायरबर्ड ले कर आया हूॅ।"

राजा अपने हाथ की उॅगलियों के बीच में से देखते हुए बोला — "ओ मेरे प्यारे बेटे, तुम ठीक कह रहे हो। बहुत बहुत धन्यवाद।"

पर राजा अपने ही इस कहे हुए से सन्तुष्ट नहीं था शायद इवान ही दोबारा उसको यह विश्वास दिला सकता था कि वहॉ कोई आग नहीं थी।

राजा को परियों की कहानियॉ बहुत पसन्द थीं तो उसने एक राजकुमारी के बारे में सुना था, वह थी सुन्दर येलैना[69]। वह समुद्र के उस पार रहती थी।

राजा ने इवान से कहा — "एक राजकुमारी है जो समुद्र के उस पार रहती है। तुम उसको ले कर आओ मैं उससे शादी करूॅगा।"

इवान ने राजा को सिर झुका कर विदा कहा और फिर अपने उसी भूरे भेड़िये के पास गया और उसको राजा का हुक्म सुनाया।

भूरा भेड़िया बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

---

[69] Yelena – name of the fairy tale princess. She has been also mentioned in the folktale entitled "Mendhak Rajkumari" also written in this book.

इवान उस भेड़िये की पीठ पर बैठ गया और वह भेड़िया हवा की तेज़ी से उड़ चला।

इवान उसकी गर्दन को कस कर पकड़े हुए था। वे कितनी देर तक उड़ते रहे यह तो मैं नहीं बता सकता पर कुछ ही देर में वे समुद्र के उस पार परियों की कहानी वाले महल के पास आ पहुँचे।

भेड़िया बोला — "अब तुम सब मेरे ऊपर छोड़ दो।"

इवान बाहर एक ओक के पेड़ के पास बैठ गया और भेड़िया उस महल की दीवार के ऊपर कूद गया और तुरन्त ही येलैना को अपनी पीठ पर बिठाये हुए वापस आ गया।

भेड़िया इवान से बोला — "अब तुम राजकुमारी के पीछे बैठ जाओ और देखो मुझे कस कर पकड़े रहना।"

भेड़िया फिर चल दिया और जल्दी ही वे राजा के महल आ पहुँचे पर इससे पहले कि वे चोरी की गयी दुलहिन को राजा को देते इवान ऑखों में ऑसू भर कर बोला — "ओ बड़े भूरे भेड़िये। मैं तो खुद इस येलैना के प्रेम में पड़ गया हूँ और वह भी मुझसे प्रेम करने लगी है। अब हम क्या करें?"

भेड़िया बोला — "यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं अपने आपको येलैना की शक्ल की राजकुमारी के रूप में बदल लेता हूँ फिर तुम मुझे राजा को दे देना।"

भेड़िये ने अपनी एड़ी पर अपने शरीर को घुमाया और अपना पीछे का हिस्सा आगे की तरफ घुमाया और लो वह तो येलैना की

शक्ल में खड़ा था। तुरन्त ही इवान उस भेड़िया राजकुमारी को बूढ़े राजा के पास ले गया।

राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने कुलीन लोगों को अपनी नयी रानी की राजतिलक की रस्म में बुलाया। पर जैसे ही वह अपनी नयी दुलहिन को चूमने के लिये गया तो उसके होठों ने तो बड़े भूरे भेड़िये के होठों को छुआ।

राजा के लिये तो यह धक्का बहुत बड़ा था। वह तो वहीं का वहीं मर गया। भेड़िया वहॉ से भाग निकला।

इतने में येलैना खुद इवान का हाथ पकड़े वहॉ आयी और वहॉ बैठे सब लोगों से बोली — "क्योंकि मैं अब आप सबकी रानी हूँ मैं इवान को राजा घोषित करती हूँ।"

राजा बन जाने के बाद इवान ने सुन्दर येलैना से शादी कर ली और वे बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

और जहॉ तक फायरबर्ड का सवाल है – तुम्हें पता है कि उसका क्या हुआ? उन लोगों ने उसको आजाद कर दिया और वह उड़ गयी और फिर कभी सेबों को या डबल रोटी को या फिर चीज़ को कुतरने नहीं आयी।

14 मेंढकी राजकुमारी[70]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया, अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

---

[70] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.
[A similar story is told in India too in which the prince's arrow is caught by a female monkey, instead of a female frog, and he has to marry her. Read this story in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" under the title "Bandariya Dulhaniya" available in Hindi language from hindifolktales@gmail.com .]

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहाँ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[71] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊँचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूँढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुँह में पकड़ा हुआ था।

जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस माँगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूँगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

[71] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियॉ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियॉ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से कूद कर बाहर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी हुए एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला — "अरे, इस कमीज को तो कोई बर्तन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा —

"ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा से ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहॉ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियॉ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियॉ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियॉ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुॅह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे बाद में आऊँगी।

जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियाँ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी जिस पर

चॉदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चॉद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों को ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[72] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुकुम दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

[72] Translated for the word “Swan”.

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया? अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[73] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[74] में से हो कर जाना पड़ेगा।"

यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और वह पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह जंगल के एक खुले हिस्से में घूम रहा था तो वहाँ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टाँगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

[73] Translated for the words "One Score and Nine"

[74] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी कर के अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहाँ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी माँ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि वह मेंढकी "अक्लमन्द येलैना"[75] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी चौदहवीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

[75] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Ruasia. She is mentioned in "Firebird" story published in this book.

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[76] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई मार नहीं सका है।

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[77] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

[76] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess
[77] Oak tree is a very large shady tree.

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहाँ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया। वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[78] मिला।

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहाँ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

[78] Translated for the word "Drake"

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[79] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊँचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुँचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहाँ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

तभी वह भेंगा खरगोश वहाँ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश

[79] Pike fish is a large size fish

ने उस खरगोश को फाड़ा उसमें से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख जिसकी ज़िन्दगी इवान ने बख्शी थी उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा।

यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है। राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलैना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहॉ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक

पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

15 लालची बुढ़िया[80]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा और एक बुढ़िया थे। दोनों ही किसान थे। एक दिन बूढ़ा लकड़ी काटने के लिये जंगल गया तो वहॉ उसे एक बहुत पुराना पेड़ दिखायी दिया तो उसने उसे काटने का निश्चय किया।

जैसे ही वह उस पर कुल्हाड़ी चलाने वाला था कि वह पेड़ बोला — "ओ बूढ़े मेरी जान बख्श दो। जो भी तुम्हारी इच्छा होगी मैं तुम्हारी वह सब इच्छाऐं पूरी करूँगा।"

बूढ़ा बोला — "तो ठीक है। तुम मुझे अमीर बना दो।"

पेड़ बोला — "ठीक है तुम घर जाओ और तुम देखोगे कि घर पर हर वह चीज़ तुम्हारा इन्तजार कर रही है जो तुम चाहते हो।"

यह सुन कर बूढ़ा अपने घर लौट गया। लो। वहॉ तो उसकी पुरानी झोंपड़ी की बजाय एक नया मकान खड़ा हुआ था और उसमें उसके ऐशो आराम की हर चीज़ मौजूद थी।

वहॉ उसमें उसके पास इतना पैसा था कि वह उसमें से चाहे जितना फूँक सकता था। उसके और उसकी पत्नी के लिये बीसियों बरसों के लिये बहुत सारा आटा था।

---

[80] The Greedy Old Woman. Taken from the book "The Three Kingdoms: Russian Folktales." Moscow : Raduga Publishers. 1985.
https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/61r.pdf

उसके पास वहाँ इतनी सारी गायें घोड़े और भेड़ें थे कि उनको गिनने में ही उसको तीन दिन से ज़्यादा लगते। बुढ़िया ने बूढ़े से पूछा — "तुम्हें ये सब चीज़ें मिली कहाँ से?"

बूढ़ा बोला — "आज मुझे एक पेड़ मिल गया जिसने मुझसे यह कहा कि वह मुझे वह सब देगा जो मैं चाहूँगा।"

दोनों को अपने इस नये वातावरण में रहते हुए लगभग एक महीना बीत गया। बुढ़िया अब अपनी इस अमीर ज़िन्दगी से ऊब चुकी थी।

एक दिन बुढ़िया बूढ़े से बोली — "हमारी इस अमीरी का क्या फायदा अगर कोई हमारी इज़्ज़त नहीं करता तो। अगर मालिक का नौकर चाहे तो वह हमसे बहुत मुश्किल काम ले सकता है और अगर ऐसा कुछ है जो वह नहीं चाहता तो हमें डॉट देता है। तुम ऐसा करो कि तुम उस पेड़ के पास जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें सेनापति बना दे।"

बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और जंगल चल दिया। वहाँ जा कर वह उस पेड़ के पास पहुँचा और उसे काटने ही वाला था कि पेड़ ने पूछा — "बूढ़े तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "मुझे सेनापति बनवा दो।"

पेड़ बोला — "ठीक है। घर जाओ। भगवान तुम्हारी सहायता करें।"

यह सुन कर वह घर वापस चला गया।

लो अगले ही दिन उसे सेनापति के काम पर रख लिया। उसके नीचे काम करने वाले सिपाही उससे गॉव में अपने लिये मकान खोजने के लिये कह रहे थे। वे चिल्ला रहे थे — "ओ शैतान तुम अब तक कहॉ घूम रहे थे? हमारे लिये घर खोजो और वे भी अच्छे अच्छे। चलो जल्दी करो।"

कह कर वे गुस्से में भर कर उसकी ओर चारों ओर से पीटने के लिये दौड़े। यह देख कर कि सेनापति को जो इज़्ज़त मिलनी चाहिये वह उसे नहीं मिल रही है बुढ़िया ने कहा — "ऐसे सेनापति होने से क्या फायदा जिसमें इज़्ज़त ही न मिले। सिपाहियों ने तो तुम्हें पीट ही दिया।

अगर तुम मकान मालिक बन जाओ तो कैसा रहे। मकान मालिक तो अपने साथ जो चाहे वह कर सकता है। अबकी बार जा कर तुम पेड़ से कहो कि वह तुम्हें मकान मालिक बना दे।"

अगले दिन बूढ़े ने फिर से अपनी कुल्हाड़ी उठायी और फिर से जंगल में उसी पेड़ को काटने जा पहुॅचा। जैसे ही वह उस पेड़ को काटने वाला था तो पेड़ ने पूछा — "बूढ़े अब तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "मुझे मकान मालिक बना दो।"

पेड़ बोला — "ठीक है। घर जाओ भगवान तुम पर दया करें।"

यह सुन कर किसान घर लौट गया लो अब तो वह मकान मालिक बन गया।

अब उनकी ज़िन्दगी आराम से निकलने लगी। कुछ दिन तक आराम की ज़िन्दगी बिताने के बाद बुढ़िया को लगा कि अब उसे कुछ और चाहिये।

सो कुछ दिन बाद वह बूढ़े से बोली — "इस आराम की ज़िन्दगी से क्या फायदा। अगर तुम कर्नल बन जाते तो कितना अच्छा रहता। हर आदमी हमसे जलता।"

सो उसने बूढ़े से फिर से उस पेड़ के पास जाने के लिये कहा और कहा कि वह पेड़ से कहे कि वह उसे कर्नल बना दे। अगले दिन फिर से बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में उसी पेड़ के पास चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर वह पेड़ को काटने ही वाला था कि पेड़ ने पूछा — "बूढ़े अब तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "मैं अब कर्नल बनना चाहता हूॅ।"

पेड़ बोला — "ठीक है। तुम कर्नल बन जाओगे। अब जाओ भगवान तुम पर दया करें।" बूढ़ा घर वापस चला गया और लो वह तो अब कर्नल बन गया।

कुछ समय बाद बुढ़िया बोली — "उॅह कर्नल होना कोई बड़ी बात नहीं है। अगर वह चाहे तो तुम जनरल के गार्डहाउस में रह सकते हो। तुम फिर से पेड़ के पास जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें जनरल बना दे।"

अगले दिन फिर से बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में उसी पेड़ के पास चल दिया। वहाँ पहुँच कर वह पेड़ को काटने ही वाला था कि पेड़ ने पूछा — "बूढ़े अब तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "मैं अब जनरल बनना चाहता हूँ।"

पेड़ बोला — "ठीक है। तुम जनरल बन जाओगे। अब जाओ भगवान तुम पर दया करें।" बूढ़ा घर वापस चला गया और लो वह तो अब जनरल बन गया।

कुछ और समय बीता। बुढ़िया जो केवल जनरल बनने से ही सन्तुष्ट नहीं थी। एक दिन बूढ़े से बोली — "जनरल बनना ही काफी नहीं है। तुमको तो राजा होना चाहिये। एक राजा अगर वह चाहे तो किसी को भी साइबेरिया तक भेज सकता है। सो एक बार पेड़ के पास फिर जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें राजा बना दे।'

सो एक बार फिर बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में उसी पेड़ के पास चल दिया। वहाँ पहुँच कर वह पेड़ को काटने ही वाला था कि पेड़ ने पूछा — "बूढ़े अब तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "मैं अब राजा बनना चाहता हूँ।"

पेड़ बोला — "ठीक है। तुम राजा बन जाओगे। अब जाओ भगवान तुम पर दया करें।" बूढ़ा घर वापस चला गया और लो वह तो अब राजा बन गया।

वहाँ उसके लिये बहुत सारे लोग उसे महल के अन्दर ले जाने के लिये खड़े हुए थे। वे बोले — "राजा तो मर गया है। तो अब उसके बदले में हम आपको राजा बनाने के लिये यहाँ खड़े हुए हैं।"

कुछ दिन तो किसान ने राज किया पर बुढ़िया अपने रानी होने से भी सन्तुष्ट नहीं थी। एक दिन वह बूढ़े से बोली — "केवल राजा होने से ही क्या होता है एक दिन भगवान चाहेगा तो हमारे लिये मौत भेजेगा और हमें मरना पड़ेगा और फिर लोग हमें दफ़ना देंगे। तुम एक बार पेड़ के पास फिर जाओ और उससे कहो कि वह हम दोनों को भगवान बना दे।"

सो अगले दिन बूढ़े ने फिर से अपनी कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में उसी पेड़ के पास चल दिया। वहाँ पहुँच कर वह पेड़ को काटने ही वाला था कि पेड़ ने पूछा — "बूढ़े अब तुम्हें क्या चाहिये?"

बूढ़ा बोला — "हम दोनों अब भगवान बनना चाहते हैं।"

पेड़ ने जब उसकी ये बेवकूफी से भरी बातें सुनी उसने अपनी पत्तियाँ बड़े ज़ोर ज़ोर से हिलायीं और बोला — "तुम लोग अब भगवान नहीं बनोगे बल्कि अब तुम भालू बनोगे।"

पेड़ के यह कहते ही बूढ़ा एक भालू और बुढ़िया एक मादा भालू बन गये और दूर जंगल में भाग गये।

List of Stories of “Folktales of Russia-1”

1. An Old Woman and a Small Fir Tree
2. A Fool and a Flying Ship
3. White princess and Seven Dwarves
4. Rumpelstiltskin
5. The Seventh Princess
6. Vasilissa the Wise and Baba Yaga
7. Ivan the Fool and the Magic Pie
8. The Animals' Revenge
9. Snowmaiden
10. Fenist the Falcon
11. Bella and the Bear
12. The Rosy Apple and the Golden Bowl
13. Firebird
14. The Frog Princess
15. The Greedy Old Woman

List of Stories of “Folktales of Russia-2”

1. How the Bee Got His Bumble
2. The Girl in the Moon
3. The White Duck
4. Sister Alyonushka and Brother Ivanushka
5. Marya Morevna
6. The Poor Man's Ruble
7. Creative Division: the Peasant and the Geese
8. The Tale of Cat Bayun or Freya's Chariot
9. Ruslan and Ludmila
10. The Tsarevnas of the Underground Kingdom
11. The Story of the Tsar Saltan
12. Wassily the Unlucky

Some Books of Russian Folktales in English

1873 Ralston, William Ralston Sheddon. **Russian Folktales.** 1873. 51 tales. https://archive.org/details/russianfolktales00ralsrich/page/n6/mode/1up

1903 Blumenthal, Verra de. **Folk Tales from the Russian.** NY : Core Collection Books. 1903. 9 tales. Its Hindi translation is available with Sushma Gupta https://www.gutenberg.org/files/12851/12851-h/12851-h.htm

1974 Riordan, James. **Mistress of the Copper Mountain** : folktales from the Urals.

1976 Riordan, James. **Tales from the Central Russia : Russian tales**. Kestrel. 1976

1979 Riordan, James. **Tales from the Tarter.** 1979.

1980 Chandler, Robert (tr). **Russian Folk-tales.** Random House. (Boulder (CO) : Shambhala. 61 p.). 1980.

1985 Raduga Publishers. The Three Kingdoms. Moscow " Raduga Publishers. 1985. 34 tales. https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/61r.pdf

1985 Riordan, James. **Russian Gypsy Tales.** 1985.

2000 Riordan, James (tr). **Russian Folk-tales.** OUP. 2000.

2020 Riordan, James. **The Sun Maiden and the Crescent Moon : Siberian Folk Tales.** Interlink Books. 2020. 224 p.

Some Books of Russian Folktales in Hindi

1960 Pragati Prakashan. **Roosi Lok Kathayen.** New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 1960. 160 p. https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi

2010 People Publishing House. **Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen.** New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p. https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Lok Kathayen-1.** Collection of tales.

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Lok Kathayen-2.** Collection of tales.

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Baba Yaga.** Collection of tales of Baba Yaga

Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series

No 5 Gupta, Sushma (tr). "Russian Folktales" by Alexander Afanasiev. Translated by Magnus. 1916. 73 tales.

No 6 Gupta, Sushma (tr). "Folktales From the Russian" by Verra Blumenthal. 1903. 9 tales

No 26 Gupta, Sushma (tr). "Russian Garland" by Robert Steele. 1916. 17 tales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022